जैन योग · सिद्धान्त और साधना

लेखक स्व० आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज

('जैनागमो मे अष्टाग योग' का परिशोधित परिवर्धित सस्करण)

सप्रेरक नवयुग सुधारक भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज

सम्पादक प्रवचन भूषण श्रुतवारिधि श्री अमर मुनिजी

सम्पादन सहयोगी श्रीचन्द सुराना 'सरस' मूल्य ५०)

प्रस्तुत ग्रन्थ मे योग विद्या का प्राचीन स्वरूप विभिन्न प्रकार के पचासो योग उनकी पद्धति व मान्यता तथा जैन योग एव पातजलयोग का तुलनात्मक स्वरूप बताते हुए योग मार्ग का सरल साधनाक्रम बताया गया है। प्रथम सिद्धान्त खण्ड मे योग का सम्पूर्ण सैद्धान्तिक स्वरूप बताया गया है।

द्वितीय 'अध्यात्म-साधना' खण्ड मे योग-साधना के विभिन्न रूप-स्वरूप कायोत्सर्गयोग, सहजयोग, जयणायोग परिमार्जन (षडावश्यक) योग तितिक्षायोग, प्रतिमायोग, प्रेक्षाध्यान भावनायोग, तपोयोग, ध्यान साधना एव समाधियोग आदि योग सम्बन्धी समस्त योग विषयो पर साधना प्रक्रिया बताते हुए प्राचीन शास्त्रीय तथा नवीन वैज्ञानिक उपलब्धियो की प्रामाणिक जानकारी दी गई है।

तृतीय 'प्राण-साधना' खण्ड मे जीवनी शक्ति का स्रोत प्राण शक्ति को जागृत करने की विविध प्रक्रियाए तथा उसकी निष्पत्तिया पर विवेचन करते हुए योग मे तनावमुक्ति, रोग-निवारण जैसे व्यावहारिक विषयो पर वैज्ञानिक तथ्यो के साथ प्रकाश डाला गया है। लेश्या, ध्यान साधना-जैसे नवीन विषय का रग-चिकित्सा सिद्धान्त के साथ प्रस्तुत कर नवीनतम उपयोगी तथ्य भी दिये गये है। तथा नमोकार मत्र का वैज्ञानिक एव शब्द-विज्ञान की पृष्ठ भूमि पर सर्वथा नवीन विवेचन।

जैन तत्व कलिका

जैनधर्म दिवाकर स्व० आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज की कृति पर श्रुतवारिधि प्रवचन भूषण हरियाणा केसरी श्री अमर मुनि जी द्वारा लिखित विस्तृत भाष्य। इस एक ही पुस्तक मे जैनधर्म, दर्शन, तत्व-ज्ञान, इतिहास, सस्कृति, आचार आदि समस्त विषयो का अत्यन्त सुन्दर सरल और शास्त्रीय प्रमाणो के साथ विवेचन प्राप्त कर पाठक गागर मे सागर की प्राप्ति कर सकेगा। मूल्य ८० रुपया

प्राप्तिस्थान -

आत्म ज्ञान पीठ, मानसा मडी (पजाब)

सदर बाजार (दिल्ली) में

[जैन विभूषण नवयुग सुधारक उपप्रवर्तक भंडारी श्री पदमचंद जी महाराज, के 1984 के अभूतपूर्व सफल चातुर्मास की झाँकी]



अभूतपूर्व चातुर्मास

निदेशक

श्रीसुव्रत मुनि 'सत्यार्थी' शास्त्री

एम० ए० [हिन्दी-संस्कृत]

मुख्य संपादक

जैन प्रकाश जैन



संपादक

सुरेशचन्द्र जैन



संपादक मंडल

सुभाष चन्द्र जैन

रामचन्द्र जैन

बाबूराम जैन



प्रकाशक

श्री एस० एस० जैन संघ

४५३०/१३ सदर बाजार, दिल्ली—६

प्रकाशन विज्ञप्ति

बिजली मे अद्भुत शक्ति होते हुए भी जब तक पावर हाउस से लाईन कनेक्शन नही जुडता और उसका बटन दबाया (ओन) नही जाता, तब तक प्रकाश का प्रादुर्भाव नही होता । यही स्थिति हमारे जीवन के विषय में है । प्रत्येक जीवन मे, आत्मा मे शक्ति का पु ज विद्यमान होते हुए भी सद्गुरु रूप पावरहाउस से सम्पर्क नही होता, और उपदेश रूप बटन ओन नही होता तब तक हृदय मे ज्ञान-सेवा-तपस्या आदि सद्गुणो का प्रकाश नही झिलमिला सकता, इसीलिए अनादिकाल से सद्गुरु की आवश्यकता रही है ।

हम सबका, हमारे श्री सघ का यह परम सौभाग्य है कि इस वर्ष (१६८४) का, श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज को प्रसिद्ध सत, नवयुग सुधारक जैन विभूषण प्रवर्तक भडारी श्री पदमचद जी महाराज श्रुतवारिधि, प्रवचनभूषण हरियाना केसरी श्री अमर मुनि जी म० तपस्वी श्रीचन्द जी म० शास्त्री श्री सुव्रत मुनि जी आदि ठा० ७ तथा जैनशासनदीपिका विदुषी महासती पवन कुमारी जी आदि ठा० ५ का चातुर्मास सदर बाजार श्री सघ को प्राप्त हुआ । यह चातुर्मास हम सबकी वर्षों की भावना, विनती और प्रार्थना का फल था । इस चातुर्मास मे श्रद्धेय गुरुदेव की असीम पुण्यवानी से, हरियाना केसरी श्री अमर मुनि जी की आकर्षक वाणी और अनूठी प्रवचन कला से प्रभावित होकर समाज के छोटे बडे, स्त्री-पुरुष सभी ने अद्भुत उत्साह और अनूठी भावना का परिचय दिया । कई शानदार बडे-बडे समारोह हुए, नया कीर्तिमान स्थापित करने वाली तपस्याएँ हुई, श्रावक श्राविका समाज मे दान-शील-तप-भाव रूप धर्म की गगा जमुना बही, और सर्वत्र जनता मे प्रसन्नता और श्रद्धा की लहरे उछल ने लगी । अनेक दृष्टियो से यह चातुर्मास अभूतपूर्व कहा जा सकता है ।

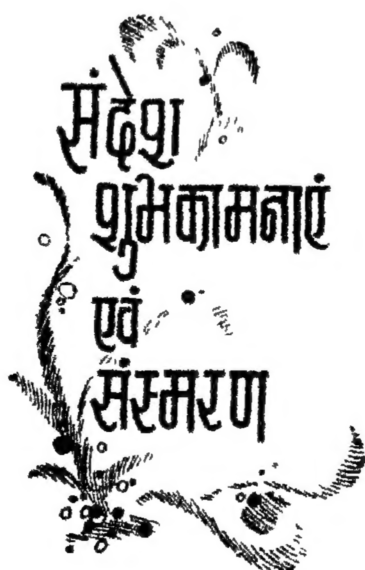
हम सबकी इच्छा थी कि इस अभूतपूर्व चातुर्मास के उपलक्ष्य मे सभी कार्यक्रमो की जानकारी देने के लिए और यादगार को स्थायी रूप देने के लिए एक स्मारिका का प्रकाशन किया जाय । समय बहुत ही कम था और दीवाली की भागदौड मे हर आदमी व्यस्त था। फिर भी हमारे कार्यकर्ता श्री जैन प्रकाश जी जैन (मत्री) सुरेश चन्द जी जैन (सहमत्री) तथा अन्य उत्साही कार्यकर्ताओ ने परिश्रम करके बहुत कम समय मे यह चातुर्मास स्मारिका तैयार की है, इसमे सहयोग देने वाले सभी साथियो विज्ञापनदाता, सहयोगियो का मैं हार्दिक आभार मानता हूँ और प्रभु जिन शासन देवता के चरणो मे प्रार्थना करता हूँ कि गुरुदेव की ऐसी ही कृपा हमारे श्री सघ पर सदा बनी रहे ।

—आत्माराम जैन (प्रधान)
श्री एस. एस. जैन श्री सघ, सदर बाजार दिल्ली

अभूतपूर्व चातुर्मास

श्रमण-श्रमणी परिचय

चातुर्मास विवरण



अनुक्रमणिका

श्रीचन्द सुराना, १६ नेहरू नगर, आगरा–२ के निदेशन मे
एन के प्रिंटर्स एव विकास प्रिंटर्स, कुलदीप प्रेस, आगरा मे मुद्रित।



लोकोत्तम श्रमण भगवान महावीर

दाणाण सेट्ठं अभय-प्पयाणं,
सच्चेसु वा अणवज्जं वयन्ति।
तवेसु वा उत्तम-बंभचेरं,
लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥

है समय नदी की धार कि जिसमें सब बह जाया करते हैं
है समय बड़ा तूफान प्रबल पर्वत झुक जाया करते हैं।
अक्सर दुनिया के लोग समय मे चक्कर खाया करते हैं
लेकिन कुछ ऐसे होते जो इतिहास बनाया करते हैं।

—प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज

मंगल

चत्तारि मंगलं
अरिहंता मंगलं
सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं !

चत्तारि लोगुत्तमा
अरिहंता लोगुत्तमा
सिद्धा लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा
केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो !

चत्तारि सरण पवज्जामि
अरिहते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरण पवज्जामि
साहू सरण पवज्जामि
केवलि-पण्णत्त धम्मं सरणं पवज्जामि

*** सिद्ध-वन्दना ***

सिद्धाण बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोगग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं ।।१
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजलि नमंसंति ।
तं देव-देव महियं सिरसा वन्दे महावीरं ।।२।।
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारि वा ।।३।।



श्री वर्धमान श्रमणसघ के महान् यशस्वी प्रथम आचार्य
जैनधर्म-दिवाकर आगम रत्नाकर

स्व० श्री आत्मारामजी महाराज

परिचय

आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज

जन्म-तिथि भाद्रपद शुक्ला १२, वि० स० १९३९, राहो (जालन्धर)

दीक्षा-तिथि आषाढ शुक्ला ५ वि० स० १९५१, बनूड (पटियाला)

श्रमणसघ के आचार्य अक्षय तृतीया वि० स० २००९ सादडी (मारवाड)

स्वर्गारोहण-तिथि माघकृष्णा ९, वि० स० २०१८, लुधियाना
३१ जनववरी १९६१

श्रुत-सेवा अनुयोगद्वार, आचाराग आदि लगभग २० से अधिक आगमो की हिन्दी मे विस्तृत व्याख्याये। जैन न्याय, अष्टाग योग आदि विभिन्न विषयो पर ६० से अधिक पुस्तक।

सस्कृत, प्राकृत अपभ्र श पालि, गुजराती, हिन्दी, उर्दू आदि अनेक भाषाओ का अधिकृत ज्ञान।

व्युत्पन्नमेधा, तर्कशीलप्रज्ञा, आस्थाशील मानस, सदा प्रसन्नमुख सरल व शान्तचेता महान् आचार्य।





प्रवचनभूषण श्रुतवारिधि हरियाणा केसरी

श्री अमरमुनिजी महाराज

प्रवचन भूषण श्री अमरमुनि

परिचय :

जन्म

वि० सं० १९९३ भाद्रपद सुदि ५
क्वेटा (बिलोचिस्तान)

दीक्षा

वि० सं० २००८ भाद्रपद सुदि ५
पानीपत (पंजाब)

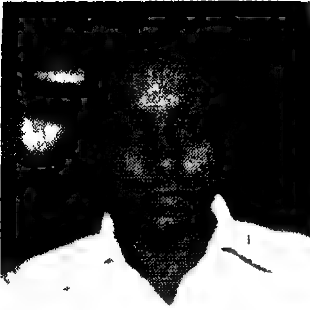
पिता—श्री दीवानचन्द मलहोत्रा
माता—श्रीमती बसन्ती देवी

गुरुदेव—जैन विभूषण भंडारी श्री पदमचन्दजी महाराज

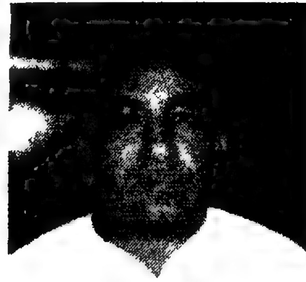
ओजस्वी प्रवचनकार
मधुर व धीर गम्भीर स्वर-गायक
जैन धर्म एवं अन्य भारतीय धर्म-दर्शन संस्कृति के विद्वान् प्रवक्ता
लेखक, धर्म प्रभावक महान् सन्त



सपादक मण्डल



श्री सुरेशचन्द जैन



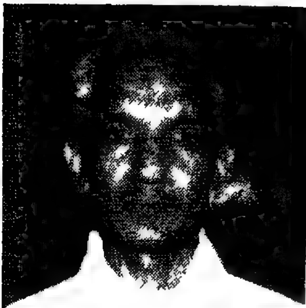
श्री रामचन्द्र जैन



मुख्य सम्पादक

श्री जैन प्रकाश जैन

श्री बाबूराम जैन



श्री सुभाष चन्द जैन





हरियाणाकेसरी श्री अमरमुनिजी महाराज की वन्दना करते हुए महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल-सिंहजी, पास में विराजमान है जनरत्न श्री सुभद्रमुनिजी।



साध्वीरत्न महासती श्री पवनकुमारी जी महाराज एवं अन्य साध्वीगण। जनता को उद्बोधन करती हुई महासतीजी।



अहिंसा-संयम-तप



धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण-भत्तेसणे रया ॥
वयं च वित्ति लब्भामो, न य कोई उवहम्मइ ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥
महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणा-पिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥

—त्तिबेमि



नवयुगसुधारक उपप्रवर्तक
भडारी श्री पदमचद जी
महाराज

श्रमणधर्म के उन्नायक गुरुवर्य जैनविभूषण नवयुगसुधारक उपप्रवर्तक भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी महाराज का सक्षिप्त-जीवन दर्शन

जन्म वि० स० १६७४ (सन् १६१७) विजयदशमी।

ग्राम हुलालपुर (जिला सोनीपत हरियाणा)।

पिता श्री गणेशीलाल जैन।

माता . श्रीमती सुखदेवी जैन।

दीक्षा वि० स० १६६१ माघ बदी पचमी (सन् १६३४)।

गुरुदेव समतायोगी श्रुत विशारद पण्डित प्रवर पूज्य श्री हेमचन्द्र जी महाराज

दीक्षा एव शिक्षागुरु . प्रात स्मरणीय जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज।

उद्दाम भौतिकवाद के प्रभाव से आज समग्र जगत अभिभूत है। यान्त्रिक बुद्धि के चरम प्रकर्ष परिणामस्वरूप मानव ने सुख सौविध्य की चामत्कारिक वस्तुएं स्वायत्त की हैं किन्तु उसका चिर अभिलषित पूरा नही हो सका है। क्योंकि इन भौतिक उपलब्धियों का बौद्धिक पक्ष विनाश के शोले उगलता हैं। जिनसे न जाने जगत कब भस्मसात् हो जाए। इसलिए ये उपलब्धियाँ भीषण है। इस विकराल विभीषिकामय स्थिति मे आज जो भी उद्बुद्ध चेता मानव कोई सशक्त सहारा खोजने को बाध्य होता हैं, तो उसकी दृष्टि सहसा भारत भूमि की उस प्राचीन सास्कृतिक दार्शनिक चिन्तन धारा को पढती हैं, जो पदार्थ सापेक्ष नही, आत्म-सापेक्ष थी, अन्त सापेक्ष, भाव सापेक्ष एव सर्वोदय सापेक्ष थी। एक ऐसे अनुपम जगत का सम्यक् चित्रण उसमे, बाह्य जगत से किंचित मात्र ही लेकर बहुत कुछ देने को उपलब्ध रहता हैं। यद्यपि भारत आज की भौतिक सम्पदाओ के विषय मे कुछ देशो से काफी पीछे है, किन्तु यह जो ऋषि मुनियो की विरासत उसे प्राप्त है उसके कारण इस गए गुजरे म भी उसकी अपनी एक गरिमा है।

उस सास्कृतिक चेतना और जीवनधारा के कतिपय पुरस्कर्ता जो हमारे बीच विद्यमान है उनमे एक है, अखिल भारतीय वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण सघ के महान सन्त स्थविरपदविभूषित, गुरुवर्य पूज्यपाद जैन विभूषण, उपप्रवर्तक, भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी महाराज।

सत के जीवन की सबसे बडी विशेषता अकृत्रिमता, बेबनावटपन या स्वाभाविकता है। सत पोज नही, प्रभु की खोज करते है। जो पोज करते हैं, वे सन्त नही होते। मुझे यह लिखते जरा भी संकोच नही होता, कि प्रात. स्मरणीय पूज्य पाद गुरुवर्य श्री भण्डारी पदमचन्द्र जी महाराज मे सन्त की सहजता है। अतएव ऋजुता, मृदुता और सहृदयता का निर्मल निर्झर उनके जीवन मे सदा प्रवहणशील रहता है। इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे उनकी छत्रछाया प्राप्त हुई है। मैंने स्वय अनुभव किया कि आप मन की वृत्तियो को जीतने मे काफी सफल हुए है। अनुकूल एव प्रतिकूल दोनो ही परिस्थितियो मे आप ने अविचलित रहने का अनूठा प्रयास किया है। अविचलित चित्त मे सयम और साधना का अभ्यास यथावत् रहता है। ऐसे ही महान साधक हैं परम श्रद्धेय गुरुदेव भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज।

जन्म :—

वीर प्रसूता हरियाणा की वसुन्धरा हलालपुर ग्राम मे लोक पूज्य गुरुदेव श्री का जन्म वि सं, १९७४ विजय दशमी को वैश्य कुल जैन परिवार

में हुआ था। सेठ श्री गणेशीलाल का वश सुशोभित हुआ। माता श्रीमती सुखदेवी जी की कुक्षि धन्य हुई। मा पुत्र रत्न को पाकर कृतकृत्य हो उठी। बचपन मे ही माता पिता के धार्मिक सस्कार विरासत रूप मे प्राप्त हुए। और महान सन्तो का सत्सग पाकर उनमे अभिवृद्धि हुई। आयु के साथ-साथ शुभ संस्कार भी निरन्तर उन्नतिशील होते गए। जब आप विद्या प्राप्ति हेतु दिल्ली मे रह रहे थे तभी एक रोज मित्रो से बात चली, ससार की असारता एव नश्वरता की बातो ही बातो मे सन्त बनने की ठान ली। तीन साथी तैयार हो गए, तब गुरुदेव श्री ने सुझाव दिया कि जैन सन्त बनना चाहिए क्योकि वे जर, जोरू और जमीन इन तीनो झगडे की बीमारी से दूर रहते है। किन्तु साथियो ने जब जैन साधुचर्या की कठोरता को सुना और देखा तो वे लडखडा गए। परन्तु आप ने जो कहा वह पत्थर की लकीर थी।

दीक्षा —

जब अल्हड किशोर तन मन मे यौवन की मदमाती तीव्र हवाएं प्रवेश करती है तो मानव उस अपूर्व मद मे झूम उठता है और ऐसे सन्मार्ग का चयन करना स्वय के लिए कठिन हो जाता है तब किसी ऐसे प्रकाश पुञ्ज की जरूरत हो जाती है जो जीवन पथ को आलोकित करे। परम पूज्य गुरुदेव के जीवन मे भी अनेक तूफान आए, घर वाले आपकी कठोर परीक्षा ले रहे थे। आज्ञा मिलना अति कठिन हो रहा था फिर भी आप अपने निश्चय पर अडिग थे। ऐसे मे किसी ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो आपकी भावना को साकार रूप दे। अतत आप को आलम्बन मिल ही गया और ऐसा कि जिसे पाकर और किसी की आवश्यकता न रही। आचार्य देव जैन धर्म दिवाकर परम श्रद्धेय श्री आत्माराम जी महाराज ने आपका मार्ग दर्शन किया।

आपने अल्प समय मे ही गुरु-चरणो के प्रताप से साधुओ के जीवनोचित आवश्यकीय साधना पद्धति का अभ्यास एव प्रवीणता प्राप्त कर मुनि दीक्षा स्वीकार की पजाब की पवित्र धरा रामपुर मे वि स १९९१ माघ बदी पचमी को, और शिष्यत्व पाया अपने परमपूज्य आचार्य देव श्री आत्मारामजी महाराज के सुशिष्य श्रुत विशारद पण्डितप्रवर श्रद्धेय श्री हेमचन्द्र जी महाराज का।

साधुत्व .—

मुनि जीवन का वेष धारण करने से ही साधुत्व की इति श्री नही हो

जाती बल्कि साधुत्व को प्राप्त करने के लिए अपने आप को होमना पडता हैं। किन्तु वेश तो केवल एक प्रहरी के समान सावधान करता है। वास्तविक यात्रा तो यही से प्रारम्भ होती हैं। जैसे एक छोटे से बीज को महान वृक्ष बनने के लिए केवल जमीन मे दब जाना ही पर्याप्त नहीं होता अपितु अपने स्वरूप को तदाकार करना होता हैं तभी वह पुष्पित और पल्लवति और फलित होता हैं। अत पूज्य गुरुदेव श्री ने साधु जीवन अगीकृत करते हुए गुरु-चरणो मे प्रतिज्ञा की थी—आज मैं जिस पवित्र उद्देश्य के लिए समर्पित हुआ हूँ उसे पाने हेतु जीवन की अन्तिम घडियो तक निरन्तर आगे बढता रहूँगा। विपत्तियो के भयकर बवण्डरो में भी मेरा साधना क्रम अबाध गति से गतिमान रहेगा। तब आपने जीवन के तीन महान उद्देश्य निर्धारित किए थे मेवा, साधना और स्वाध्याय।

अध्ययन —

आपने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज एवं अन्य वयो-वृद्ध सत तथा अनेक नव दीक्षितो की पूरे १२ वर्ष तक अग्लान तथा अनथक सेवा की। इसके साथ आपका स्वाध्याय भी निरन्तर चलता रहा, साथ-साथ गुरुचरणो की कृपा से चिन्तन-मनन एव ध्यान के द्वारा स्वाध्याय साधना मे परिणत होता गया। आचार्य देव के सान्निध्य व मार्गदर्शन मे हमारी श्रद्धा के केन्द्र पूज्य गुरुदेव ने जैन आगमो का ही नही, अपितु भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन किया। आगम ज्ञान के आलोक मे आत्म-स्वरूप की उप-लब्धि सुगम हो जाती है। इसलिए आप ने स्वाध्याय को जीवन का क्रम बनाया जो अब तक उसी तीव्र गति से प्रवहमान हैं।

परम आराध्य गुरुदेव इसी के बल पर एक कुशल प्रवचनकार समाज सुधारक तथा सृजक बन गये। मुनि समाज तथा गृहस्थ समाज आपके अपूर्व गुणो से अभिभूत हुआ। आपकी उदार एव दान भावना के अनुरूप आचार्य देव ने आपको "भण्डारी" जैसे उपनाम से सम्बोधित किया। आपकी निर्लिप्त साधना एव अनुपम गुरु सेवा भक्ति के प्रताप से आपको हरियाणा केसरी श्रुतवारिधि प्रवचन भूषण श्री अमरमुनि जी महाराज शिष्य रूप मे प्राप्त हुए। तब धर्मप्रचारार्थ विचरने के लिए निकल पड़े।

विचरण क्षेत्र —

आपने अपनी पावन चरणरज से दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, पजाब, हिमाचल और जम्मू आदि उत्तर भारत की भूमि को पवित्र किया। जन-मानस मे व्याप्त अन्धविश्वास, अन्ध-श्रद्धा तथा मिथ्या

धारणाओ का निराकरण कर नूतन जीवन बोध दिया, अत. समाज ने आपको "नवयुग सुधारक" की उपाधि से सम्मानित कर अपने आप को कृतार्थ किया। आप केवल प्रवचन तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि अनेक रचनात्मक कार्य भी किए। जगह-जगह स्थानको का निर्माण, पुस्तकालयो की स्थापना, विद्यालयो का प्रारम्भ तथा धर्मशाला आदि का निर्माण, अनेक लोकोपयोगी कार्य आपकी महान प्रेरणा से सम्पन्न हुए।

सघ नायक —

गृहस्थ जीवन हो अथवा सन्यास मार्ग, दोनो ही क्षेत्रो मे नायक या अनुशासनस्ता की सघ सचालन मे महती आवश्यकता रहती है। लोक पूज्य आचार्य देव परमादरणीय आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म के शिष्य सघ का आपको सन् १९८३ मे उत्तर प्रदेश के प्रमुख प्रख्यात नगर मेरठ मे नायक नियुक्त किया उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्रद्धेय श्री शान्तिस्वरूप जी महाराज ने। किन्तु आत्म नियन्ता के महान नायक पूज्य गुरुदेव के लिए इन पदो का कोई महत्व नही। आप तो सदा अपने आप पर नियन्त्रण करना ही श्रेयस्कर समझते हैं। आपके इसी गुण के कारण आपको उपप्रवर्तक चुना गया।

दान भावना —

आप केवल उपदेष्टा ही नही, अपितु महानदाता है, चाहे गृहस्थ हो और चाहे सन्यासी, हर कोई आप के द्वार से अपने जीवन उपयोगी कोई न कोई वस्तु प्राप्त करके जाता है। फिर चाहे धर्म आराधना करने के उपकरण मुखपत्ती हो या आसन, साधु जीवन के लिए वस्त्र पात्र हो या स्वाध्याय हेतु सद्ग्रन्थ। आपश्री हर किसी अभिलाषी को उसका अभिलषित देते रहते हैं। आपमे साहित्य प्रचार की तो ऐसी लगन है कि आप अपने सम्पर्क मे आने वाले हिन्दू, सिख, बौद्ध अथवा अग्रेजीभाषी को उसकी योग्यता के अनुसार जैन साहित्य भेट करते रहते हैं। यही कारण है कि आपने दार्शनिक ग्रन्थो, शिक्षाप्रद कहानियो का अनुवाद विभिन्न भाषाओ, तथा चरित्र प्रधान, साहित्य का अनुवाद करा कर लोगो मे बाटा, स्कूल कालिज, एव विश्वविद्यालय मे पहुचाया, केवल भारत मे नही बल्कि देश से दूर जमनी में भी आपने जैन साहित्य प्रेषित किया है। इतना ही नही, आपने पटियाला विश्वविद्यालय मे जैन चेयर स्थापना मे भी विशेष योगदान दिया है और अब दिल्ली विश्वविद्यालय मे भी आपके सद्प्रयासो से तथा ओजस्वी

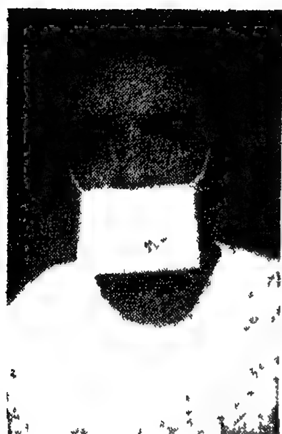
प्रेरणा और डा० कोठारी जी के सहयोग से जैन चेयर की स्थापना शीघ्र हो रही हैं।

परमाराध्य गुरुवर्य प्रवर की किन-किन विशेषताओ की चर्चा करू'। मानवीय दृष्टि से आप परमोच्च मानव है। दया, करुणा, अनुकम्पा सेवा और सद्भावना का दिग्दर्शन आपके हर व्यवहार मे होता है। ऐसे अनेकानेक गुण आप मे विद्यमान है जिन्होने आप के व्यक्तित्व को एक ऐसा निखार दिया हैं कि एक अमूल्य हीरे की भाति देदीप्यमान है।

प्रात स्मरणीय, पदमादरणीय, श्रद्धेय गुरुदेव की दीक्षा स्वर्णजयन्ती के शुभ अवसर पर हम शासनदेव से यह प्रार्थना करते हैं कि आप सयम एव साधना के सुपथ पर सतत प्रगतिशील, उन्नतिशील रहते हुए, निरोगता, आनन्दमयता एव दीर्घायुष्यता प्राप्त करे जिससे समाज आपके पावन सान्निध्य मे अधिकाधिक प्रगति करता रहे। ऐसी मेरी मगल कामना है।

—सुव्रत मुनि 'सत्यार्थी' शास्त्री एम० ए०
(हिन्दी, संस्कृत)





वाणी के जादूगर हरियाणा केसरी प्रवचन भूषण श्रीअमरमुनि जी

(संक्षिप्त परिचय)

सस्कृत का एक प्राचीन श्लोक है—

शतेषु जायते शूर सहस्रेषु च पण्डित ।
वक्ता दशसहस्रेषु दाता भवति वा न वा ॥

सैकडो मनुष्यो मे कोई एक वीर निकलता है, हजारो मे कोई एक पडित (विद्वान) मिलता है और दशहजार मे कोई एक वक्ता मिलता है, दाता तो मिले या न भी मिले।

वक्ता वाग्देवता का प्रतिनिधि है, वक्ता की वाणी मुर्दों मे प्राण फूक देती है, और पापियो को पुण्यात्मा बना देती है। वक्ता फिर अगर सन्त हो, वह भी भक्त हो, कवि हो तो फिर सोने मे सुगन्ध या 'लाखो मे कोई एक' की उक्ति चरितार्थ करता है।

प्रवचन भूषण श्री अमर मुनिजी महाराज इसी कोटि के सन्त वक्ता हैं। इनकी वाणी मे एक प्रेरणा है, भावनाओ मे तूफान मचा देने वाला जादू है। दानव को मानव और मानव को देवता बना देने वाली विलक्षण शक्ति है। वे समतायोगी सत है, आत्म साधना करने वाले महान साधक हैं, प्रभभक्ति मे लीन रहने वाले भक्त हैं, और अन्तर जीवन का सगीत गुनगुनाने वाले सहज कवि है।

आपका जन्म वि. स. १६६३ भादवासुदि ५ तदनुसार ई० सन् १६३६ में क्वेटा (बिलोचिस्तान) के सम्पन्न मल्होत्रा परिवार मे हुआ। आपके पिता श्री दीवानचन्द जी माता श्री बसन्तीदेवी बड़े ही उदार और प्रभुभक्त थे। भारत विभाजन के बाद आप अपने माता-पिता के साथ लुधियाना आ गये। वहाँ आपको दो ही वर्ष हुए होगे कि आपने एक जैन साधु श्री मनोहर मुनिजी को दीक्षा लेते हुए देखा और तभी से आपकी आत्मा भी जागृत हो गयी। आयु चाहे आपकी बाल्यावस्था ही थी परन्तु अन्त करण मे वैराग्य का दीप प्रज्ज्वलित हो चुका था। अत. आप ११ वर्ष की अवस्था मे आचार्यश्री आत्मारामजी महाराज के चरणो में उपस्थित हुए और अपने विचार रखे। आचार्य श्री ने आपको अपनी दिव्य दृष्टि से देखा, कुछ पूछताछ हुई और आपका हाथ गुरुदेव नवयुग सुधारक जैन विभूषण भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज को पकडा दिया।

आप तभी से ज्ञान अर्जन मे लग गये और हिन्दी संस्कृत व प्राकृत आदि का तथा जैन दर्शन का आपने अच्छा अध्ययन किया और १५ वर्ष की आयु मे सोनीपत मण्डी, वि सम्वत २००८ भाद्र पद शुदि ५ को साधु दीक्षा अगीकार की। तब से आप निरन्तर जागृति पथ पर आगे ही आगे बढ रहे है। आप एक सुयोग्य विद्वान है। आपके अनेक भक्ति गीत सग्रह प्रकाशित हुए है। कुछ सूत्रो (जैन आगमो) का भी सम्पादन किया है।

आपकी वाणी मे इतनी मधुरता है कि जो भी भक्त एक बार आपकी वाणी सुन लेता है वह आपका ही होकर रह जाता है। आपकी प्रवचन शैली भी अत्यन्त रोचक, ज्ञानमयी, एव ऐसी समन्वयात्मक है कि सभी सम्प्रदाय के लोग आपके प्रवचनो मे आते हैं। यही कारण था कि फरीदकोट चातुर्मास मे आपको वहाँ के समाज ने 'प्रवचन भूषण' की उपाधि से अलकृत किया था। जब आपने लुधियाना मे चातुर्मास किया तप आपकी ज्ञान गरिमा को तत्रस्थ उपाध्याय श्री फूलचन्द जी महाराज ने देखा तो आपको 'श्रुत वारिधि' की उपाधि प्रदान की। समाज के कई बिगडे कार्य सुधारे, वर्षों से पड़ी अम्बाला जैन गर्ल्ज हाईस्कूल की बिल्डिग की योजना को मूर्तरूप दिया गया। सब आपकी प्रवचन शैली व अनुपम व्यक्तित्व का ही प्रभाव था। वहाँ की समाज ने और परम पूज्य तपस्वी श्री सुदर्शन मुनिजी महाराज ने आपको 'हरियाणा केसरी' की उपाधि से सम्मानित किया।

आप प्रारम्भ से ही अपने गुरुदेव श्री भडारी जी महाराज के साथ रहे। आप स्वभाव से बडे सरल, निर्मल अन्त करण के हैं, आपका हृदय

बडा ही दयालु और स्नेहमय है। गुणि-जनो का आदर करना और दीन-दुखी पर करुणा कर उनका उद्धार करना आपकी मानवीय उदार वृत्ति है।

गुरुदेव श्री भडारी जी महाराज सदा परोपकार, सेवा और जीवदया धर्म की प्रेरणा देते रहते हैं। आप भी गुरुदेव श्री की प्रत्येक योजना को सफल बनाने मे, उनको कार्यरूप मे परिणत करने मे दत्त चित्त रहते है।

आप श्री की प्रेरणा और मार्गदर्शन से पजाब एव हरियाणा मे स्थान-स्थान पर धर्म स्थानक, वाचनालय, जैन हाल, विद्यालय भवन, चिकित्सालय आदि की स्थापनाए हुई है और बडे-बडे लोक-सेवा कार्य हुए है। जिनमे भटिण्डा, पदमपुर मडी (राजस्थान) हनुमानगढ़ (राजस्थान) मानसा मडी, निहालसिंहवाला आदि अनेक नाम गिनाये जा सकते है।

आचार्य पूज्यश्री काशीराम जैन गर्ल्ज हाईस्कूल अम्बाला शहर, जैन हाईस्कूल डेरावासी, जैन स्थानक अशोक नगर, यमुनानगर आदि अगणित प्रेरणा स्तम्भ है।

अभी कुछ वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र मे आपका वर्षावास था, वहाँ जैनो की संख्या तो बहुत ही कम है किन्तु आपकी वाणी के प्रभाव से प्रभावित जैन-अजैन सभी लोगो के सहयोग से बहुत ही थोडे समय मे वहाँ विशाल जैन हाल का निर्माण हो गया।

आपश्री ने पूज्य आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज की जन्म-शताब्दी वर्ष की पावन स्मृति के उपलक्ष्य मे विशाल जैन आगम भगवती सूत्र (करीब छह खडो मे) का सपादन-विवेचन भी किया है और वह प्रकाशित हो रहा है। तीन खड प्रकाशित हो चुके है।

आचार्य श्री आत्माराम जी म की जैन तत्वकालिका विकास का नयी शैली मे सपादन भी आप ही के मार्गदर्शन एव सान्निध्य मे हुआ है। इस प्रकार आप जैन धर्म, सस्कृति, साहित्य और समाज के अभ्युदय एव कल्याण मे तीस वर्षों मे निरन्तर गतिशील है।

आपने आचार्य श्री की महत्वपूर्ण कृति जैनागमो में अष्टाग योग पर आधुनिक शैली मे विवेचन कर "जैन योग साधना और सिद्धान्त" नाम से बहुत ही प्रमाण पुरस्सर महत्वपूर्ण सपादन किया है। इस ग्रन्थ की जैन व जैनेतर विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है।

आपके गुरुदेव परम शान्तमना नवयुगसुधारक श्री भडारी जी महाराज स्वय जैन सस्कृति और साहित्य के अभ्युदय मे प्रयत्नशील हैं।

हम प्रभु मे यही प्रार्थना करते है कि यह गुरु—शिष्य की सुन्दर जोडी चिरकाल तक जिन शासन की प्रभावना करते हुए मानवता की सेवा करती रहे।

—श्रीचन्द सुराना 'सरस'



तपस्वी श्री श्रीचंद जी महाराज

[परिचय]



पिता का नाम—कन्हैयालालजी,

माता का नाम—लालीदेवी

जन्म भूमि—जडोली, फतेहपुरी, (जिला, महेन्द्रगढ़) हरियाणा

जन्म—विक्रम स १९८५ पोष शुक्ल दशमी

दीक्षा—वि० स० २०१४ बडसत् जिला करनाल, भादवा-कृष्णा वदी ५ वीरवार।

गुरू—प० शुक्लचन्द जी महाराज

विशिष्ट—अठाई चउविहारी १-२-३-४-५-६-७ ८ तक १२ उपवास ३७ उपवास गुरु महाराज की सेवा मे ६ साल।

आपका स्वभाव बडा ही सरल व शांत है। तपस्या व शास्त्र स्वाध्याय मे विशेष रुचि है। गुरुदेव भडारी श्री पदमचन्द जी महाराज की आप पर विशेष कृपा है।



श्री सुव्रत मुनि 'सत्यार्थी' शास्त्री

एम ए [हिन्दी-सस्कृत]

(रिसर्च स्कोलर)

आपका जन्म भारत के रमणीय प्रान्त उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर जनपद के ग्राम गढी बहादुरपुर मे उपाध्याय कुल मे हुआ । आपके पिता श्री रामकरण जी उपाध्याय एव माता श्रीमती केलादेवी उपाध्याय थी। श्रीमती केलादेवी की कुक्षि से दो पुत्रो ने जन्म लिया। उन दो मे से छोटे हैं श्री सुव्रत मुनि जी महाराज सत्यार्थी "शास्त्री, एम ए (हिन्दी, सस्कृत) आपके पूर्व जन्म के कुछ ऐसे शुभ सस्कार थे कि बचपन मे साधु सन्तो के अनुरागी तथा स्वाध्यायशील बन गए।

समय के साथ-साथ आपके ये दोनो ही सद्व्यसन भी बढते गए। यदा कदा आपको आर्यसमाजियो का तथा वैष्णव सन्तो का सत्सग मिलता रहा। जिससे आपके सस्कार विचारो मे बदलते गए और ज्यो-ज्यो आपका अध्ययन बढता गया तो आपके अन्दर रही हुई वैराग्य भावना भी प्रबल होती गई। आपने घर पर रह कर ही इण्टर मीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद आपने कालिज छोड दिया तथा भ्रमण के लिए अपने अग्रज श्री कृष्ण-पाल जी के पास लुधियाना पजाब मे चले गए। वहा आपने कार्य करने की भावना व्यक्त की तो भाई ने आपको कार्य मे लगा दिया।

प्रारम्भ से ही आप अन्याय के विरोधी रहे हैं। आपने अपनी शक्ति से अन्याय का विरोध किया है। जब आप कार्य करते थे तो वहा पर मजदूरो का शोषण होता था, आपकी अन्तरात्मा इसे सह न सकी। एकदा सहसा आपके अन्तर मन मे पवित्र प्रेरणा का उदय हुआ कि क्यो न इन दुनियावी बन्धनो को तोड कर उस प्रभु से नाता जोडा जाए। अपने विचार अपने बडे भाई को बताए। उन्होने आपको हर प्रकार से समझाया किन्तु आप अपने निश्चय पर दृढ थे। उन्ही दिनो आपका साक्षात्कार नवयुगसुधारक, जैन विभूषण उपप्रवर्तक, परम श्रद्धेय गुरुदेव भण्डारी श्री पदमचन्द जी म० एव हरियाणा केसरी, प्रवचन भूषण, श्रुत वारिधि श्री अमर मुनि जी म० से हुआ।

बस अन्तर हृदय से जागृत हुई भावना के अनुसार आप अपने भरे पूरे परिवार को छोड कर गुरु-चरणो मे आ गए। गुरुदेव की सेवा मे रह आपने अल्प समय मे ही प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर लिया और तत्पश्चात जीरा कस्बे मे भगवान महावीर निर्वाण शताब्दी वर्ष एवं भगवान महावीर के दीक्षा कल्याण दिवस मार्ग शीर्ष वदी ११, सन् १९७४, आठ दिसम्बर रविवार को दीक्षा ग्रहण कर हरियाणाकेसरी श्रुतवारिधि श्री अमरमुनि जी का शिष्यत्व पाया।

दीक्षा के पश्चात् आपने मुख्य रूप से तीन ध्येय बनाए, सेवा, साधना एव ज्ञानोपार्जन। तभी से आप निरन्तर अपने पथ पर गतिशील है। आपने पूज्य उपाध्याय श्री फूलचन्द जी म पण्डितरत्न श्रद्धेय श्री हेमचन्द जी म० आदि अपने वृद्ध गुरुजनो की दिल से सेवा की है तथा उनसे ज्ञान प्राप्त किया है। चाहे आपके मार्ग मे, विशेषकर ज्ञान आराधना मे अनेक व्यवधान आए परन्तु आप सकल्प पर दृढ रहे। मुनि श्री के विषय मे, कवि के शब्दो मे इस प्रकार कह सकते है—

> **धुन के पक्के कर्मठ मानव,**
> **जिस पथ पर बढ़ जाते हैं।**
> **एक बार तो रौरव को भी,**
> **स्वर्ग बना दिखलाते हैं॥**

कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति स्वच्छन्दता से नही किन्तु स्वतन्त्रता से सयमपूर्वक जीने मे यदि कोई सकट भी आ जाए तो वह उससे घबराता नही, अपितु धैर्यपूर्वक उसका समाधान खोजा करता है। जैसा कि कहा भी है—"मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःख न च सुखं"। "इसलिए आप भी

साहसी बन कर आगे बढते रहे। गुरु - चरणो मे रह कर आपने सस्कृत, प्राकृत, पाली आदि भाषाओ का अध्ययन किया। पजाब विश्व विद्यालय से आपने सस्कृति मे शास्त्री परीक्षा तथा मेरठ विश्व विद्यालय से हिन्दी तथा सस्कृत मे एम० ए० परीक्षा समुत्तीर्ण की है। वैसे आपने पजाबी विश्व-विद्यालय पटियाला से हिन्दी की प्रभाकर परीक्षा भी समुत्तीण की है। इसमे आपने न्याय, व्याकरण, भाषा विज्ञान आदि का अच्छा अध्ययन किया है।

इसके अतिरिक्त आपने जैन आगमो का भी अध्ययन किया हे। अभी भी आपका अध्ययन कार्य निर्बाध गति से चल रहा है। अब आप देहली विश्व विद्यालय मे "जैन योग" पर शोध कर रहे है। आप जिस लग्न से स्वाध्याय करते है उसो भाति सेवा एव साधनाओ मे भी रुचि रखते है। एक सप्ताह मे आप दो दिन तपस्या करते है। इसके साथ-साथ अच्छे कवि तथा लेखक भी है आपके गीतो का सग्रह "सुब्रत सगीत" तथा 'तीर्थंकर स्तुति' प्रकाशित हो चुके है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयो पर आपने अनेक निबन्ध लिखे है जो समय-समय पर जैन पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहते है।

इस प्रकार आप एक कवि, लेखक तथा साधक है। आपकी वक्तृत्व शैली भी अच्छी है, सीधी और सरल भाषा मे समझा-समझा कर अपनी बात कहते हैं। अशोक बिहार दिल्ली चातुर्मास मे आप श्री उत्तराध्ययन सूत्र पर अपने प्रवचन देते रहे। अब आप हमारे यहा सदर क्षेत्र मे "श्री नन्दीसूत्र" पर अपने प्रवचन दे रहे है। आपकी अध्यापन शैली भी बहुत अच्छी है। सस्कृत व्याकरण अच्छी तरह पढा देते है।

इसके साथ-साथ आप लोगो को जप-तप तथा स्वाध्याय आदि के लिए भी प्रेरणा देते रहते है। आपको एक बात बहुत खटकती है कि जैन समाज मे अध्ययन-अध्यापन की नियमित व्यवस्था नही है।

आप स्वभाव से मिलनसार तथा अनुशासनप्रिय है परन्तु अन्याय पसन्द नही, इसीलिए आप कई बार खरी-खरी कहने से भी नही चूकते है। सब कुछ मिला कर आप एक अच्छे साधक, कवि, लेखक तथा कथाकार है। हम यह निस्सकोच कह सकते है कि आप एक उदीयमान सन्त क रूप मे ऊँचे उठ रहे हैं। हम आपके मगलमय भविष्य की कामना करते है।

●



श्री सुयश मुनि जी

जन्म भूमि—मुकेरियाँ, जिला होशियारपुर।

पिता का नाम—श्री हँसराज भगत।

माता का नाम—श्रीकाता देवी।

जन्म—वि० सं—२०२०

दीक्षा—वि० सं०—२०३८

दीक्षा स्थल—कुरुक्षेत्र हरियाणा।

दीक्षा गुरु—परमपूज्य हरियाणा केसरी प्रवचन भूषण श्री अमरमुनि

विशेषता—जप तप सेवा एव स्वाध्याय मे रुचि
शास्त्रीय अध्ययन, चार मूल सूत्रो का अध्ययन भी किया।

भाषा ज्ञान—सस्कृत तथा हिन्दी का विशेष अध्ययन चल रहा है।

रचनात्मक कार्य—अमर गाथा तथा सुयश गीत आदि। कविहृदय
कविता का शौक। गुरु सेवा मे रुचि।



श्री सुयोग्य मुनि

जन्म भूमि—अबोहर (पजाब)।

पिता का नाम—श्री माछीराम खुराना

माता का नाम—श्रीमती कौशल्या देवी, खुराना

दीक्षा—गाजियाबाद ईस्वो सन् १९८२, ३० मई

दीक्षागुरू—श्रुत वारिधी हरियाणा केसरी श्री अमर मुनिजी महाराज

विशेषता—

सेवा तथा शास्त्र पढने मे लगे हुए है विनय शील सत है।

वैरागी अवस्था मे ५१ एकासने और अठाई को। उसके बाद एक से लेकर ११ तक व्रत की तपस्या की।

कहनी, करनी एकसी, रहनी तदनुरूप।
यही सत की योग्यता, सच्चा साधु रूप।

श्री पंकज मुनि जी



पिता—श्री चन्दन लाल जैन

माता—श्रीमति कृष्णादेवी जैन

जन्म भूमि—सढौरा, हरियाणा अम्बाला (सन् १९६६)

दीक्षा—सन् १९८४, १५ जनवरी अशोक विहार, दिल्ली ।

गुरूदेव—श्रुतवारिधि प्रवचनभूषण हरियाणा केसरी श्री अमर मुनि जी महाराज ।

विशेष—सेवा एव सयम साधना मे विशेष रुचि ।
बचपन से ही गुरुदेव श्री की सेवा मे रहे, विनय भाव से सेवा करते है और अध्ययन भी

पकज कहते कमल को, जो रहता निर्लेप ।
कर सकते नही जगत में भोग उसे विक्षेप ॥



प्रवचन प्रभाविका साध्वीरत्न महासती पवनकुमारी जी महाराज

आधुनिक युग मे जबकि पश्चिम के राष्ट्र अपनी चकाचौंध करने वाली वैज्ञानिक उपलब्धि और धन की समृद्धि पर गर्व करते हैं किन्तु वे आध्यात्मिक जीवन-शून्यता की ओर तीव्रता से अग्रसर हो रहे हैं। भारत ही एक ऐसा महान देश है जिसने आत्मा की असीम शक्ति को पहचाना है और हमारे पूज्य, मुनिराजो व साध्वियो ने मानव के अधकारमय जीवन को अपनी साधना से अलोकित कर आनन्दमय जीवन जीने का मार्ग दिखाया है।

आचार्य सम्राट पूज्य श्री १००८ श्री आनन्द ऋषि जी म० इसी अध्यात्म परम्परा के युग प्रधान यशस्वी आचार्य है। इन्ही की परम्परा मे सयम पथ की अमर साधिका स्व० महासती श्री पद्म श्री जी म० की शिष्या परम विदुषी साध्वी रत्न श्री पवन कुमारी जी म० इस श्रमण सस्कृति की दीपिका को प्रज्वलित कर रही हैं, और तीर्थंकर महावीर के उद्घोषो और शिक्षाओ से समाज को अभिसिंचित कर रही है।

आपका जन्म हरियाणा प्रान्त के सोनीपत जनपद के अन्तर्गत देहरा मौटी गाँव में सन् १९३८ मे हुआ था। आपके पिता श्री चिरजीलाल जैन एव माता श्रीमती ज्ञानो देवी जैन अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के सद्गृहस्थ थे। तभी तो आपकी तीन पुत्रियो ने जैन भागवती दीक्षा स्वीकार कर अपने जीवन को आध्यात्मिक पथ पर लगाया है। महासति पवन कुमारी जी ने कुछ होश सभाला तो उन्होंने भी अपनी अग्रजा बहनो का अनुसरण करते हुए सन् १९५० मे चैत्र सुदी पंचमी को उत्तर प्रदेश के अमीनगर सराय मे जैन सन्यास दीक्षा स्वीकार की।

तब आपकी आयु केवल 12 वर्ष थी परन्तु आत्मा बहुत बलवान थी। आपके साथ ही अन्य दो मुमुक्षु आत्माओ ने भी सन्यास ग्रहण किया था। आपको दीक्षा पाठ पढाया पूज्यपाद उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि जी म० ने और आपको शिष्यत्व प्राप्त हुआ महान सयम साधिका परम विदुषी साध्वी श्री पद्म श्री म० का। तभी से आप स्वाध्याय मे जुट गई आपने सस्कृत प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओ के साथ-साथ हिन्दी और अग्रेजी भाषाओ का भी अध्ययन किया। हिन्दी मे आपने साहित्यरत्न की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। इसके अतिरिक्त आपने अनेक पूज्य महान सन्तो से जिनमे श्रुत विशारद प० रत्न श्री हेमचन्द जी म० श्री शुक्ल चन्द जी म० एव श्री हस्तीमल म० आदि से जैन आगमो का गहन अध्ययन किया।

तत्पश्चात आपने धर्म प्रचार एव विचरण के लिए प्रस्थान किया। जिससे लाभान्वित हुए हरियाणा, यू०पी० एव दिल्ली, पजाब तथा राजस्थान। आप केवल प्रवचन तक ही सीमित नही रही बल्कि आपने क्रियात्मक कार्य भी खूब किए हैं। आपकी प्रेरणा एव सद्प्रयास से अनेक सस्थाओ की स्थापना हुई है जिनमे प्रमुख हैं जैन स्थानक शाहदरा, कैलाश नगर आदि। आप गुरु-चरणो के प्रति सदा समर्पित रही है। इसीलिए आपने अपनी पूज्या गुरुनी जी के नाम से नई शक्ति नगर मे पदमा स्मारक समिति की स्थापना की जिसकी देखरेख मे पद्मा विद्या निकेतन मे नन्हे मुन्ने बच्चे नैतिक और धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर रहे है जो जैन साध्वी पद्मा विद्या निकेतन के नाम से प्रसिद्ध है। इसी प्रकार की दूसरी शाखा गत वर्ष शास्त्री पार्क दिल्ली जमना पार भी स्थापित हुई है।

आपका सासारिक परिवार भी काफी समृद्ध एव विशाल है। जो कि आपके प्रति भक्ति भावना से ओत-प्रोत है श्रावक श्री मिट्ठन लाल जैन एव उनके सुपुत्र श्री शिखरचन्द जैन, सुखबीर सिंह, धर्मपाल एव जगदीश प्रसाद जो कि सासारिक दृष्टि से क्रमश आपके मामा व ममेरे भाई हैं। आपके परम भक्त है। आपकी उज्ज्वल साधना से और भी अनेक गृहस्थो ने धर्म बोध प्राप्त किया है। वे सभी आपके कृतज्ञ हैं और आपके परम अनुयायी है। आपने नारी समाज के उत्थान के लिए भी महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। अनेक स्थानो पर महिला सगठन आपकी पावन प्रेरणा से स्थापित हुए हैं। इस प्रकार आप समाज को अनेक विध उपकारो से उपकृत कर रही है। आपकी चार शिष्याए हैं जो आपके अनुरूप ही सेवा स्वाध्याय एव सयम साधना मे तत्पर रहती हैं। आजकल आप दिल्ली मे ही विचरण कर रही हैं यहाँ आपके बडे बडे भक्त हैं। इस वर्ष के वर्षावास मे आपने जो सदर क्षेत्र पर उपकार किया है वह सदा स्मरणीय बना रहेगा।



साध्वी श्री प्रमोद कुमारी जी महाराज



जन्म भूमि—सदर बाजार, दिल्ली

जन्म—ईस्वी सन् १६५०

माता—श्रीमति राजदुलारी अग्रवाल

पिता—श्री चिरजी लाल जी अग्रवाल

दीक्षा—ग्राम हिलवाडी, जिला मेरठ (यू पी) सन् १६६२

गुरुणी—साध्वीरत्न श्री पवन कुमारी जी महाराज

विशेष—पाथर्डी बोर्ड की परीक्षाएँ—

विशारद, महासती प्रभाकर शास्त्री आदि पूज्य गुरुदेव श्री फूल चन्दजी म० एव प्रवर्त्तक श्री शान्ति स्वरूप जी म० मे जैन आगमो का अध्ययन किया सस्कृत सस्थान दिल्ली से सस्कृत की मध्यमा परीक्षा, इलाहाबाद से हिन्दी प्रथमा सयम साधना एव स्वाध्याय मे विशेष रुचि ।

साध्वी श्री जितेन्द्र कुमारी जी



जन्म भूमि—बामनौली जिला मेरठ (यू पी) सन् १६५३

माता—श्रीमति मैनादेवी जैन

पिता—श्री रिशालसिह जैन

दीक्षा—कैलाश नगर, दिल्ली ६-११-६४

गुरुणी—महासति साध्वी श्री पवन कुमारी जी महाराज

विशेष—तपस्याएँ ब्रतो की ८-८-६-११-१५-१५-२५-३१-१२ आदि तपस्याएँ करी

शिक्षा—विशारद, प्रभाकर, शास्त्री, आदि परीक्षाएँ उत्तीर्ण की।

पूज्य गुरुदेव श्री फूल चन्द जी म० एव प्रवर्त्तक श्री शान्तिस्वरूप जी म० से आगमो का अध्ययन

सस्कृत सस्थान दिल्ली से सस्कृत की मध्यमा परीक्षा, इलाहाबाद से हिन्दी प्रथमा

साध्वी श्री अर्चना जी



जन्म भूमि – दिल्ली

जन्म—१५-३-५६

माता—श्रीमती दर्शनादेवी अरोडा

पिता—श्री मोहनलाल अरोडा

दीक्षा—गान्धी नगर दिल्ली १६-४ ७५

गुरुणी—स्वर्गीया महासती श्री चम्पकमाला जी म०

विशेष – ८-८-६-६-१६-११-२१ व्रतो की तपस्याएँ एव आयम्बिल एकासन तप भी किया।
आगमो अध्ययन किया।
सेवा मे विशेष रुचि है।



साध्वीश्री संयमप्रभाजी



जन्म भूमि—दिल्ली

जन्म—२५-६-६२

माता—श्रीमति दर्शनादेवी अरोडा

पिता—श्री मोहनलाल जी अरोडा

दीक्षा—ऐतिहासिक स्थान लालकिला मैदान दिल्ली १६-३-७६ रविवार

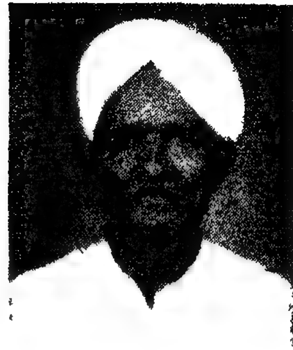
गुरूणी—महासति साध्वी रत्न श्री पवन कुमारी जी म०

विशेष—तपस्याएँ—८-८-६-व्रतो की। इसके अतिरिक्त आयम्बिल, एवं एकासन आदि

अध्ययन—पाथर्डी बोर्ड की परिक्षाएँ
प्रवेशिका प्रथमा, विशारद सम्पूर्ण प्रभाकर

तपस्वी श्रावक-श्राविकाएँ

[एक परिचय]

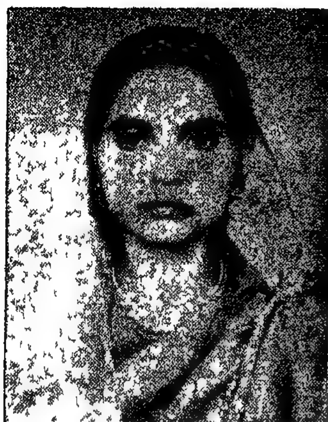


तपस्वी श्रावक श्री चेतरामजी जैन

श्री चेतराम जी परम पूज्य गुरुदेव राष्ट्र सत नवयुग सुधारक, जैन विभूषण, उपप्रवर्तक भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी म० एव हरियाणाकेसरी प्रवचन भूषण श्री अमरमुनि जी म० के प्रति अतीव श्रद्धा रखते हैं। आपका अधिक समय जप, तप एव सामायिक साधना मे ही व्यतीत होता है। आप ७२ वर्ष की वृद्धावस्था मे भी बेले तेले आदि तपस्या करते रहते है। इस चातुर्मास मे भी आपने काफी तपस्याएँ की है। व्रत उपवास बेले आदि के अतिरिक्त आपने ५४ आयम्बिलो की लम्बी तपस्या कर सदरश्री सघ का गौरव बढाया, गुरुओ का नाम ऊचा किया है। तथा अपनी आत्मा का शुद्धीकरण किया है। हम आपके स्वस्थ जीवन की मगलमय कामना करते हैं। और आशा करते है कि आप भविष्य मे भी इसी प्रकार तपस्या कर समाज को प्रेरणा देते रहेगे।

मन के दौडते घोडो को रोकने, तपस्या अश्वशाला है।
विकारो का कचरा जलाने को, तपस्या एक ज्वाला है॥
अज्ञान का भयकर अधकार मिटाने, है दिव्य ज्योति तपस्या।
अगर कोई पीना जाने तो, तपस्या अमृत का प्याला है॥

—श्रीचन्द सुराना 'सरस'



उग्रतपस्विनी श्राविका श्रीमती

रुपरानी जैन

(दिल्ली)

बहन रूपरानी जी का जीवन गृहस्थ मे रहते हुए भी एक आदर्श जीवन है। गुरु-चरणो के प्रति आपके मन मे अगाध श्रद्धा है। इसीलिए आपका जीवन बहुत प्रामाणिक जीवन है। आप प्रारम्भ से ही धर्म आराधना एव तप आराधना मे विशेष रुचि लेती रही है। आपने अपने जीवन मे व्रतो की बहुत लम्बी तपस्याए की है। जिनमे १, २, ३, ४, से लेकर ४१, ५३ तक व्रतो की निरन्तर तपस्या आपने की है।

इस चातुर्मास मे पूज्य गुरुदेव राष्ट्र सन्त भण्डारी श्री पदमचन्दजी महाराज के सान्निध्य मे श्री अमरमुनि म० की प्रेरणा एव पूज्य महासती पवन कुमारी जी म० को कृपा से सबसे लम्बी ५३ व्रतो की तपस्या की है। पूज्य गुरुदेव की कृपा से यह तपस्या सदर क्षेत्र मे गुरु चरणो मे हुई है जिससे सदर क्षेत्र का नाम ऊंचा हुआ तथा गुरुदेव का गौरव बढा है।

आपके एक पुत्र तथा दो पुत्रिया है। आपके समान आप के पति श्री कृष्णलाल जैन भी धार्मिक प्रवृत्ति के है और आपकी धर्म साधना मे हमेशा सहायक बनते है। आपने ३७ वर्ष की अवस्था मे ही ब्रह्मचर्य व्रत पालन की प्रतिज्ञा ले ली थी, अब आपकी आयु केवल ४७ वर्ष है। इस प्रकार आप गृहस्थ मे रहकर भी सन्यास व्रत जीवन व्यतीत करती है। इस वर्ष आपकी इतनी लम्बी तपस्या का सम्मान करते हुए पूज्य गुरुदेव नवयुग सुधारक राष्ट्र सन्त भण्डारी श्री पदमचन्द्रजी म० ने आपको उग्रतपस्विनी श्राविका की उपाधि प्रदान की है। हम आपके मगलमय दीर्घ जीवन की कामना करते हैं। तपस्या से आप जिन शासन का गौरव बढ़ाती रहे।

❋

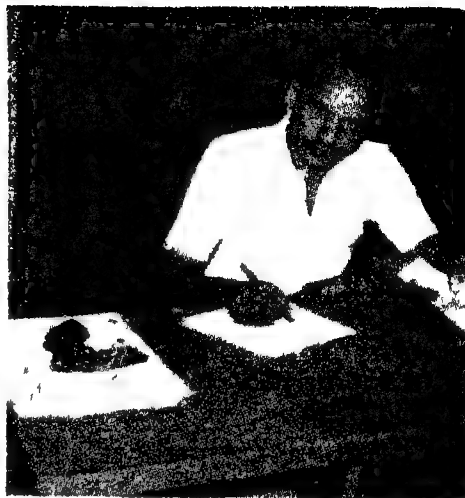


तपस्विनी बहन
श्रीमती सत्यवती जैन

बहन सत्यावती जी धर्म पत्नि श्री प्रीतम चन्द जैन का जीवन बहुत ही तपोमय जीवन है। आप गृहस्थ मे रहते हुए भी अनेक विध तपस्याएँ करती रहती है। आपके धार्मिक सस्कार आपके बच्चो पर भी पड़े है इसीलिए आपकी एक सुपुत्री ने जैन सन्यास दीक्षा भी ग्रहण की है। पुज्य गुरुदेव राष्ट्र सन्त भण्डारी श्री पदम चन्द्र जी म० एव हरियाणा केसरी श्री अमर मुनि जी म० के श्री चरणो के प्रति आपके मन मे विशेष श्रद्धा भक्ति है। इनके दिल्ली चातुर्मासो मे अपने बहुत तपस्याएँ की है। इस वर्ष पूज्य गुरुदेव की कृपा एव घोर तपस्वी श्रीचन्द जी म० की प्रेरणा से ६१ आयम्बिलो की लम्बी तपस्या कर जहाँ चातुर्मास का गौरव बढाया वहाँ अपनी आत्मा को भी ऊँचा उठाया तथा सदर श्री सघ को एक पावन प्रेरणा दी है। हम आपके धर्ममय दीर्घ जीवन की कामना करते है।

तपस्या करना एक कठोर साधना है, इसमे दृढ मनोबल और उच्च वैराग्य भावना चाहिए। जो व्यक्ति अपनी शारीरिक एव मानसिक कमजोरी के कारण तपस्या नही कर सकते, उन्हे तपस्वियो की प्रशसा, उनका गुण गान और सम्मान करके ही अपनी आत्मा को उज्ज्वल बनाना चाहिए।

—अमर मुनि



आभार ज्ञापन

जैन प्रकाश जैन

मत्री एस एस जैनश्री सघ

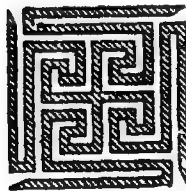
सदर बाजार दिल्ली-६

मैने परम श्रद्धेय प्रात स्मरणीय पूज्य गुरुदेव नवयुग सुधारक उप-प्रवर्तक, भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज एव अमरत्व प्रदान करने वाले श्री हरियाणा केसरी, श्रुत वारिधि पूज्य अमरमुनि जी महाराज का नाम तो बहुत सुना था और दिल्ली पधारने पर उनके दर्शन भी कई बार किए, परन्तु निकट सम्पर्क नही हुआ था। इस वर्ष भाई सुरेश जी ने मेरे मे कहा कि "भाई जैनप्रकाश जी, हम पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास के लिए कई वर्षों से प्रयास करते चले आ रहे है, परन्तु अभी तक भावना पूरी नही हुई, यदि इस वर्ष हमे गुरूदेव श्री का चातुर्मास मिल जाए तो सदर क्षेत्र का भाग्य चमक उठेगा।" हमने योजना बनाई और तभी हमारी भावना तथा कामना को आर्शीर्वाद मिला पूज्या महासती श्री पवककुमारी जी का, तब हमे विश्वास सा होने लगा कि अब शायद वर्षों की इच्छा पूरी होगी और वह ही हो गई। पूज्य गुरूदेव ने हमे चातुर्मास की ज्यो ही स्वीकृति दी तो हमारे सघ के आबाल वृद्ध मे नया जोश आ गया, तैयारिया शुरू हो गई। जब गुरूदेव पधारे, और उनकी अमर वाणी एव आर्शीर्वचन हमे मिलने शुरू हुए। यहाँ जो एक से एक बढकर धर्म के, जप तप के ठाठ लगे उन्हे देखकर मन मे यह

धारणा बन गई कि जीवन मे यह एक पहला अभूतपूर्व चातुर्मास होगा। क्योकि न तो जीवन मे पहले कभी इतनी भीड एव जप तक की रोनक देखी इस वर्ष हमारा पुण्य बहुत ही प्रबल था जो हमे ऐसे महान गुरुदेव का तथा साध्वीरत्न विदुषी—महासती श्री पवनकुमारी जी का चातुर्मास प्राप्त हुआ। वस्तुत. ही जैसा मैंने सुना था उससे भी कही अधिक देखने को मिला। पूज्य गुरूदेव का पुण्य प्रताप। मैंने यह अनुभव किया कि यह चातुर्मास हर दृष्टि मे एक अभूतपूर्व चातुर्मास है।

इस चातुर्मास मे सभी कार्यक्रम व्यवस्थित सचालन करने मे मैं अपने सभी कार्यकारिणी के सदस्यो का आभार मानता हूँ, और विशेष कर सहमत्री श्री सुरेशचन्द जी का भी अत्यन्त आभारी हू जिन्होने हर कार्यक्रम मे मेरे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया। तथा चातुर्मास के सुन्दर कार्यक्रम की झाकी लिखकर पाठको के समक्ष प्रस्तुत की है।

इसी के साथ इस स्मारिका के सम्पादक मण्डल का भी मै आभार मानता हूँ स्मारिका मे शुभकामना विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले व्यापार प्रतिष्ठानो व सहयोगि बन्धुओ का भी मैं हार्दिक आभार मानता हू और खासकर हमारे स्थानकवासी जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीचन्द जी सुराना (आगरा) का भी आभारी हूँ कि इस स्मारिका को बहुत ही कम समय मे उन्होने सुन्दर रूप मे सपादित व प्रकाशित करके हमे दी।





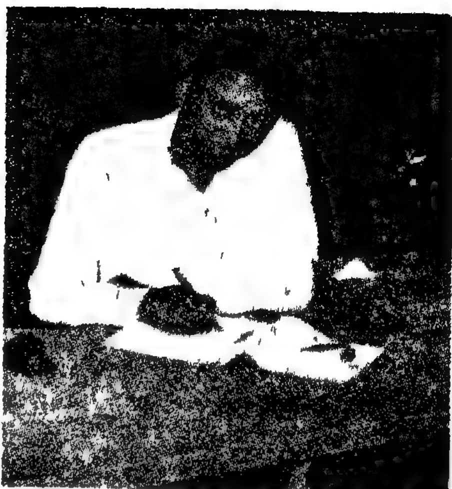
सदर बाजार के अभूतपूर्व चातुर्मास १९८४ मे विराजित मुनिवृन्द मध्य मे गुरुदेव भडारी श्री पदमचन्दजी महाराज, पार्श्व मे—हरियाणा केशरी श्री अमर मुनिजी महाराज, तपस्वी श्रीचन्दजी महाराज खडे हुए—क्रमश श्री सुव्रत मुनि शास्त्री, श्री सुयोग्य मुनि, श्री सुयश मुनि, श्री पकज मुनि। [१



सदर बाजार स्थानक मे १६८४ का चातुर्मास प्रवास कर रही हैं विदुषी साध्वीरत्न महासती पवन कुमारीजी, सेवाभावी साध्वी प्रमोद कुमारीजी, तपस्विनी साध्वी श्री जिनेन्द्र कुमारीजी, साध्वी अर्चना जी, साध्वी मयम प्रभाजी तथा वैरागन नीतू एव रुचि ।

सम्पादकीय

दहली सदर बाजार मे अभूतपूर्व चातुर्मास की एक झाकी



☐ सहमन्त्री, सुरेशचन्द जैन की कलम से

उपवन मे फूल खिले हो और महक बिखर रही हो, मकरन्द लुट रहा हो तो भँवरे मँडरायेगे ही। रात्रि मे चाँद का उदय हो और निर्मल शुभ्र शीतल चाँदनी चारो ओर बिखरी हुई हो तो कुमुद विकसित होगे ही। ठीक इसी प्रकार किसी इन्सान मे गुण हो और उसकी यश-सुरभि चारो दिशाओ मे फैल रही हो तो जन-मानस उस ओर आकर्षित होगा ही, यह स्वाभाविक है।

ऐसे है पूज्य गुरुदेव राष्ट्रसन्त नवयुगसुधारक जैनविभूषण उपप्रवर्तक शान्तमूर्ति परम श्रद्धेय श्री भण्डारी पद्मचन्द जी महाराज। यथा नाम तथा गुण, पद्म की तरह सदैव खिला चेहरा, विशिष्ट शान्ति ज्ञान एव विनम्रता आदि सद्-गुणो से सुरभित है। श्रुतवारिधि प्रवचनभूषण, हरियाणाकेसरी श्री अमर मुनि जी म० जो युग की एक महान हस्ती हैं। तपस्वी श्री श्रीचन्द जी म० श्री सुव्रत मुनि जी म० शास्त्री एम० ए० (हिन्दी-सस्कृत) श्री सुयोग्य मुनि जी म०, श्री सुयश मुनि जी म० एवं श्री पंकज मुनि जी म० जिनके अन्दर ज्ञान का सागर ठाठे मार रहा है, जो अज्ञान मे भटकती हुई आत्माओ के लिए प्रकाश स्तम्भ के रूप मे हैं, इनके गुणो की यश-सौरभ से चारो दिशाएँ महक उठी, तो हमारा सदर बाजार क्षेत्र

भी उस महक से अछूता न रह सका, उस अनुपम महक का पान करते ही बाल, युवा, वृद्ध सभी के मन मे एक ही उमग उठी कि उस पद्म को, उस कमल को, उस ज्ञानपु ज को, अपने यहाँ लाया जाए और हमें भी दिव्य सुगन्धि का आनन्द लेने का, उस ज्ञानपुँज से अपने अन्दर के मिथ्याधकार को दूर करने का अवसर प्राप्त हो। इसी आशा से श्री वर्धमान सेवक सघ की ओर से (बस द्वारा) गुरु दर्शन के इच्छुक श्रद्धालु जन सन् १९७७ मे मानसा मण्डी (पजाब) पहुच ही गए। दर्शन किए, प्रवचन सुना, सभी श्रद्धालु दर्शनार्थियो का मन झूम उठा। श्री ज्ञानचन्द जैन (तत्कालीन प्रधान श्री एस० एस० जैन सघ सदर बाजार दिल्ली) ने प्रवचन अनन्तर वक्तव्य देते हुए तथा गुरु-चरणो मे प्रार्थना की, श्री वर्धमान सेवक सघ के सदस्यो का आशीर्वाद रूप आभार माना। उन्होने कहा—प्रथम दर्शन प्रवचन मे मैंने बहुत कुछ पाया और प्रभावित हुआ हूँ। गुरुदेव ! एक बार आप श्री जी देहली सदर बाजार अवश्य स्पर्शें, हमे लाभ दें, विशेषकर हमारे युवक वर्ग को समझा लें।" गुरुदेव ने जो उत्तर देना था वही दिया, जैसा मौका होगा देखेंगे। हर वृद्ध, युवक, बाल श्रोताओ मे एक उत्कण्ठा जागी यदि गुरुदेव एक बार देहली सदर पधारे तो हम धन्य-धन्य हो उठेगे। मगल प्रवचन श्रवण कर सभी वापिस तो आ गए पर मन गुरु प्रवचन मे रमा रहा। चातुर्मास हो, चातुर्मास हो, ऐसे आवाज जो मन मे उठी, वाणी रूप मे मुखरित हो निकली।

जब सभी के मन मे यही लहर हिलोरें लेने लगी तो सभी प्रयत्न करने लगे उस प्रकाश पु ज को अपने यहाँ लाने का, कभी मानसा जा रहे है तो कभी अहमदगढ मण्डी मे, परन्तु हमे चातुर्मास नही मिला, हम विचार करते रहे कि गुरु जी का चातुर्मास हम अवश्य करायेगे, ऐसे मन मे भाव रखे। सन् १९८२ मे गुरुदेव का देहली पधारना हुआ तथा कोल्हापुर रोड (सब्जी मण्डी) का चातुर्मास स्वीकृत हुआ तब हमारे मन मे एक लालसा जो सुप्त थी, जाग उठी कि गुरुदेव का चातुर्मास हम सदर बाजार मे करायेंगे। हमारा श्री सघ एव नवयुवक वर्ग भी बहुत ही उत्कण्ठित था आपका चातुर्मास कराने के लिए, इसलिए हम भी कई वर्षो से आपका चातुर्मास कराने वालो की पक्ति मे लगे हुए थे। सन् १९८३ का चातुर्मास अशोक विहार श्री सघ को मिला, देहली के युवको मे एक नई चेतना जागी। धर्म जागृत हुई, चारो तरफ पूज्य गुरुदेव श्री भण्डारी पद्मचन्द्रजी महाराज एव श्रुतवारिधि प्रवचन भूषण श्रीअमर मुनि जी म० की चर्चा, कि एक बार प्रवचन सुन लो तो उठने का दिल न करे।

१९८४ के चातुर्मास के लिए सदर श्री सघ ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि इस वर्ष पूज्य गुरुदेव श्री भण्डारी पद्मचन्द्र जी म० एव साध्वीरत्न श्री पवन कुमारी जी म० का चातुर्मास कराया जाय। जगह के अभाव को देखते हुए मन मे कुछ शकाएँ उत्पन्न हुई कि हमारे पास जगह की कमी है। सब बातो को ध्यान मे

रखते हुए चातुर्मास कराने का निर्णय लिया गया। पूज्य गुरुदेव के चरणो में श्री सघ चातुर्मास की विनती के लिए चाँदनी चौक, नरेला, बवाना बसों द्वारा जाता रहा, अन्तत हमारी भावना रग लाई तथा त्रिनगर जैन स्थानक मे जब सदर श्री सघ प्रवचन के समय गुरुदेव के चरणो मे उपस्थित हुआ, उसी समय खचाखच भरे जन-समूह के बीच गुरुदेव के चरणो मे विनती की गई, समस्त समाज ने गुरुदेव के सामने चातुर्मास के लिए अपनी झोली फैला दी तथा गुरु महाराज ने सदर श्री सघ की भावना एव स्नेह को देखते हुए इस वर्ष के चातुर्मास की स्वीकृति हमे दे दी। समस्त जनसमूह खुशी से नाच उठा। नया उत्साह पूरे समाज मे आ गया। चातुर्मास की स्वीकृति के बाद हमने समाज के जिस कार्य मे भी हाथ डाला अपने आप बनता चला गया। तत्पश्चात् सदर श्री सघ साध्वीरत्न परम विदुषी महासती श्री पवन कुमारी जी म० के चरणो मे उपस्थित हुआ। महासती जी के चरणो मे कई वर्षों से विनती चल रही थी, अन्तत साध्वीरत्न श्री पवनकुमारी जी म० ने भी अपने चातु-र्मास की स्वीकृति हमे प्रदान की।

गुरुदेव श्री का चातुर्मास कराने की प्रेरणा का पूरा श्रेय साध्वीरत्न श्री पवन-कुमारी जी को जाता है कि उन्होने हमे कदम-कदम पर प्रेरणा दी तथा साहस बुलन्द रखा। हम सदा उनके कृतज्ञ रहेंगे।

परिचय—

श्रद्धेय गुरुदेव श्री पद्मचन्द्रजी म० हमारे आराध्यदेव, जैनधर्म दिवाकर, साहित्यरत्न, जैनागम रत्नाकर, महामहिम, बालब्रह्मचारी, चारित्र चूडामणि आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी म० के शिष्यरत्न, सस्कृत, प्राकृतविशारद जैनरत्न उपप्रवर्तक श्रद्धेय पडित श्री हेमचन्द्र जी म० के शिष्य है। आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म० के व्यक्तित्व से कौन व्यक्ति अपरिचित होगा? आचार्य देव पर स्थानकवासी जैन जगत को महान् गौरव है। आप श्री जैन जगत के एक महान् प्रतापी आचार्य थे, ज्ञान के सागर थे, जैनागमो के महासागर का जितना आपने मथन किया, गहन अध्ययन किया, निकट के इतिहास मे ऐसा कोई उदाहरण नही मिलता। आपका जीवन अहिंसा, सत्य, जप, तप, त्याग, वैराग्य, क्षमा, दया, प्रेम, उदारता, गम्भीरता, सहिष्णुता, चरित्र सम्पन्नता, मधुरता का एक पवित्र कोष था। आपने अज्ञानान्धकार मे भटक रहे अनगणित प्राणियो को ज्ञान का प्रकाश देकर आत्मोत्थान के पथ पर आरूढ़ किया।

उन्ही आचार्य भगवान् के शिष्य रत्न थे पडित श्री हेमचन्द्र जी म० महान् गुरु के महान् शिष्य थे आप। गुरु कृपा से ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग, शान्ति, विनय और गम्भीरता की प्रतिमूर्ति थे आप। ऐसे महान् गुरु के शिष्य-रत्न हैं भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म०। आप कितने ज्ञानवान, गम्भीर शान्तचित्त मननशील एवं

उदारहृदय हैं यह सारा जैन जगत अच्छी तरह से जानता है। जैन समाज का बच्चा-बच्चा आपका नाम बड़ी श्रद्धा एवं प्यार से लेता है। आपश्री की प्रेरणा से पजाब, हरयाणा के अनेक क्षेत्रो मे स्थानक बने हैं, हाई स्कूल बने हैं। नि शुल्क चिकित्सालय चल रहे हैं। साहित्य व धर्म के प्रचार मे आपश्री ने मौन भाव से बहुत सेवाएँ दी हैं। आपश्री का जैन समाज पर महान् उपकार है।

भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म० के शिष्य हैं—प्रवचनभूषण हरियाणा केसरी श्री अमर मुनि जी म०। उनके बारे मे क्या लिखूँ शब्द ही नही मिलते, जिनकी मधुर ओजस्वी तेजस्वी कोकिलवाणी ने जैन समाज को क्या, अन्य समाजो पर भी एक जादू-सा कर दिया है। आपके दिव्यज्ञान ने, मधुर सगीत लहरी ने जनमानस को इतना प्रभावित किया कि लोक स्वत ही मन्त्रमुग्ध हुए खिचे चले आते है।

ज्ञान पिपासु विद्याभिलाषी श्री सुव्रत मुनि जी शास्त्री डबल एम० ए० के सयमित नियमित एव विवेकशील जीवन को देखकर ऐसा लगता है कि अपने गुरु के गुण इन्हे भी विरासत मे मिल गये है और उन गुणो के प्रभाव स साधना-पथ पर दिन प्रतिदिन आगे बढ रहे हैं तथा पुरुषो को धर्म की प्रेरणा देते रहते है। श्री सुव्रत मुनि जी मे ज्ञान प्राप्ति की तीव्र उत्कण्ठा है, वे रात-दिन अध्ययन मनन मे लगे रहते है।

तपस्वी श्री श्रीचन्द जी म० हर समय अपनी तपस्या मे लीन रहते है। बडे ही शान्त मूर्ति हँसमुख, मधुर स्वभाव के हैं आप।

श्री सुयोग्य मुनि जी, श्री सुयश मुनि जी एव श्री पकज मुनि जी म० शास्त्रो का अध्ययन करने के लिए सदैव गुरु चरणो मे बैठ रहते है।

सदर श्री सघ की ओर से महामुनियों का स्वागत

महाराज श्री जी द्वारा चातुर्मास की स्वीकृति मिल जाने पर सबके मन मे एक ही उत्कण्ठा हिलोरे लेने लगी—महाराज श्री जी कब हमारे क्षेत्र मे पधारे, कब हम उनके पावन दर्शन करे और कब पीयूष वाणी का पान करके अपने जीवन को सफल बनाएँ।

इन्तजार की घडियाँ समाप्त हुई और महाराज श्री जी के यहाँ पधारने की शुभ बेला आ गई। दिनाक ८ जुलाई १९८४ का शुभ दिन महाराज श्री के पदार्पण का दिन निश्चित हो गया। उस दिन श्रद्धालु जनता का सुविशाल समूह महाराज श्री जी के भावभीने मगलमय प्रवेश के लिए उद्वेलित सागर की तरह उमड पडा। बाडा हिन्दूराव से सुविशाल भव्य जुलूस जयघोषो से गगन का गु जाता हुआ जैन स्थानक सदर बाजार मे आकर व्याख्यान सभा मे परिणित हो गया। जुलूस मे ससद सदस्य श्री जगदीश टाईटलर, महानगर पार्षद श्री सतीश सक्सैना एव निगम पार्षद रघुवश सिंघल के अतिरिक्त अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।



श्री महावीर जैन युवक सघ, बस्ती हरफूलसिंह सदर बाजार दिल्ली-६ के
उत्साही, सेवाभावी कार्यकर्ता एव अधिकारीगण ।

A]



श्री एस० एस० जैन सघ, सदर बाजार दिल्ली-६ के उत्साही,
तथा सेवाभावी कार्यकर्ता एव अधिकारी, जिन्होने तन-
मन-धन से सेवा करके चातुर्मास को सफल बनाया
और श्री सघ का गौरव बढाया।



सर्वप्रथम श्री एस० एस० जैन संघ के मन्त्री श्री जैन प्रकाश जी ने भाव-भीने शब्दो द्वारा मुनियों का स्वागत करते हुए कहा—"आज का दिन परम सौभाग्यशाली दिन है कि महाराज श्री जी का चातुर्मास करवाने की हमारी चिराभिलाषा पूर्ण हो रही है। गुरुदेव ने हमारी विनती को स्वीकार करते हुए यहाँ पधार कर जो हम पर अनुग्रह किया है उसके लिए सदर श्री सघ की ओर से महाराज श्री जी का किन शब्दो मे आभार प्रकट करूँ, मेरे पास शब्द नही हैं। हमारे पुण्योदय से आज यह सुनहरी अवसर हमे प्राप्त हुआ है, हमे पूर्णतया इसका लाभ लेना है।"

इसके उपरान्त गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म० ने अपना मधुर प्रवचन प्रारम्भ किया, तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेव के मगल पाठ के पश्चात् आज का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास मे उमड़ता जन समूह

जब से गुरुदेव श्री जी का सदर क्षेत्र मे पदार्पण हुआ है तभी से श्रोताओ की इतनी भीड आ रही है कि हमारे स्थानक की जगह छोटी पड जाती है। रविवार को तो प्रवचन श्री हीरालाल जैन स्कूल मे होते थे। उस स्कूल का प्रागण भी श्रोताओ ने छोटा कर दिया, लोग ऊपरी छत तक पहुँच जाते हैं। फिर गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म० ने प्रेरणा दी कि नित्य प्रति चार आयम्बिल होने चाहिए। गुरुजी ने तो कहा चार, परन्तु भक्त चार की बजाय ६-७ आयम्बिल प्रतिदिन करते है। साथ ही गुरुदेव ने प्रेरणा दी कि रविवार को स्थानक मे २४ घण्टे का अखण्ड जाप होना चाहिए। वह बहुत सुन्दर ढग से होता रहा।

जाप के विषय मे इस वर्ष एक और विशेष बात यह हुई कि अब तक पूर्व मे केवल बडे स्थानक मे ही रविवार को जाप होता था, परन्तु इस वर्ष महासती श्री पवन कुमारी जी म० की प्रेरणा से छोटे स्थानक मे महिलाओ की ओर से भी प्रति रविवार को जाप होता रहा है। सवत्सरी पर्व तक तो जाप स्थानक मे चलता था परन्तु इसके पश्चात् जाप हर रविवार को घरो मे प्रारम्भ किया है क्योकि स्थानक मे प्रतिदिन जाप होता ही है, जब कि घरो मे बहुत कम होता है, इसीलिए अब घरो मे जाप चल रहा है। प्रति भाई बहिनो द्वारा सामायिके काफी सख्या मे होती है। श्री वर्धमान सेवक सघ तथा एव श्री महावीर जैन युवक सघ सामायिक आराधना एव अखण्ड पाठ मे तन मन से अपना योगदान दे रहे हैं। नवयुवको का प्रत्येक काम मे बढ-चढकर भाग लेना प्रशसनीय है।

आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनन्द ऋषि जी म० का जन्म जयन्ती महोत्सव

इस वर्ष राष्ट्र सन्त जैन धर्मदिवाकर आचार्यसम्राट श्री आनन्द ऋषि जी म० का ८४ वा जन्मोत्सव सामायिक दिवस के रूप मे मनाया गया जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० दौलत सिंह जी कोठारी ने की। कार्यक्रम श्री हीरालाल जैन

स्कूल के प्रागण मे मनाया गया जिसमें बडी सख्या मे लोगों ने भाग लिया। नित्य प्रति सामायिक करने वाले भाई बहिनो की सख्या बहुत होती है। खूब जप-तप एव धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। शासनदेव श्रमण भगवान महावीर स्वामी के चरणो मे प्रार्थना की गई कि आचार्य श्री जी का नेतृत्व हमे युगो-युगो तक मिलता रहे।

पर्वाधिराज पर्यु षण पर तप की वर्षा—

पर्यु षण पर्वों मे जो जप-तप एव धर्म आराधना इस वर्ष हमारे यहाँ हुई है वह तो अपने आप मे एक कीर्तिमान है। बडे-बडे बुजुर्ग और ७०-७५ वर्ष के श्रोता भी यह कहते सुने गए कि इतनी भीड हमने पहले कभी यहाँ नहीं देखी। इस वर्ष तपस्या भी अपूर्व हुई, हो भी क्यो न, जब पूज्य गुरुदेव भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी म० स्वय तप मे लग जाएँ। आपने इतनी वृद्ध अवस्था मे भी इस चातुर्मास मे आठ दिन की तप आराधना (अठाई तप) की। आपके साथ तपस्वी श्री श्रीचन्द जी एव सुयोग्य मुनि जी ने भी अठाई एव नौ दिन की तपस्या की। उधर साध्वी अर्चना जी ने तो और भी जोर लगाया और २१ दिन की लम्बी तपस्या कर डाली। इस प्रकार तपस्या की दुगुनी झडी लगी कि आस-पास के सभी क्षेत्रो मे सबसे अधिक अठ्ठाईयाँ हमारे यहाँ गुरुदेव श्री के प्रताप से हुई। १४१ व्रतो की अठ्ठाईयाँ हुई और इससे ऊपर की लम्बी तपस्या मिलाकर दो सौ के लगभग लम्बी तपस्याएँ हुई। जब कि व्रत बेले तेले तो बहुत थे उनकी गणना नही की गई। इस प्रकार पर्यु षण पर्व पर धर्म-तप की अपूर्व वर्षा होती रही।

नया कीर्तिमान—

इस वर्ष हमारे क्षेत्र मे पूज्य गुरुदेव की अपार कृपा से वैसे तो जप, तप एव धर्म प्रभावना आदि के सभी नये नये कीर्तिमान स्थापित हुए हैं परन्तु उनमे भी जो सर्वश्रेष्ठ कीर्तिमान स्थापित हुआ है, वह है ५३ दिन की लम्बी तपस्या। इससे पहले हमारे साधु सतियो ने तो अनेक लम्बी तपस्याएँ की थी। किन्तु किसी श्राविका ने पहली बार ही इतनी लम्बी तपस्या की। यदि यह कहा जाए कि सदर मे ही नही अपितु आसपास के प्रान्तो मे भी जैसे हरियाणा पजाब आदि मे भी इससे पूर्व किसी श्राविका द्वारा इतनी बडी तपस्या नही हुई है। इस प्रकार गुरुदेव श्री की कृपा से हमारे यहाँ तपस्या का एक नया व अनुपम कीर्तिमान बन गया है।

सवत्सरी महापर्व—

फिर आ गया सवत्सरी महापर्व भी। इस महापर्व को मनाने के लिए डिप्टी-गज मे एक विशाल पण्डाल बनाया गया परन्तु वर्किंग-डे (कार्य दिवस) होते हुए भी हमारा पण्डाल छोटा हो गया। तपस्या का खूब ठाट लगा और दानियो ने खूब दान



चातुर्मास में धर्म-साधना

संवत्सरी महापर्व का दिन सामूहिक सामायिक साधना के रूप में मनाया गया। सामायिक कर प्रवचन श्रवण करते हुए विशाल जनसमूह।





सामायिक-साधना करते हुए विशाल महिला समुदाय
गुरुदेव श्री अमरमुनिजी महाराज प्रवचन कर रहे हैं।

तप-महोत्सव



चातुर्मास मे वैरागन नीतू जैन ने अठाई तपस्या की। तपोत्सव के दिन आशीर्वाद प्रदान करते हुए पूज्य गुरुदेव श्री भडारीजी महाराज एव हरियाणाकेसरी श्री अमर मुनिजी।





वैरागन नीतू जैन को तपस्या करने के उपलक्ष्य मे धर्म-आराधना का आशीर्वाद प्रदान कर रही है महासती श्री पवन कुमारी जी।



श्री पदमा विद्या निकेतन की अध्यापिकाओ ने तपस्या के उपलक्ष्य मे वैरागन नीतू जैन का स्वागत अभिनन्दन किया।



तपस्वी श्री चेतरामजी जैन का ४६ आयम्बिल के तप उपलक्ष्य मे अभिनन्दन करते हुए श्री ताराचन्दजी नाहर एव श्री सिंघवी।

तप की शोभायात्रा २-६-८४



तपस्विनी बहन रूपरानीजी के तपोत्सव की शोभायात्रा (दिनाक २-६-८४) का एक दृश्य, आगे चल रहे है श्री सुरेन्द्रकुमारजी, वीरेन्द्रकुमारजी जैन आदि।



तप की पूर्णता के अवसर पर शोभायात्रा के जुलूस का दृश्य, श्री जैन श्रमणोपासक —स्कूल का बैंड, साथ चल रहे है श्री कमलेशजी आदि।

उग्रतपस्विनी का सम्मान



उग्रतपस्विनी बहन रूपरानी जैन को ५३ वे दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान देते हुए पूज्य गुरुदेव, साथ मे खडे है श्री कमलेश जी, जैनप्रकाशजी, प्रेमचन्दजी तथा महमत्री सुरेशचन्दजी जानकारी देते हुए



उग्र तपस्विनी बहन रूपरानी जैन को आशीर्वाद प्रदान करती हुई महामती पन्नकुमारी जी । साथ मे खडी है जैन महिला सघ की प्रधान श्रीमती विमला जैन।



उग्रतपस्विनी श्रीमती रूपरानी जैन को सदर श्री सघ की तरफ से सम्मानित करते हुए—प्रधान श्री आत्मारामजी जैन, मत्री—श्री जैन प्रकाश जैन, सहमत्री—श्री सुरेश चन्द जैन परिचय दे रहे है ।



जैन महिला सघ की प्रधान श्रीमती विमला जैन तपस्विनी श्रीमती रूपरानी का सम्मान कर रही है । मच सचालन कर रहे है महमत्री श्री सुरेश चन्द जैन

किया। गुरुदेवो के प्रवचनों के अतिरिक्त अनेक प्रेरणाप्रद कार्यक्रम उस दिन हुए। पर्युषण पर्वों मे प्रवचन भूषण हरियाणा केसरी श्री अमरमुनि जी म० ने अलकृत् दशा सूत्र एव पूज्य महासति श्री पवनकुमारी महाराज ने कल्पसूत्र का वाचन बहुत ही ओजस्वी ढग मे किया। हर तरह से आनन्द वर्षा होती रही। श्री जैन श्रमणोपासक स्कूल सदर बाजार के बच्चो ने सम्वतसरी पर्व के उपलक्ष मे बडा ही रोचक सास्कृतिक कार्यक्रम पेश किया जिसके अन्दर श्री वर्धमान जैन शिक्षा समिति सदर बाजर का भी सहयोग रहता है क्योकि इसके द्वारा हम धार्मिक शिक्षा का अध्ययन करते हैं।

तप-पूर्ण महोत्सव—

२ सितम्बर १९८४ को बहिन रूप रानी जैन ने गुरुदेव के चरणो मे ५३ दिन के उपवास का प्रत्याख्यान लेना था उस दिन बाडा हिन्दूराव से एक विशाल जुलूस निकला जिसमे सबसे आगे श्री जैन श्रमणोपासक स्कूल सदर बाजार का बैण्ड अपनी मीठी सुरीली धुन बजाता हुआ पहाडी धीरज क्षेत्र से गुजर रहा था, उसके बाद श्री पदमा विद्या निकेतन स्कूल के बच्चे अपनी सुन्दर पोशाक मे जुलूस की शोभा बढा रहे थे, पीछे विशाल जन-समूह बहिन रूपरानी, गुरुदेव एव महावीर स्वामी के जय-कारो से गूंज रहा था। जनसमूह के साथ श्री जगदीश टाईटलर (ससद सदस्य) श्री सतीश सक्सैना (महानगर पार्षद), श्री रघुवश सिंघल (निगम पार्षद) तथा समाज के गणमान्य व्यक्ति जनसमूह मे उपस्थित थे। जयकारो के साथ जुलूस चलता रहा, ऐसा लग रहा था कि सदर बाजार मे आज कोई महान् उत्सव है। जुलूस आगे बढता गया तथा पहाडी धीरज से होता हुआ डिप्टी गज के पडाल मे पहुच कर एक विशाल जनसभा मे परिवर्तित हो गया। जहाँ पर पूज्य गुरुदेव भण्डारी श्री पद्म चन्द जी म० ने तपस्विनी बहिन को 'उग्र तपस्विनी' की पदवी से अलकृत किया। श्री अमर मुनि जी म० एव साध्वी श्री पवन कुमारी जी म० ने तपस्या के महत्व पर जनसमुदाय को सम्बोधित किया। श्री डी० पी० जैन (अध्यक्ष जैन महासघ दिल्ली प्रदेश) ने भी अपने विचार प्रकट किए। इनके पश्चात् पूज्य गुरुदेव के मगल पाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

चमत्कार—

२३ अगस्त से २ सितम्बर तक मौसम बारिश का रहा, ३० अगस्त ८४ को सम्वत्सरी महापर्व वाले दिन रात को बारिश हुई। मन ही मन मे सोच रहे थे कि कल का कार्यक्रम सम्वत्सरी महापर्व कहाँ मनाएँगे, जगह कम रहेगी। भाई बहिन काफी सख्या मे आएँगे। प्रात ७-३० बजे तक मन मे चिन्ता बनी रही, श्री सघ के सदस्य गुरुदेव के चरणो मे जाकर खडे हो गए। भगवन्! अब क्या करें?, पूज्य गुरु-देव ने दो मिनट सोचकर हँस कर कहा कि डिप्टीगज के पण्डाल मे ही कार्यक्रम रखो,

हमने जनसमूह मे घोषणा कर दी कि सम्वत्सरी महापर्व का कार्यक्रम नीचे पण्डाल मे होगा, बादल मंडरा रहे थे, कार्यक्रम बहुत सुन्दर ढग से चला, दोपहर १२-३० बजे तक कार्यक्रम चला, कार्यक्रम समाप्त होने के एक घन्टा बाद वारिश शुरू हो गई। इसी प्रकार तप पूर्ण महोत्सव पर भी प्रात ६-३० बजे तक वारिश थी। गुरूदेव की कृपा हमेशा श्री सघ पर रही, तप पूर्ण महोत्सव का कार्यक्रम भी डिप्टी गज पण्डाल मे मनाया गया। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद वर्षा शुरू हो गई। मैं इसको अपनी भाषा मे इस चातुर्मास को अभूतपूर्व चातुर्मास के साथ-साथ चमत्कारिक चातुर्मास भी कह दूँ तो कोई बडी बात नही।

आत्म शुक्ल जयन्ती समारोह

८ सितम्बर १९८४ को आत्म-शुक्ल-जयन्ती समारोह महावीर स्वामी चौक (बारा टूटी) सदर बाजार मे मनाया गया, पूरे चौक पर टेन्ट लगवाकर एक बहुत बडा पण्डाल बनाया गया। प्रात एक भाई ने पण्डाल देखा—देखकर कहने लगा इतने बडे पण्डाल की क्या आवश्यकता है? हम भी सोच मे पड गए लेकिन जब जनसमूह का आना प्रारम्भ हुआ तो वह जगह भी छोटी पड गई। मेरे ख्याल से इतना बडा जनसमूह हमे धार्मिक कार्यक्रम म देखने को नही मिला। गुरुदेव की प्रेरणा से ३५०० आयम्बिल ८-९-८४ को करवाए गए तथा ९-९-८४ को सामूहिक पारणा श्री जैन श्रमणोपासक स्कूल सदर बाजार मे श्री सुखबीर सिंह सुरेश कुमार जैन मोतियाखान वालो की तरफ से कराया गया तथा भोजन की व्यवस्था श्री महावीर जैन युवक सघ बस्ती हरफूल सिंह की तरफ से की गई। पारणो की व्यवस्था मे श्री वर्धमान सेवक सघ का सहयोग प्रशसनीय था तथा उस दिन दिल्ली मे विराजित समस्त प्रमुख सन्त एव महासती जी भी पधारे थे, जलसे के मुख्य अतिथि श्री बलराम जाखड (लोक-सभाध्यक्ष) थे। आत्म-शुक्ल-जयन्ती के उपलक्ष मे हरियाणाकेसरी श्री अमर मुनि जी म० ने आचार्य श्री आत्माराम जी म० एव श्री शुक्लचन्द्र जी म० की जीवनी पर प्रकाश डाला। उन्होने फरमाया—'पूज्य श्री आत्माराम जी म० का जीवन त्याग वैराग्य, क्षमा, शान्ति, उदारता, सहिष्णुता चरित्रसम्पन्नता एव विद्वता आदि दिव्य गुणो से ओतप्रोत था। पडित श्री शुक्लचन्द्र जी म० यथा नाम तथा गुण जैसा नाम शुक्ल चन्द्र वैसे ही उनके वस्त्र भी शुक्ल, काम भी शुक्ल और जीवन भी शुक्ल था। उन्होने समाज की कटुताओ के विष का शकर बनकर पान किया।'

इस अवसर परसाध्वी रत्न श्री पवनकुमारी जी म० अन्य महासतियाँ जी तथा विराजित सन्तो ने आत्म-शुक्ल जयन्ती पर अपने विचारो से जनसमूह को अवगत कराया।

श्री बलराम जाखड (लोक सभाध्यक्ष) ने कहा कि 'आत्म-शुक्ल जयन्ती के

आत्म-शुक्ल जयंती महोत्सव : एक झांकी

महावीर स्वामी चौक (बाराटूटी) सदर बाजार दिल्ली मे दिनाङ्क ९-९-८४ तदनुसार भाद्रपद शुक्ला १३ को नवयुग सुधारक राष्ट्रसंत गुरुदेव भण्डारी श्री पदमचन्दजी महाराज के सान्निध्य मे, लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री बलराम जाखड की अध्यक्षता मे आत्म-शुक्ल जयती महोत्सव मनाया गया। समारोह की एक भव्य झाकी चित्रो मे देखिये—



गुरुदेव को वन्दन करते हुए श्री बलराम जाखड (लोकसभा अध्यक्ष)
पास खडे है श्री नन्दकिशोर जैन एव सतीश सक्सेना (महानगर पार्षद)



श्री जाखड का स्वागत करते हुए सघ के मत्री श्री जैन प्रकाश जैन
परिचय दे रहे है—श्री सुरेश चन्द जैन, सहमत्री
श्री एस एस जैन सघ, सदर बाजार दिल्ली



समारोह के स्वागताध्यक्ष श्री लोकनाथजी जैन ने (नौलखा साबुन वाले)
लोक सभाध्यक्ष श्री जाखड साहब का स्वागत किया।
मच पर सघ के प्रधान श्री आत्मारामजी जैन बैठे है।



मच पर आसीन क्रमश श्री हेमचन्द जैन (भूतपूर्व एम एल ए)
श्री जाखड साहब, श्री सतीश सक्सेना (म न पार्षद) एव
मघ-मत्री श्री जैन प्रकाश जैन तथा सहमत्री सुरेश चन्द जैन



हरयाणा केसरी प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि अपनी मधुर एव ओजस्वी
वाणी मे जन समूह को उद्बोधित कर रहे है। मच पर विराजमान
क्रमश गुरुदेव श्री भंडारी जी म०, श्री देवेन्द्र मुनिजी शास्त्री,
तपस्वी श्रीचन्दजी म , सेवाभावी श्री प्रेमसुखजी म
तथा श्री सुव्रत मुनि शास्त्री एम ए



श्री अमर मुनि का भावोद्बोधक प्रवचन सुनने मे तन्मय
श्री बलराम जाखड एव अन्य प्रमुख श्रोतागण



स्व० परम श्रद्धेय आचार्य श्री आत्मारामजी म एव परम श्रद्धेय
स्व० श्री शुक्लचन्द्रजी म के प्रति भावभीने श्रद्धा-सुमन
समर्पण करते हुए श्री बलराम जाखड

कार्यक्रम पर आकर मैं अपने आपको धन्य मानता हूँ कि मुझे महान् सन्तो के दर्शन का लाभ मिला तथा उन्होने महापुरुषो के प्रति अपने श्रद्धा-सुमन उनके चरणो मे समर्पित किए। समारोह बहुत ही सुन्दर ढग से सम्पन्न हुआ जिसके लिए लोगो को यह कहते सुना गया कि इतना बड़ा धार्मिक आयोजन पहले यहाँ कभी नही हुआ। इस प्रकार पूज्य गुरुदेव के हमारे यहाँ विराजने से सदर क्षेत्र का मान सम्मान बहुत ऊँचा हो गया, नए कीर्तिमान यहाँ बनते जा रहे हैं, यह सब गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म० के पुण्य प्रताप का ही परिणाम है। कार्यक्रम के समाप्ति पर उपाध्याय राजस्थान केसरी श्री पुष्कर मुनि जी म० ने अपनी श्रद्धाजली समर्पित की तथा विशाल जनसमूह को मगल पाठ सुनाकर कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। आत्म-शुक्ल जयन्ती कार्यक्रम भारत के समाचार पत्रो मे एव दूरदर्शन पर जिस प्रकार प्रसारित किया गया यह भी हमारे लिए गौरव की बात है।

ओली तप आराधना

आश्विन मास मे पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से हमारे यहाँ ९ दिन के लगातार आयम्बील तप की आराधना की गई। जिसमे बहुत-से भाई-बहिनो ने भाग लिया। इससे पहले भी गुरु कृपा से हमारे यहाँ आयम्बिल तपस्या का ठाट लगा रहा। तपस्वी श्रावक श्री चेतराम जी ने निरन्तर ४६ दिन की आयम्बील तपस्या की है, बहिन सत्यावती जी ने ६१ दिन की आयम्बील तपस्या पूज्य गुरुदेव के चरणो मे की, श्रीमती बनारसी देवी, धर्मपत्नी श्री विमलकुमार जी जैन ने भी ५३ दिन की एकासना तपस्या करके धर्मलाभ लिया। ओली तप पर ९ दिन के भोजन की व्यवस्था श्रीमती पूर्णदेवी जैन पत्नी स्व० श्री बशीलाल जैन (जडियाला वालो) की तरफ से थी, तथा पारणे की व्यवस्था एक भाई की तरफ से की गई जिन्होने गुप्त सेवा की। चातुर्मास काल मे दर्शनार्थी भाइयो द्वारा पूज्य गुरुदेव के चरणो मे आने का ताता लगा रहा। हमारा प्रयास रहा कि कोई भी दर्शनार्थी भाई बिना नाश्ता पानी किए बगैर नही जाना चाहिए तथा पजाब, हरियाणा, राजस्थान से बसो का ताता लगा रहा तथा इस वर्ष हमे सेवा का अवसर बहुत मिला।

इस साल नाश्ते मे हमने अपने क्षेत्र मे एक नई व्यवस्था चालू की तथा हफ्तेवारी एक भाई के द्वारा अपनी तरफ से नाश्ते की व्यवस्था की जिसमे सभी समाज का हमे पूर्ण सहयोग मिला।

गुरुदेव श्री का दीक्षा स्वर्ण जयन्ती महोत्सव :

१४ अक्तुबर १९८४ को पूज्य गुरुदेव नवयुगसुधारक उपप्रवर्तक भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी म० की दीक्षा स्वर्ण जयन्ती भारतीय जैन मिलन के क्षेत्रीय तत्वावधान मे मनायी गई, जिसकी अध्यक्षता माननीय काग्रेस (ई) के कार्यकारी अध्यक्ष

श्री कमलापति त्रिपाठी जी ने की। इस उत्सव मे हजारों लोग शामिल हुए जिनके बीच गुरुदेव का अभिनन्दन भारतीय जैन मिलन द्वारा किया गया। श्री त्रिपाठी जी ने पूज्य गुरुदेव की समाज-सेवा और निर्मल-साधना के लिए उन्हे 'राष्ट्र सन्त' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

महापर्व दीवाली—

राष्ट्र सन्त भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी म० की महान् कृपा से एव प्रवचन भूषण श्री अमरमुनि जी म० की प्रेरणा से दीपावली पर्व तेलो के तपाराधना के रूप मे मनाया गया। २२ अक्टुबर से २४ अक्टुबर तक भाई बहिनो ने काफी सख्या मे तेले किए, बेले-व्रत पौषध भी काफी सख्या मे हुए। २४ अक्टुबर को जैन स्थानक के हाल मे श्री अमर मुनि जी म० ने भगवान महावीर की अतिम वाणी के रूप मे उत्तराध्ययन सूत्र के ३६ अध्ययनो का इतने रोचक एव कलात्मक ढग से वाचन किया कि श्रोता मन्त्र मुग्ध हुए सुनते रहे।

विशिष्ट व्यक्तियो का आगमन

समय समय पर पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणो मे मार्गदर्शन हेतु अनेक सरकारी अधिकारी तथा सामाजिक नेता आते रहते है। डा० दौलतसिंह जी कोठारी तो गुरुदेव के दर्शनो के लिए आते रहे है, उन्ही के साथ म्युनिसिपल कमिश्नर श्री प्रमोद श्रीवास्तव भी पूज्य गुरुदेव के चरणो मे आये थे। उन्हे आपने मार्गदर्शन दिया एव जैन साहित्य भेंट किया। अखिल भारतीय जैन कान्फ्रेन्स के प्रधान श्री सचालालजी बाफना जी गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे। श्री जगदीश टाईटलर (ससद सदस्य) तो आते ही रहते है। इस प्रकार हमारे यहाँ पूज्य गुरुदेव के विराजने से हर भाति ठाट लगा रहा।

नवकार मत्र का अखण्ड जाप—

श्री सुव्रत मुनि जी शास्त्री एम० ए० ने हमे धर्म जागृति के लिए प्रेरणा दी। चातुर्मास काल मे जब चातुर्मास प्रारम्भ हुआ उन्होने प्रेरणा दी कि प्रति रविवार को महामन्त्र का अखण्ड जाप होना चाहिए, उनकी प्रेरणा रग लाई तथा नवयुवको ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। रात्रि मे बच्चो को धार्मिक शिक्षा का अध्ययन शास्त्री जी कराते रहे तथा जब भी रात्रि, मे स्थानक को जाता हूँ मुनि जी को जप मे लीन देखता। मुनि जी का शास्त्र वाचन युवको को प्रेरणा देने वाला होता है तथा इस चातुर्मास मे नन्दी सूत्र पर अपने प्रवचन किए जो बहुत ही प्रेरणाप्रद रहे।

ऊपर वर्णित सभी कार्यक्रमो मे जिन बाल, युवा तथा वृद्धो बधुओ का सहयोग हमे हर समय मिलता रहा है मैं उनका आभार प्रदर्शित किए बिना नही रह

दीक्षा स्वर्ण जयंती समारोह :

नवयुग सुधारक गुरुदेव भण्डारी पदमचन्दजी महाराज की जैन श्रमण दीक्षा के साधनामय ५० वर्ष की सम्पन्नता पर भारतीय जैन मिलन द्वारा तालकटोरा स्टेडियम (नई दिल्ली) मे दिनाक १४ अक्टूबर १९८४ को सम्मान समारोह मनाया गया। समारोह की एक भव्य झलक —

भारतीय जैन मिलन द्वारा गुरुदेव का सम्मान



गुरुदेव भण्डारी श्री पदमचन्दजी महाराज



समारोह के अध्यक्ष अ भा काग्रेस (ई) के कार्यकारी अध्यक्ष श्री कमलापति त्रिपाठी का स्वागत कर रहे है एस एस जैन सघ के मन्त्री श्री जैन प्रकाश जैन, सहमन्त्री श्री सुरेश जैन एव अन्य कार्यकर्तागण। [



श्री कमलापति त्रिपाठी श्रद्धाप्रभूत हृदय से गुरुदेव श्री भण्डारीजी म० को राष्ट्र सन्त के पद से सम्मानित करते हुए



ताल कटोरा स्टेडियम, समारोह में प्रवचन करते हुए हरियाणा केसरी श्री अमर मुनिजी महाराज

सकता । श्री वर्धमान सेवक सघ श्री महावीर जैन युवक संघ, जैन महिला सघ के नाम उल्लेखनीय हैं ।

श्री दिगम्बर जैन समाज पहाडी धीरज ने चातुर्मास काल के लिए दिगम्बर जैन धर्मशाला देकर हमारे दर्शनार्थी भाइयो को ठहराने मे सहयोग देकर हमारी एक गभीर समस्या को हल करने मे अपना सहयोग दिया जिसके लिए हम अत्यन्त आभारी हैं । श्री हीरालाल जैन स्कूल के प्रबन्धक महोदय, श्री जैन श्रमनोपासक स्कूल के मैनेजर श्री श्रीपाल जी एव प्रिंसिपल श्री सी० पी० जैन श्री रिखबचन्द जैन (टी-टी-इन्डस्ट्रीज) जी तथा जैन समाज की समस्त सस्थाओ का अत्यन्त आभारी हूँ कि उन्होंने इस चातुर्मास काल मे अपना योगदान दिया । दानी महानुभावो ने श्री सघ को अपना सहयोग देकर हमारा उत्साह बढाया । अन्त मे मैं अपने कर्तव्य पर पूरा नहीं उतरूँगा यदि मैं नारी समाज का आभार नहीं प्रकट करता, उन्होने भी तप की झडी इस चातुर्मास मे लगाए रखी । और तपस्या के क्षेत्र मे नया कीर्तिमान स्थापित कर हमारा गौरव बढाया ।

मैं आशा करता हूँ समाज के सभी वर्ग धर्म के सभी कृत्यो मे अपना योग-दान इसी प्रकार से देते रहेगे और अन्त मे यह कामना करता हूँ कि गुरुदेव हमे भूले नही और फिर भी जब कभी फुरसत मे बैठे हो तो सदर बाजार की समाज को याद करते रहे । □□





शुभकामना

परम सेवाभावी
श्री प्रेमसुख जी महाराज

मुझे यह जानकर परम प्रसन्नता हुई कि श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सघ सदर बाजार की ओर से एक चातुर्मास स्मारिका निकल रही है। मुझे सदर क्षेत्र मे रहने का एक लम्बा समय मिला है क्योकि वहाँ पर पूज्य गुरुदेव प्रात स्मरणीय स्थविरपदविभूषित बाल ब्रह्मचारी स्व० श्री भागमलजी म० ने अपने तपोमय जीवन २०-२१ वर्ष सदर क्षेत्र मे व्यतीत किए और अपनी साधना की अन्तिम लीला भी यही पूर्ण की है। इसके अतिरिक्त और भी अनेक पूज्य साधु आचार्यों, मुनिराजो के वर्षावास भी यहाँ पर बडी धूमधाम मे सम्पन्न हुए है। सदर श्री सघ ने इस धर्म गगा को सतत प्रवाहित रखा है। इसीलिए सघ ने इस वर्ष अथक परिश्रम करके पूज्यपाद राष्ट्र सन्त उपप्रवर्तक भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी म० एव सरस्वती पुत्र हरियाणा केसरी श्रुत वारिधि श्री अमरमुनि जी म० ठाणे सात एव साध्वी रत्न महामती श्री पवनकुमारी जी ठाणे ५ का चातुर्मास कराया। इस चातुर्मास मे जो धर्म ध्यान हुआ, लम्बी लम्बी तपस्याएँ हुई, वह अपने आप मे सदा स्मरणीय बनी रहेगी। श्री अमर मुनि जी म० की अमर देशना ने सदर श्री सघ के इतिहास मे चार चाद लगा दिए हैं। जितनी तपस्या, जितना धर्म ध्यान, अनेक विशाल धार्मिक आयोजन इस वर्ष सदर मे हुआ वह भी अपने आप मे एक उपलब्धि है। व्याख्यान मे अपार जन-समूह, बाहर से आने वाले दर्शनार्थियो का ताता लगा रहता है। सदर श्री सघ ने अनथक सेवा की है। यह उसकी विशाल हृदयता का ज्वलन्त प्रमाण है। इसके लिए मैं सदर सघ को साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य मे भी उनकी धर्मभावना इसी तरह उज्ज्वल बनी रहेगी। वह अपने कर्तव्य का भली भाति पालन करता रहेगा।

कार्यकर्ता एव अधिकारी—



श्री जैन सहायता सभा, सदर बाजार दिल्ली-६

कार्यकर्ता तथा अधिकारीगण—



श्री वर्द्धमान जैन शिक्षा समिति, सदर बाजार दिल्ली-६

श्री वर्द्धमान सेवक संघ, सदर बाजार देहली
कार्यकर्ता तथा अधिकारीगण



श्री जैन पब्लिक लायब्रेरी, डिप्टीगंज, सदर बाजार, देहली
अधिकारीगण



—: श्रद्धांजलि :—

'सिरि अप्पाराम-थुइ'

(श्री आत्माराम स्तुति)

सिरि समणसघस्स,
अप्परामो मुणीसरो ।
सूरिदो पढमो जाओ,
णाणदंसण – संजुओ ॥ १ ॥
विसुद्ध जीवण जस्स,
जसो सूरियसनिही ।
वयणं मंगलं दिव्व,
झाणं य निम्मल अहो ॥ २ ॥
सया सज्झाण-सलीणो,
संजाओ जो जणप्पिओ ।
धीरो वीरो य गभीरो,
गुणाणं सायरो अहो ॥ ३ ॥

□□

शुक्ल-गुण वर्णनम्

प्रशान्तः सरलः सौम्यः, शुक्लचन्द्रो महामुनि ।
कोविद प्रखरो वक्ता, प्रसन्नः प्रवरः कविः ॥ १ ॥
ज्ञानी ध्यानी सदा दान्त., गुणज्ञो गुणवान् तथा ।
आगमज्ञो महा-प्राज्ञ, प्रभावक प्रवर्तकः ॥ २ ॥

—उपाध्याय पुष्कर मुनि :



आशीर्वचन

—उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि

भण्डारी श्री पदमचद जी महाराज से मेरा परिचय सन् १६६४ मे सर्वप्रथम हुआ। पर वह परिचय 'परिचय' तक ही सीमित रहा। पर इस वष वे मेरे बहुत ही सन्निकट परिचय मे आए। मेरे साथ रहे और मैंने यह अनुभव किया कि भडारी जी म एक सहृदयी सरल आत्मा सन्त है। उनके जीवन मे सरलता का साम्राज्य है। कपटपूर्ण जीवन उन्हे पसन्द नही है। दूसरी बात बडो के प्रति उनमे सहज श्रद्धा है, विनय है, भक्ति है। तो छोटो के प्रति उनमे वात्सल्य है। वे बडो का आदर करते है और छोटो से प्यार करते है।

श्री भण्डारी जी ने जनमानस मे श्रद्धा समुत्पन्न की है। उनका मधुर व्यवहार चुम्बक की तरह जनमानस को आकर्षित करता है। वे बहुत ही भाग्यशाली है जिन्हे दादा गुरु आचाय सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज मिले और शिष्य अमरमुनि जी मिले। सुयोग्य शिष्य अमरमुनि जी ने अपने सद्गुरु के नाम को रोशन करने मे जी-जान से प्रयास किया है। योग्य शिष्य को देखकर मेरा हृदय आनन्द-विभोर है। भण्डारी जी म० की दीक्षा स्वर्ण जयन्ती मनाई जा रही है। वे पूर्ण स्वस्थ रहे और जिनशासन की खूब सेवा करे यही मेरा हार्दिक आशीर्वाद है।

जो पुत्र अपने माता पिता की ओर शिष्य अपने गुरुजनो की सेवा, विनय और यश वृद्धि करता है, ससार मे उसकी भी सेवा, प्रशसा और कीर्ति स्वय होती है।

गुरु का गुणगान करने वाला सर्वत्र गुणगान प्राप्त करता है।

—भडारी श्री पदमचन्द जी महाराज



बधाई और बधाई

१

श्रुत वारिधी कवि अमर मुनीश्वर
जी का किसलय पाया है
जान आपकी सब की साता
मन न मोद समाया है

२

पत्र आपका पहले भी इक
पाकर मन हर्षाया था
उसका उत्तर कविता मे लिख
तभी पोस्ट करवाया था

३

नही मिला क्या अभी आपको
इसकी अति हैरानी है
पहुच आप से उसकी प्यारे
कविवर बाकी आनी है

४

भण्डारी श्री पदम मुनीश्वर
जी ने करी अठाई है
'चन्दन मुनि' की बहुत बहुत ही
उनको मधुर बधाई है

५

श्री श्रीचन्द तपस्वी मुनि ने
निर्जल करी अठाई है
एक बार क्या सहस बार क्या
उनको लाख बधाई है

*

एक संस्मरण

स्नेह और सद्भावना के सच्चे साधक भंडारी जी महाराज

—देवेन्द्र मुनि शास्त्री

अजमेर के मध्य प्रागण मे श्रमण सघ के शीर्षस्थ मुनियो का एक बिराट सम्मेलन का आयाजन था। उस सम्मेलन मे भारत के विविध अचलो से सत सम्मिलित हाने के लिए पहुच रहे थे। भण्डारी नवयुग सुधारक पण्डित श्री पद्म चद जी महाराज अपने सुयोग्य शिष्य अमर मुनि जी के साथ वहाँ पर पधारे थे। प्रथम दशन मे ही मुझे यह अनुभव हुआ कि भण्डारी जी महाराज स्नेह की साक्षात् मूर्ति है। सम्मेलन क भीड भरे वातावरण मे उनका गहरा परिचय नही हो सका। केवल औपचारिक वार्तालाप उस समय अवश्य हुआ था। उस सम्मेलन मे अमर मुनि जी ने 'जय बोलो महावीर स्वामी की" यह भजन अपने मधुर स्वर मे गाया तो हजारो श्रोतागण झूम उठ तथा भजन की स्वर-लहरियाँ सभी के कानो मे गूजने लगी। सवत्र उस भजन का प्रचार हो गया। यह था अमर मुनि जी के स्वर का जादू।

सन् १९८४ मे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी महाराज का देहली मे पदार्पण हुआ। भण्डारी पद्म चद जी महाराज देहली मे पहले से ही विराज रहे थे। जब हम वीरनगर मे पहुँचे। उस समय आप सत्यवती कोलोनी मे विराज रहे थे। मै आपश्री के दर्शन हेतु सत्यवती कोलोनी पहुँचा। मार्ग मे ही आपके दशन हो गए। आपने कहा—मै उपाध्याय जी के दर्शन करने के लिए वीरनगर जैन कोलोनी जा रहा था। मै भी आपके साथ वीरनगर पुन पहुँचा। मैने देखा, आप भाव-विभोर होकर गुरुदेव के चरणो मे नमन कर रहे है और 'जैन योग सिद्धान्त और साधना', जैन तत्त्व कलिका' 'भगवती सूत्र' आदि ग्रन्थ गुरुदेव श्री को समर्पित कर रहे है। वार्तालाप मे आपश्री ने फरमाया कि गुरुजनो के दर्शन बिना भेट किए नही करना चाहिये। इसलिए यह साहित्यिक भेट स्वीकार कीजिए। क्योकि आप उपाध्याय है, ज्ञान के देवता हैं। ज्ञान के देवता की उपासना ज्ञान से ही की जा सकती है। गुरुदेव श्री के साथ आपश्री का मधुर वार्तालाप होता रहा और मैं तल्लीनता से उसे सुनता रहा।

सत्यवती कालोनी म आपश्री की प्रेरणा मे एक नव्य-भव्य स्थानक बना है, उसका उद्घाटन समारोह था। आपश्री के स्नेह भरे आग्रह को सम्मान देकर पूज्य गुरुदेव श्री वहाँ पधारे। आपश्री के नम्रतापूण सद्व्यवहार ने मेरे अन्तर्मानस मे आपके प्रति सहज निष्ठा पैदा की।

इसके पश्चात् शालीमार बाग मे एक दिन एक स्थान पर साथ रहे, और वहाँ से साथ-साथ ही विहार कर रोहिणी अवस्थित प्रशान्त विहार मे दो दिन तक साथ रहने का सुअवसर मिला। पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री के देहली पधारने की प्रसन्नता मे अहिंसा विहार का शिलान्यास समारोह था। इस ऐतिहासिक समारोह मे आपश्री का अपने शिष्य समुदाय सहित आगमन हुआ था। दो दिन तक आपश्री से मेरी खुल कर विचार चर्चा हुई। उस चर्चा मे मैंने यह अनुभव किया कि आप तन से वृद्ध हो चुके है तथापि आपके मन में एक तड़फन है—समाज को सुधारने की। आप चाहते हैं कि आधुनिक युग मे हमे अपना साहित्य इस रूप मे प्रस्तुत करना चाहिए कि वह युवकों के लिए चित्ताकर्षक हो। उनकी जिज्ञासाओं का समाधान हो सके, ऐसे साहित्य की आज अत्यन्त आवश्यकता है। मैंने इसी भावना से प्रेरित होकर परम श्रद्धेय आचार्य सम्राट आत्माराम जी महाराज सा० का साहित्य नूतन परिवेश मे प्रस्तुत करने का सकल्प किया है। मेरी यह भी कामना है जो भी साहित्य प्रकाशित हो, वह विद्वानो के पास पहुँचाना चाहिए जिससे वे जैन साहित्य से परिचित हो सकें। लाला लोगो को साहित्य पढने की फुरसत भी नही है। उनके मन मे साहित्य के प्रति उतना लगाव भी नहीं है। और जिनका साहित्य के प्रति लगाव है उनके पास साहित्य नही पहुँचता। इसलिए साहित्य का प्रचार नही हो पाता। जैनधर्म के सम्बन्ध मे विद्वान लोग अपने ग्रन्थो मे जो बाते लिखनी चाहिए वे लिख नही पाते। इसका मूल कारण है कि जैन साहित्य के मूल ग्रन्थ उनके हाथो मे नही पहुचे हैं। मैं सोचने लगा कितनी लगन है आपके मन मे साहित्य के प्रति और समाज के प्रति।

पुन आपश्री के साथ मे रहने का अवसर डेरावाले नगर मे मिला। उस दिन आपश्री से सामाजिक विषयो पर चर्चा हुई। आपश्री ने अपने अनेक मधुर सस्मरण सुनाए। उन सस्मरणो को सुनकर मुझे लगा कि आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज की आप पर असीम कृपा थी। आपने विनय और भक्ति से उनके हृदय को जीत लिया था। एक बार उनकी सेवा मे सद्गृहस्थ ने एक बालक को समर्पित किया। आचार्य प्रवर ने आपको अपने पास बुलाया और बालक का हाथ आपके हाथ मे थमाते हुए कहा—पद्म ! मैं तुझे यह बालक सौप रहा हूँ। इसे पढ़ाना-लिखाना और इसके विकास का पूर्ण ध्यान रखना। यह बालक तेरे लिए तो सहारा बनेगा ही, साथ ही समाज के लिए भी अच्छा-पथ-प्रदर्शक बनेगा। तेरे और मेरे नाम को रोशन करेगा। और बालक को भी आचार्य श्री ने कहा—अमर ! ये तेरे गुरु हैं। इनकी आज्ञा का पालन करना, तेरा जीवन चमक उठेगा। वही बालक आज हरियाणा केसरी श्रुत वारिधि, प्रवचन भूषण, अमर मुनिजी के नाम से विश्रुत हैं। वस्तुत. अमर मुनि जी की प्रवचन कला चित्ताकर्षक और मनमोहक हैं। गुरुजनो के प्रति विनय और भक्ति प्रशसनीय हैं।

श्रद्धेय गुरुदेव श्री का वर्षावास चादनी चौक मे अवस्थित महावीर भवन मे हैं तो आपश्री का चातुर्मास सदर बाजार मे है। इस चातुर्मास मे भी अनेको बार आपश्री के दर्शन करने का अवसर मिला और श्री चरणो मे बैठकर वार्तालाप करने के भी प्रसग प्राप्त हुए। ज्यो-ज्यो मैं आपके सम्पर्क मे आया त्यो-त्यो मुझे स्नेह, सद्भावना और श्रद्धा समुत्पन्न होती रही। और मुझे यह दृढ़-विश्वास हो गया कि आप एक सच्चे सन्त हैं।

आपश्री दीक्षा के ४९ वसन्त पार कर ५० वें वसन्त मे प्रवेश कर रहे है। दीक्षा की स्वर्ण जयन्ती के सुनहरे अवसर पर मैं अपनी अनन्त श्रद्धा आपके श्री चरणो मे समर्पित करता हूँ। और यही हृदय की चाह है कि आप स्वस्थ और प्रसन्न रहकर हमे अपने मगलमय आशीर्वाद सदा प्रदान करते रहें।



卐 शुभ कामना 卐

श्री जैन प्रकाश जैन | रकाबगंज रोड
मन्त्री; श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सघ | नई दिल्ली
सदर बाजार दिल्ली-६ | फोन · ३८४४०६

आपका पत्र दिनांक १०-१०-८४ मिला। हर्ष की बात है कि श्री एस एस जैन संघ सदर बाजार मे पूज्य नवयुग सुधारक जैन विभूषण राष्ट्र सत श्री भण्डारी पदमचन्द जी महाराज हरियाणाकेसरी श्री अमरमुनि जी म० ठाणे सात साध्वी रत्न श्री पवनकुमारी जी म० ठाणे का चातुर्मास है तथा आपके कार्य एव गुरुजी की प्रेरणा एव प्रवचन से जो आपके क्षेत्र मे धर्म का ठाठ लगा है, सराहनीय है। इस अवसर पर मैं अपनी शुभ कामनाएँ एव गुरुजी के चरणो मे वन्दन नमस्कार करता हू।

आपका
जगदीश टाइटलर
(ससद सदस्य)



Shri Jain Prakash Jain,
Secretary,
Shri Svetambar Sthanakavasi Jain Sangh,
Sadar Bazar, Delhi-6

Dear sir,

I am much pleased to know that spiritual Jain saints for religious discourses are showering blessings to the people and in oredr to make this a regular feature of your sangh, you are bringing out a souvenir I convey my felicitations and good wishes for your noble venture

Yours faithfully
(Satish Saxena)
Member
METROPOLITAN COUNCIL
Join Secretary
DELHI PRADESH CONGRESS COMMITTEE (I)
4706, Deputy Ganj, Sadar Bazar,
DELHI-110006

मंगल कामना

□ रघुवंश सिंघल

(पार्षद—दिल्ली नगर निगम)



हर्ष का विषय है कि एस एस जैन सघ महान सन्तो के पावन चातुर्मास के पूर्ण होने के सुअवसर पर एक विशाल आयोजन करने जा रहा है और इस शुभ अवसर पर इन मुनि रत्नो के आशीर्वचनो सहित एक स्मारिका भी निकाल रहा है। हम सबका परम सौभाग्य है कि इस बार हमारे क्षेत्र मे चातुर्मास के लिए परम पूजनीय भडारी श्री पदमचन्द जी महाराज एव श्रद्धेय श्री अमरमुनि जी महाराज जैसे महान सत अपने सघ सहित यहाँ पधारे और पूरे चार माह अपने आशीर्वचनो से अमृत वर्षा की व यहाँ के धर्म-परायण निवासियो को धर्म और दर्शन का सही और सच्चा रूप बतलाते हुए उन्हे उनका कर्त्तव्य बोध कराया। पूरा क्षेत्र उनके समक्ष नतमस्तक है और उनका कृतज्ञ है।

मुझे स्वय भी मुनिश्री के अमृत-वचन सुनने का इस बीच कई बार सौभाग्य मिला। वह अवसर और वे क्षण धन्य थे और वह सुखद याद एक धरोहर के रूप मे मेरे साथ रहेगी। पूरे राष्ट्र को इन महान सपूतो पर गर्व है जो कि अपने देश के धर्म, सभ्यता व सस्कृति की विजयपताका आज भी पूरे विश्व मे फहरा रहे है और अपना सर्वस्व त्याग कर समूची मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे है।

मैं हृदय से इन महान आत्माओ के श्री चरणो मे नमन करता हूँ और सघ के समस्त कार्यकर्त्ताओ को बधाई देते हुए आपके इस आयोजन की सफलता की मगल कामना करता हूँ।

आपका
रघुवश सिघल
[पार्षद, दिल्ली नगर निगम]

एक ऐतिहासिक चातुर्मास

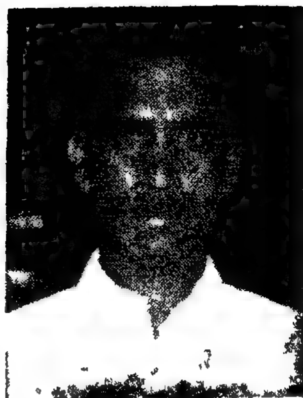
सदर क्षेत्र का सौभाग्य है कि बडी देर के बाद महान तपस्वी तेजस्वी परम श्रद्धेय गुरुदेव, उपप्रवर्तक, नवयुग सुधारक भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी महाराज ने अपने शिष्य परिवार सहित चातुर्मास किया। उनके यशस्वी शिष्य हरियाणा केसरी श्रुतवारिधि, प्रवचन भूषण श्री अमरमुनि जी महाराज जिनकी वाणी मे सरस्वती का वास है, उन्होंने धर्म की महान प्रभावना की है। मैंने श्री अमरमुनि जी महाराज के प्रवचन जितनी बार सुने उतनी बार मुझे एक नई दिशा और नया ज्ञान प्राप्त हुआ। हर बार नई दृष्टि मुझे मिली। जप, तप, सेवा, धर्म प्रभावना तथा दर्शनार्थियो का आगमन आदि हर दृष्टि से यह चातुर्मास एक ऐतिहासिक चातुर्मास रहा है। यहाँ पर गुरुदेव की कृपा से एक बहन ने ५३ दिन व्रतो की लम्बी तपस्या की, एक भाई ने ४६ आयम्बिल, एक अन्य बहन ने ६१ आयम्बिल किए, इसके अतिरिक्त पर्युषण पर्वों मे यहाँ जो तपस्या की बहार आई वह तो अविस्मरणीय है। १४२ व्रतो की अठाइयाँ हुई। इसके अलावा अन्य तपस्याओ की तो कोई गणना ही नही की गई। फिर यहाँ पर गुरुदेव के पधारने से नवयुवको मे जो धर्म जागृति हुई थी अपूर्व थी। ये लोग सदैव सेवा मे तत्पर रहते हैं। इसीलिए गुरुदेव की कृपा एव आशीर्वाद से बडे-बडे आयोजन यहाँ पर हुए, जिनमे आत्म-शुक्ल-जयन्ति का विशाल आयोजन तो सदा-स्मरणीय बना रहेगा जिसमे इतने साधु साध्वियाँ तथा उनके भक्ति पूर्ण गीत और प्रवचन सब कुछ अनूठा था। इस उत्सव पर सारी दिल्ली मे तपस्या की लहर सी आ गई जिससे ३५०० आयबिल हुए। इसके लिए जहाँ मैं गुरुदेव का आभारी हूँ वहाँ सदर क्षेत्र के उत्साही कार्यकर्ता श्री आत्माराम जी, श्री जैन प्रकाश जी, श्री सुरेशचन्द्र जी आदि सभी ने बहुत ही उत्साह एव लग्न से कार्य किया, गुरुदेव का चातुर्मास यहाँ कराया इसके लिए इन्हे मे बधाई एव धन्यवाद देता हूँ। मैं गुरुदेव का एक बार फिर आभार मानता हूँ और आशा करता हूँ कि आप समय समय पर हमारे यहाँ पधार कर हमे सन्मार्ग दिखाते रहेंगे। आपका समस्त शिष्य परिवार बहुत ही योग्य एव विवेकशील है जिसमे श्री सुव्रत मुनि जी शास्त्री, एम० ए० को मैंने देखा और सुना है। वे बहुत सयमशील होनहार प्रतिभावान् सन्त है। मैं आप सभी का ऋणी हूँ जिनके श्री चरणों मे मुझे धर्म आराधना करने का अपूर्व लाभ प्राप्त हुआ है।

महासती साध्वीरत्न श्री पवन कुमारी जी म० की प्रेरणा से नारी समाज मे जागृति आई वह भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। इस तरह यह चातुर्मास इतिहास के पृष्ठो पर सदा चमकता रहेगा।

—हेमचन्द जैन

(भूतपूर्व एम० एल० ए०)

श्रद्धा-वन्दन



□ आत्माराम जैन

प्रधान, एस एस जैन सघ

सदर बाजार दिल्ली

●

सद्गुरु जी को वन्दना करू अनेक प्रणाम।
हृदय धरू गुरु चरण, सुन्दर ललित ललाम॥
सुख दुख नाशि गुरु चरण सकल सुमगल रूप।
नित प्रति बन्दन मैं करू सुन्दर सुघड अनूप॥

सदर बाजार दिल्ली के इतिहास मे ४ जुलाई १९८४ का दिन स्वर्ण अक्षरो मे लिखा जाएगा। जिस दिन यहा पर जैन विभूषण भडारी श्री पद्म चन्द्र जी महाराज, प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज ने अपनी शिष्य मण्डली सहित पदार्पण किया! सारे नगर मे जो उत्साह की अद्भुत झलक उस दिन देखने को आई वो निरन्तर बढती ही गई और इसका कारण यह था कि परम पूज्यनीय गुरुदेव जी का तेजोमय दैदिप्यमान मस्तक हसमुख चेहरा, सरल स्वभाव, प्रेमयुक्त मधुर वाणी। जो भी आपके सम्पर्क मे आते गये आकर्षित हुए बिना न रह सके और आपकी चुम्बकीय शक्ति के पराधीन होकर आपके ही सदा के लिए भक्त बन गए। गुरुदेव श्री भडारी जी म० की इस समाज को सबसे बडी जो देन है वह है विभूति श्री अमर मुनि जी महाराज, जिनकी वाणी की ओजस्विता मे स्वामी विवेकानन्द, वाणी की मधुरता मे योगीराज कृष्ण, जैन शास्त्र, उपनिषदो तथा वेदो के ज्ञान भण्डार मे स्वामी दयानन्द, जीवन क्रान्ति लाने मे गुरुगोविन्द सिह तथा त्याग मे राणा प्रताप के एक ही समय मे दर्शन किए जा सकते है।

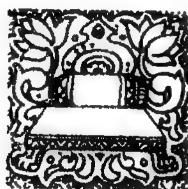
आपने सारे चातुर्मास मे अपने भाषणो से सब को इतना मन्त्रमुग्ध कर दिया कि सभी नर नारियो के मन विभोर हो उठते थे और सभी कोई

सामायिक, नवकार महामत्र के अखण्ड जाप, व्रत, बेले, आयम्बिल, पौषध आदि मे बढ चढ कर भाग लेते थे। इन सभी कार्यों का आयोजन हसी खुशी तथा बिना किसी दबाव के होता ! यह कहने मे कोई अतिशयोक्ति नही होगी कि इस बार सदर बाजार मे तपस्या एव धर्म क्षेत्र मे सभी नए रिकार्ड कायम हुए और सदर बाजार के इतिहास मे इस चातुर्मास को अमर कर दिया।

धन्य है गुरुदेव ! मैं इसके लिए श्री वर्धमान सेवक संघ के सभी सदस्यो एव नौजवान साथियो का, विशेषकर उनके मोहनलाल जैन प्रधान का अतीव आभारी हूँ जिसने मुझे प्रधानता के समय मे दिए गए सहयोग, निरन्तर परिश्रम के फलस्वरूप चातुर्मास रूप वरदान की उपलब्धि दी।

आपके गुणो का वर्णन करने की मुझ जैसी तुच्छ बुद्धि मे शक्ति नही। केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि आप मुनि मण्डल की हमारे पर सदा कृपा दृष्टि बनी रहे। आपको सदा स्वस्थ जीवन प्राप्त हो और समाज हमेशा उन्नति के पथ पर निरन्तर गतिशील रहे।

अन्त मे समस्त समाज का अन्यन्त आभार प्रकट करता हूँ जिन्होने समय पर मुझे अपना योगदान दिया।





सदा कृतज्ञ रहेगे

श्री ताराचन्द जैन (कपड़े वाले)

उपप्रधान—एस एस जैन सघ

सदर बाजार, दिल्ली

ससार के समस्त धर्मगुरुओ ने यही उपदेश दिया है कि सम्पूर्ण मानव जाति अध्यात्मिकता एव सत्य के पथ पर अग्रसर होती हुई एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति करे अर्थात मानव-मानव के कल्याण के लिए कार्य करे और नैतिकता के माग पर चले। यह सदर बाजार के जैन समुदाय का सौभाग्य है कि नवयुग सुधारक जैन विभूषण श्री अमर मुनि जी महाराज ने निरन्तर चार मास तक हमारे नगर की सम्पूर्ण जनता को अपने प्रभावशाली वक्तव्यो द्वारा लाभान्वित किया तथा नवयुवको मे एक नई चेतना का आह्वान किया। सदर बाजार के निवासियो तथा विशेषकर जैन स्थानकवासियो के हृदय मे एक नई जाग्रति का सचार हुआ जिसके लिए हम भडारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज एव अमर मुनि जी महाराज के सदा कृतज्ञ रहेगे। हम उनके अमर उपदेशो पर आचरण करने का प्रयास करते रहेगे। श्रद्धेय मुनि जी ने नवयुवको के चरित्र निर्माण एव आध्यात्मिक ज्ञान पर बल दिया एव सदगुणो को अपनाने का उपदेश दिया है। ❋



मंगल कामना

श्री ताराचन्द नाहर

उपप्रधान—श्री एस एस जैन सघ

सदर बाजार दिल्ली

श्रद्धेय गुरुदेव नवयुग सुधारक जैन विभूषण भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज तथा प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज के चातुर्मास बिताने के उपलक्ष्य मे स्मारिका का आयोजन कर रहा है। इस शुभ तथा अद्भुत प्रयास पर श्री वर्धमान स्थानक वासी जैन श्रावक सघ की ओर से मगल कामना करता हूँ। महाराज श्री जी ने इस चातुर्मास मे अपने ओजस्वी भाषणो तथा कठिन क्रिया से सदर बाजार ही नही, बल्कि आसपास के देहाती भाईयो के मन पर अमिट छाप लगाई है। धर्म ध्यान का एक प्रवाह सा बहा दिया है। हजारो लोगो ने माँस, अण्डा, शराब का त्याग श्रद्धा से किया है। नवयुवक कार्यकर्त्ताओ ने इन व्यसनो के अतिरिक्त धुम्रपान का भी त्याग किया है तथा सामायिक स्वाध्याय मे जुटे है। महाराज श्री ने समाज को एक ऐसी अद्भुत निशानी दी है जो सदा ही गुरुदेव जी की याद दिलाती रहेगी। भगवान् से प्रार्थना है कि महाराज श्री जी की आयु सैकडो वर्ष हो और उनकी यह गति निरन्तर बढ़ती रहे ताकि समाज को उनका मार्गदर्शन सदैव मिलता रहे। ❑

नया उत्साह जगाया है

विमलकुमार जैन

कोषाध्यक्ष, एस एस जैन सघ

सदर बाजार, दिल्ली



सदर क्षेत्र का श्री सघ पूज्य गुरुदेव नवयुग सुधारक जैन विभूपण उपप्रवर्तक राष्ट्र सन्त भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज एव हरियाणा केसरी श्रुतवारिधि श्री अमरमुनि जी म० का अतीव ऋणी रहेगा, क्योकि गुरुदेव ने अपना इस वर्ष का वर्षावास हमे देकर बडी कृपा की है। आपने अपनी अमर साधना, अपार ज्ञान सम्पदा एव परम आशीर्वचनो से धर्म के प्रति हमारी श्रद्धा भावना को सुदृढ एव सवर्धित किया है। प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी म० ने अपनी ओजस्वी वाणी एव अगाध ज्ञान से समाज मे नया उत्साह एव उमग पैदा की है। श्री सुव्रत मुनि जी शास्त्री एम० ए० ने भी अपनी ज्ञान शक्ति से हमे प्रेरित किया है। पूज्या महासती श्री पवन कुमारी जी महाराज ने महिलाओ मे जो जागृति उत्पन्न की है वह भी सदा स्मरणीय बनी रहेगी। हम गुरुदेव से एव महासती जी से करबद्ध प्रार्थना करते है कि आप समय समय पर हमे मार्गदर्शन देते रहे। □



हमारा सौभाग्य

श्री मोहनलाल जैन

प्रधान—श्री वर्धमान सेवक सघ

सदर बाजार दिल्ली

मै तथा मेरे दिल्ली सदर बाजार के स्थानक वासी बन्धुगण, नवयुग सुधारक जैन विभूषण भण्डारी श्री पद्मचन्द जी महाराज एवम् प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज के कृतज्ञ है कि उन्होने सेवा निष्ठा एवम् दृढ सकल्प के साथ इस वर्ष का चातुर्मास धर्माराधना एवम् धार्मिक प्रवचन करके सदर बाजार मे व्यतीत किया यह इस नगर के निवासियो का अहो भाग्य ही कहा जायेगा कि ऐसी महान् विभूतियो एवम् धर्मध्वजा फहराने वाले मुनिवृन्द का यहा पदार्पण हुआ और लगभग चार मास की दीर्घ अवधि तक अहिसा, सत्य, प्रेम निष्ठा एवम् धर्मोपदेश की पावन गगा इस क्षेत्र को श्री अमर मुनि जी महाराज के वचनामृत से रससिक्त करती रही।

श्री अमर मुनि जी महाराज के प्रवचन अज्ञान के अन्धकार को दूर करने मे न केवल स्थानकवासी जैन समाज मे, बल्कि दिल्ली के प्राय प्रत्येक मतावलम्बी व्यक्ति के हृदय मे अपना घर कर गये है, दिल्ली नगर इतने समय तक हिन्दु सिक्ख जैन अर्थात हर व्यक्ति के शुभ आगमन का केन्द्र रहा और हर उत्सुक ने अपनी ज्ञानपिपासा को शान्त किया। उनके तथा साध्वी जी श्री पवन कुमारी जी महाराज के पावन विचार अनन्तकाल तक इस वातावरण मे गुंजते रहेगे तथा धर्म अनुरागी सज्जनो को शुभकर्म करने की प्रेरणा देते रहेगे ऐसा मेरा अमिट विश्वास है।

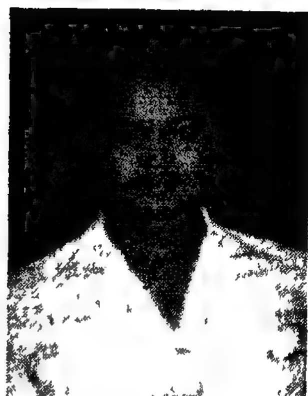
अन्त मे भगवान श्री महावीर के चरणो मे प्रार्थना करता हूँ कि इन सेवा कार्यो मे हमे आत्मबल प्रदान करे और उनकी पूर्ति हेतु हमारे ऐसे श्रद्धेय गुरुजनो को दिल्ली नगर मे पदार्पण करने की प्रेरणा देते रहे। तथा मैं श्री एस एस जैन सघ सदर बाजार का आभार करता हूँ जिन्होने चातुर्मास मे हमे सेवा करने का अवसर प्रदान किया, गलती के लिए क्षमा प्रार्थी। □

मार्ग-दर्शन मिलता रहे .

श्री कमलेश कुमार जैन

उपप्रधान—श्री वर्धमान सेवक सघ

सदर बाजार दिल्ली



नवयुग सुधारक जैन विभूषण भण्डारी श्री पद्मचन्द जी महाराज एवम् प्रवचन-भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज का तन, मन से आभारी हूँ जिन्होने हमारे पथ भूल रहे युवक मण्डल को नवीन मार्ग दर्शाया, धर्म के प्रति उनमे दिन-प्रतिदिन कम होती हुई आस्था एवम् श्रद्धा को पुन सबोधित किया। वास्तव मे धर्म प्रचार एवम् मार्गदर्शन की जितनी आवश्यकता आज युवक वर्ग को है उतनी समाज के किसी भी अ ग को नही है। पथ भूला युवक धार्मिक मान्यताओ, पूर्वजो के आदर्शों को भूलता जा रहा है, पर यह हमारा परम सौभाग्य था कि श्री हरियाणा केसरी अमर मुनि जी महाराज ने हमारे लिए नवीन मार्ग प्रशस्त किया। हम मे से अनेक युवको ने मास, मदिरा, सिग्रेट, बीडी जुआ आदि व्यसनो से दूर रहने की दृढ प्रतिज्ञा की, उन्होंने हमारी आस्था को उस बिन्दु पर पहुचा दिया है कि हम निश्चय पूर्वक यह घोषणा कर सकते हैं कि हम आजीवन उपर्युक्त प्रतिज्ञाओ का पालन कर सकेंगे।

अनेक युवको ने जो कि दिन-रात फैशन मे लिप्त थे इस चातुर्मास के दीर्घकाल मे सामायिक की ओर धर्म आराधना की ओर अपनी प्रवृति को सुदृढ़ किया। हम महाराज श्री से करबद्ध प्रार्थना करते है कि वे हम को भूल न जाये और समय समय पर हमारा मार्ग-दर्शन करते रहे। 



आत्म-शुद्धि का पथ दिखाया......

श्री नरेशचन्द जैन

मत्री, श्री वर्धमान सेवक संघ,

सदर बाजार दिल्ली

इस मनुष्य लोक मे धर्म की आराधना के लिए ही हम मनुष्य हुए है। अत सद्ज्ञान प्राप्त कर धर्म आराधना करनी चाहिए।

नवयुग सुधारक जैन विभूषण भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी महाराज एवम् प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज ने धर्म आराधना का पथ सदर बाजार निवासियो को दिखा कर जो अपार कृपा की है वह भविष्य मे सदा सदा के लिए याद रहेगी। महाराज श्री जी के प्रवचनो से श्रावक एव श्राविकाओ की अन्तर आत्मा शुद्धि के मार्ग पर लगी। पूज्य महाराज जी की प्रेरणा से सदर बाजार मे तपस्या, दान, सेवा आदि कार्यो की उत्साह पूर्ण प्रवृत्तिया चली। स त समागम की एक अमिट छाप हम सबके हृदयो पर सदा सदा के लिए जमी रहेगी।

धर्म मे आस्था दिखाई पूज्य श्री गुरुदेव ने।
राह मुक्ति की बताई सबको सद्गुरुदेव ने ॥





गुरु हमारे मार्ग-दर्शक

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन

(व्यवस्थापक, वर्तन भण्डार)

श्री वर्धमान सेवक सघ

सदर बाजार दिल्ली

सदर बाजार के नवयुवको मे एक जागृति आई कि इस बार गुरु दर्शन के लिए एक बस का आयोजन किया जाए। इस आयोजन मे प्रथम चरण मे सदर के नवयुवक जोकि धर्म से बहुत दूर थे, पथ मे भटके हुए थे, जिनको पिछले १५ वर्षो मे किसी ने इस सच्चे रास्ते की ओर आने की प्रेरणा ही नही दी थी को एक ऐसे सत के मुखारबिन्द से धर्मवाणी सुनने को मिली कि झूम उठे। हर युवक की एक ही आवाज थी कि हमारे सत समाज मे ऐसे भी जौहरी है जो ज्ञान रूपी मोती ऐसे बिखेरते है कि उनकी चमक से हस रूपी मानव अपने आप खीचे चले आते है। मोतियो की चमक और जौहरी का तेज देखकर वह युवक झूम उठे। और वही बैठे धारणा की कि क्यो नही यह सत रुपी जौहरी सदर बाजार की भूमि को ज्ञान के मोतियो म चमका दे और वहाँ के नवयुवको मे एक धर्म चेतना पैदा कर दे। उसके पश्चात् एक ही रट, एक ही ध्यान कि किस प्रकार यह ज्ञान की गगा सदर बाजार मे बह सकती है। युवको ने ठान लिया कि यह गगा जरूर बहेगी और हम सब इससे पवित्र होगे। आखिर वह दिन भी आ गया। जब चातुर्मास हेतु महाराज श्री का पधारना हुआ। मुनि जी के मुखारविन्द से जैसे-जैसे ज्ञान के शब्द निकल रहे थे वैसे-वैसे लोग कह रहे थे जैसा सुना था उससे भी अधिक पाया। फिर क्या था जिसने सुना वही उमड पडा। पता नही चला कि कैसे इस ज्ञान की गगा मे गोते लगाते चार मास बीत गए, आखिर वह दिन आ गया कि गुरु जी को सदर बाजार से विहार करना है। ऐसे महसूस हुआ जैसे बहुत बडा धक्का लगा हो, जैसे किसी ने सहारा छीन लिया हो लेकिन गुरु की वाणी ने सम्भाला और कहा



यह चातुर्मास सदा याद रहेगा

श्री जसवन्तसिंह जैन

सचालक श्री वर्द्धमान सेवक सघ

सदर बाजार, दिल्ली ।

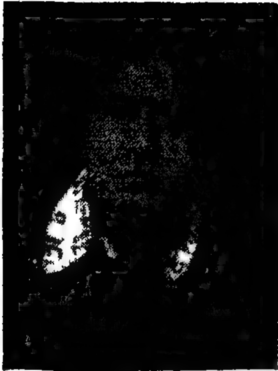
प्रात स्मरणीय गुरुदेव राष्ट्र सन्त, जैन विभूषण, नवयुग सुधारक, उप प्रवर्तक, भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज एव श्रुतवारिधि हरियाणा केसरी श्री अमरमुनि जी महाराज ठाणे सात के हमारे यहाँ चातुर्मास मे जो ओली तप हुआ वह प्रथम बार हुआ है । यह सब गुरु के ही प्रताप एव पावन प्रेरणा से सभव हुआ है । इस चातुर्मास मे जितनी अठाईयाँ हुई और जितने अमल प्रतिदिन हुए और लम्बी तपस्याए जैसे बहन रूपरानी जैन ने ५३ दिन व्रत किये और विशाल जनसमूह जो यहाँ इस बार आया ऐसा मैने पहले पहले कभी सदर क्षेत्र मे नही देखा था । वह सब पूज्य श्री अमरमुनि जी महाराज, महासती श्री पवनकुमारी जी महाराज एव श्री सुव्रत मुनिजी महाराज आदि महान सन्तो की कृपा से हुआ है । और हमारा सौभाग्य है कि तपस्वी भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज ने २६ साल के पश्चात सदर क्षेत्र मे अठाई की, तथा इसके साथ तपस्वी श्रीचन्द जी महाराज ने भी नौ दिन का व्रत किया । श्री वर्धमान सेवक सघ के सदस्यो को भी महाराज श्री की कृपा से इस चातुर्मास मे भाइयो की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ ।

मैं गुरुदेव के चरणो मे प्राथना करता हू कि वे सदर क्षेत्र पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रक्खे और भविष्य मे भी इस क्षेत्र को फरसने का कष्ट करगे ।

सत्य-शील के मार्ग पर बढ़ते रहिए नित्य ।

सदाचार की साधना 'अमर' सदा है स्तुत्य ।।

—अमरमुनि



निर्मल व्यक्तित्व के धनी

श्री सुभाष चंद जैन

कोषाध्यक्ष--श्री वर्धमान जैन शिक्षा समिति,

सदर बाजार दिल्ली

४ जुलाई १९८४ को सदर बाजार के इतिहास मे एक नवीन दिवस का सूर्य उदय हुआ जब श्री श्री १००८ नवयुग सुधारक, जैन विभूषण भण्डारी श्री पद्मचन्द जी महाराज व्याख्यान वाचस्पति श्री अमरमुनि जी महाराज ठाने सात एव साध्वीरत्न श्री पवनकुमारी जी म० ठाने ५ का पदार्पण हुआ। जनता के हृदय असीम हर्ष से भर उठे। अज्ञानी हृदयो मे नव आशा का सन्चार हुआ। सदर बाजार के धर्म पट पर यह चातुर्मास सदा अपना ऐतिहासिक स्थान बनाये रखेगा।

श्री अमर मुनि जी महाराज का व्यक्तित्व बडा ही निर्मल है। आप ज्ञान के भण्डार है। आपका ज्ञान भण्डार न केवल जैन दशन एव साहित्य से परिपूर्ण है बल्कि उसमे सभी धर्मग्रन्थो का सन्मिश्रण है। आप भारतीय सस्कृति के अनन्य भक्त है। आप उच्च कोटि के प्रचारक है। इस चातुर्मास मे आपने प्रतिदिन एक घन्टा सुबह जनता को भाषण द्वारा धर्म का मम समझाया, लोक व्यवहार की शिक्षा दी एव विचार क्रान्ति द्वारा उनके मनोमस्तिष्क को झकझोर डाला।

अधिक क्या कहूँ मेरी कलम आपके गुणो का वर्णन करने मे असमर्थ है। विचार सम्पन्न, आचार सम्पन्न, प्रतिज्ञा सम्पन्न एव व्यवहार सम्पन्न होने के साथ-साथ आप उदार भावना के धनी है। आपके उपदेश समाज के लिये आलोक स्तम्भ का कार्य करते रहेगे। ***

पृष्ठ ६२ का शेष—

कि उपदेश को केवल सुनो मत उसे जीवन मे भी उतारो। यदि एक बार जीवन मे उतार लिया फिर किसी के सहारे की आवश्यकता नही। गुरु की वाणी मे बहुत बडा सत्य छिपा था। फिर भी इन्सान तो इन्सान है इसे मार्गदर्शक की आवश्यकता है। हम अबोध, शासन देव से प्रार्थना करते है कि हमे मार्ग दर्शन ऐसे सतो का मिलता रहे और हम पथ से न भटके। *

बेमिसाल चातुर्मास

☐ श्री जे० डी० जैन
प्रधान, एस० एस० जैन सभा, मोतियाखान
दिल्ली

परम पूज्य गुरुदेव, नवयुग सुधारक, जैन विभूषण, उपप्रवर्तक श्रद्धेय श्री भण्डारी पदमचन्द जी महाराज एव उनके यशस्वी शिष्य प्रवचन भूषण हरियाणा केसरी श्री अमरमुनि जी महाराज का नाम तो बहुत सुना था परन्तु उनके पावन दर्शनो एव प्रवचनो का सौभाग्य प्राप्त हुआ कुरुक्षेत्र मे। वहाँ जो उनका प्रभाव देखा और उनकी ओजस्वी वाणी सुनी तो मेरा रोम-रोम प्रसन्न हो गया। तभी मन मे एक भाव जगा कि इनकी वाणी तो हमेशा ही सुनता रहूँ। भावना रग लाई और गुरुदेव दिल्ली पधार गए और यहाँ तो उनकी वाणी श्रवण का लाभ मिलता ही रहता है। वैसे तो गुरुदेव जहाँ भी पधारते है वही बहार की बहार होती है। परन्तु इस वर्ष सदर क्षेत्र मे जो धर्म प्रभावना आपश्री के चातुर्मास मे हुई है, अपने आप मे बेमिशाल है। और फिर जब साथ मे परम पूज्या गुरुणी महासती श्री पवनकुमारी जी हो तो कहना ही क्या, सोने मे सुगन्ध की तरह यह सुयोग था।

सचमुच यह बेमिसाल चातुर्मास रहा।

☐

सद्गुरु भडारी मिले, दया, कृपा भडार।
चरण-कमल जहाँ पर टिके, आये नई बहार॥

—सुव्रत मुनि, शास्त्री

आध्यात्मिक प्रसाद



श्री जनेश्वर जैन

प्रधान, महावीर जैन युवक सघ

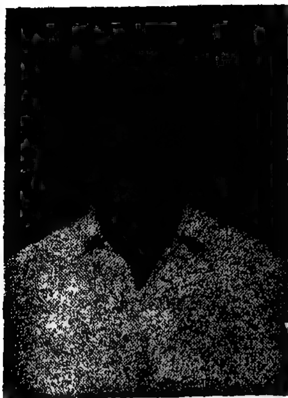
सदर बाजार, दिल्ली

पूज्य गुरुदेव नवयुग सुधारक जैन विभूषण उप प्रवर्तक भण्डारी श्री पदम चन्द्र जी महाराज एवम् उनके यशस्वी शिष्य परम श्रद्धेय हरियाणा केसरी श्री अमर मुनि जी महाराज एवम् महासती साध्वीरत्न श्री पवनकुमारी जी महाराज का सदर क्षेत्र मे चातुर्मास की उपलब्धियो पर सदर श्री सघ एक स्मारिका प्रकाशित करने जा रहा है यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

वास्तव मे सदर सघ का यह परम सौभाग्य है कि उन्हे ऐसे महापुरुषो के चातुर्मास कराने का सुअवसर मिला। इस चातुर्मास मे जन जन मे जो धर्म के प्रति लग्न तथा तपस्या का ठाट लगा वह हमे पहले कभी देखने को नही मिला। अक्सर देखने मे आया है कि पर्युषण पर्व तक ही लोग प्रवचन सुनने के लिए स्थानक मे जाते है लेकिन इस चातुर्मास मे कोई ही दिन ऐसा आया होगा जिस दिन प्रवचन न सुना गया होगा। यह सब महाराज श्री के प्रवचन का अद्‌भुत आकर्षण है। जिससे श्रोतागण स्वय खिचे चले आते है। ठीक समय पर प्रवचन प्रारम्भ करना और ठीक समय पर समाप्त कर देना भी महाराज श्री के प्रवचन का विशेष आकर्षण है।

हम महाराज श्री के उत्तरोत्तर अधिकाधिक आध्यात्मिक विकासोन्मुख सयम प्रवण जीवन की सत्कामना करते है वे अपनी अध्यात्मिक सम्पदा से स्वय तो अनुप्राणित हो ही, जन-जन को भी वह महान आध्यात्मिक प्रसाद वितीर्ण करते रहे हमारी यह मगल कामना है।

प्रधान तथा सदस्यगण
—श्री महावीर जैन युवक सघ
बस्ती हरफूल सिंह
सदर बाजार देहली



महत्वपूर्ण चातुर्मास

—रामरूप जैन

भू० पू० प्रधान, जैन संघ

सदर बाजार, दिल्ली

हमारे असीम पुण्योदय से इस वर्ष हमारे क्षेत्र सदर बाजार मे नवयुग सुधारक, राष्ट्र सन्त, उपप्रवर्तक भण्डारी श्री पदम चन्द जी म० व उनके यशस्वी शिष्य हरियाणा केसरी, श्रुत वारिधि श्री अमर मुनि जी म० उदीयमान सन्त श्री सुव्रत मुनि शास्त्री एम० ए० आदि ठाणे ७ एव महासती साध्वी रत्न श्री पवनकुमारी जी ठाणे ५ का चातुर्मास सानद सम्पन्न हुआ ।

इस चातुर्मास मे जो आनन्द प्राप्त हुआ सदा स्मरणीय बना रहेगा । इस चातुर्मास मे बहुत लम्बी लम्बी तपस्याएँ हुई । बहन रूपरानीजी ने ५३ व्रतो की लम्बी (गर्म पानी के आधार पर) तपस्या कर श्राविका समाज मे एक कीर्तिमान बनाया पूज्यपाद भण्डारी जी म० ने अठाई एव श्री सुयोग्य मुनि जी ने ६ व्रत किए । साध्वी अर्चना ने २१ व्रत किए । इस प्रेरणा से १५० के लगभग अठाइयाँ हुई जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । अनेक भव्य धार्मिक आयोजन हुए है आत्म-शुक्ल-जयन्ति के शुभ मौके पर बहुत सुन्दर आयोजन हुआ जिसमें दिल्ली के सभी प्रमुख साधु-साध्वी सम्मिलित हुए । इस अवसर पर ३५०० आयबिल हुए जो एक रिकार्ड है ।

दर्शनार्थियो की भीड लगी रही । श्री संघ के उत्साही कार्यकर्ताओ ने उत्साह से सब कार्य सम्पन्न किए । इस सबका श्रेय बहुत कुछ श्री अमरमुनि जी की अमर वाणी को जाता हैं जिन्होने अपनी मनोहर वाणी मे लोगो को धर्म का अमृतपान कराया । साध्वी पवनकुमारी जी म० ने महिलासघ मे विशेष जागृति पैदा की । श्री सुव्रत मुनि जी शास्त्री ने भी नन्दी सूत्र की व्याख्या बहुत सुन्दर ढग से की जिससे उनकी योग्यता, अध्यनशीलता का दिग्दर्शन होता था । छोटे सन्त भी अपने विनम्र विवेक से जनमानस को प्रभावित करते रहे । इस प्रकार यह चातुर्मास हर दृष्टि से एक स्मरणीय चातुर्मास माना जाएगा । मैं कार्यकर्ताओ को बधाई देता हूँ तथा गुरु चरणो मे निवेदन करता हूँ कि आप फिर हमारे यहाँ पधार कर हमारा मार्गदर्शन करते रहे । मैं महाराज श्री जी के चरणों मे उनके सयम और स्वास्थ्य के लिए शुभ कामनायें करता हूँ । □



वर्द्धमान जैन शिक्षा समिति

सदर बाजार दिल्ली

—श्री रामचन्द्र जैन (मंत्री)

एक दिन था जब भारत पराधीनता की श्रृंखलाओं मे आबद्ध था। अंग्रेज शासक थे और भारतवासी शासित। लार्ड मैकाले की राय मे भारतीयो के सिर पर एक ऐसी शिक्षा पद्धति लादी गई जिसका जन्म यहाँ से सात समुद्र पार एक नितान्त विपरीत वातावरण मे, मिलो की चिमनियो से उठते हुए विषाक्त वातावरण मे हुआ था। इस शिक्षा का उद्देश्य भारतीय संस्कृति का समूलोच्छेदन करना था तथा कम वेतन पर काम करने वाले क्लर्कों को पैदा करना था जो उनके इशारो पर शासन की बागडोर सम्भाल सकें। भारतीय संस्कृति के नष्ट करने के कुचक्र को उस समय के समाज सुधारको ने समझा और धार्मिक विद्यालयो की स्थापना की जहाँ छात्रो को भारतीय संस्कृति के ज्ञान के साथ-साथ मानवता के गुण दया, अहिंसा, परोपकार सत्य आदि को जीवन मे आचरित करने की शिक्षा दी जाती थी।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद भारत एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य बना। जनता मे भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार, राष्ट्रीय सम्पत्ति की क्षति, हडताल, रिश्वतखोरी आदि की प्रवृत्ति दिनोदिन बढती गई। प्रवृत्तियो के परिणामस्वरूप राजनैतिक नेताओ तथा धर्माचार्यो ने नैतिक प्रशिक्षण की महत्ता को समझा और इस प्रशिक्षण की योजना को कार्यान्वित करने के लिए संस्था की स्थापना की। इसी योजना के अन्तर्गत जैनागम रत्नाकर, जैन धर्मदिवाकर, चारित्रचूडामणि, मुनिकुलकिरीट, महामहिम, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर **आचार्य सम्राट श्री १००८ श्री आनन्द ऋषि जी महाराज** की प्रेरणा से **"वर्द्धमान जैन शिक्षा समिति"** की स्थापना की गई थी। तब से यह संस्था दिल्ली मे नैतिक शिक्षा के कार्य को सुचारू रूपेण सम्पन्न कर रही है।

इस संस्था के अन्तर्गत निम्नलिखित योजनाएँ वर्तमान समय मे चल रही हैं -

नैतिक प्रशिक्षण—दिल्ली मे सैंकडो विद्यालय हैं। सभी को अपना कार्यक्षेत्र बना पाना सस्था के लिए असम्भव हैं। अत इस समय इसका कार्यक्षेत्र है—"**जैन समनोपासक उच्चतम माध्यमिक विद्यालय सदर बाजार दिल्ली।**" यह सस्था दिल्ली के अग्रणी विद्यालयों मे अपना प्रमुख स्थान रखती है। इसमे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख ईसाई और जैन आदि सभी धर्मों के छात्र शिक्षा ग्रहण करते है। अत छात्रो मे मानवोचित गुणो का विकास करने के लिए कथाओ के माध्यम से नैतिक प्रशिक्षण दिया जाता हैं। नीतिकारो ने कहा भी है कि उपदेश से उदाहरण उत्तम है। कथाओ का माध्यम होने के कारण छात्र ध्यान से रुचि से, और चाव से इसमे भाग लेते हैं। इसके लिए एक अनुभवी, योग्य शिक्षक की सेवाएँ उपलब्ध हैं।

भाषणमाला योजना—समय-समय पर इस समिति द्वारा साधु मुनियो के तथा विद्वानो के भाशण उन्ही विषयो पर जिन्हे सभी धर्म मानते हैं, कराए जाते हैं। इसी योजना के अन्तर्गत राष्ट्रसन्त, नवयुग सुधारक, बालब्रह्मचारी, भण्डारी श्री पद्मचन्द जी महाराज के सुशिष्य हरियाणा केसरी वाणीविभूषण श्री अमर मुनि जी एव साध्वी-रत्न श्री पवन कुमारी जी के सारगर्भित प्रवचन कराए गए। जिनका छात्रो पर पर्याप्त प्रभाव पडा।

वाद-विवाद प्रतियोगिता—इस सस्था के तत्त्वावधान मे दिल्ली के उच्चतम माध्यमिक विद्यालयो की प्रतियोगिता प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है। इस प्रति-योगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त कर्त्ता को 'चल वैजयन्ती' प्रदान की जाती है। द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त कर्त्ताओ को भी पुरस्कृत किया जाता है। वाद-विवाद प्रति-योगिता मे भाग लेने वाले सभी सदस्यों एव विद्यालय-अध्यापको के लिए भी अल्पा-हार की व्यवस्था की जाती है। गत वर्ष की प्रतियोगिता का विषय था—"सादा जीवन और उच्च विचार।" शीघ्र ही नवम्बर या दिसम्बर मास मे इस वर्ष भी यह प्रतियोगिता सफल होने जा रही है।

परिपत्र योजना—बालको मे अच्छे विचारो का समावेश कहाँ तक हुआ है? इस बात को जानने के लिए समिति प्रतिवर्ष अभिभावको की सेवा मे एक परिपत्र भेजती है। जिस पर उत्तर लिखकर अभिभावको को उसे लौटाना होता है। उन उत्तरो के विश्लेषण के बाद समिति इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि उसके प्रशिक्षण का प्रभाव कहाँ तक छात्रो के जीवन पर पडा है?

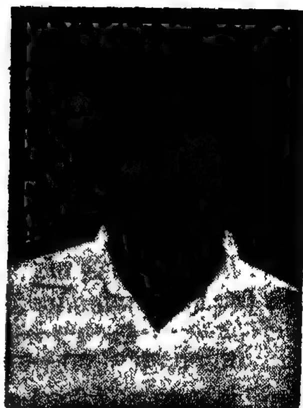
समिति की यह विचारधारा रही है कि यदि एक बालक बिगडता है तो एक परिवार बिगडता है। एक परिवार बिगडता है तो एक समाज बिगडता है और फिर एक राष्ट्र बिगडता है। अत बच्चो के जीवन को सुसस्कारित बनाना ही इस समिति का लक्ष्य है और इसी के लिए यह सतत प्रयत्नशील रहेगी। (७० पर देखें)

नया उद्बोधन मिला

—सुरेशचन्द जैन, सुपुत्र श्री लक्मीचन्द जैन

(पटौद)

सदर, तेलीवाडा ।



जैन कुल मे जन्म लेकर भी कई वर्षों से सन्तो से सम्पर्क टूटा हुआ था। परन्तु इस वर्ष जब सुना कि सदर क्षेत्र मे परम पूज्य गुरुदेव जैन विभूषण, उपप्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज एव उनके तेजस्वी शिष्य प्रात स्मरणीय गुरुदेव हरियाणा केसरी, श्रुतवारिधि, श्री अमरमुनि जी महाराज ठाणे सात का चातुर्मास है तो मन मे एक उमग सी उठी और मैं गुरुदेव के पधारते ही सपरिवार उनके चरणो मे आया और यहाँ इतना आनन्द मिला कि कहते नही बनता। गुरुदेव की अमर वाणी एव श्री सुव्रतमुनि जी की प्रेरणा से धर्म भावना प्रबल होती गई। प्रति दिन सामायिक शुरू हो गई। हम दोनो की, और मेरी धर्मपत्नी श्रीमति प्रेम जैन तो और भी आगे बढी। उसने पर्युषणा पर्व मे जीवन मे पहली बार अठाई तप की आराधना की। यह सब गुरुदेव की अपार कृपा ही है जो उन्होने हमारे जीवन मे धर्म की भावना एव श्रद्धा दृढ की है। हमारा समस्त परिवार पूज्य गुरुदेव जी का बहुत-बहुत आभारी है। परम पूज्य महासती पवनकुमारी जी म० की भी हमारे परिवार पर बडी कृपा रही है।

पेज ६९ का शेष

समिति के सभी सदस्य कर्मठ हैं, कर्त्तव्यशील हैं तथा एक टीम की भावना से कार्य कर रहे हैं। इस पर हमेशा धर्माचार्यों का वरदहस्त रहा है और ये हमारी समिति के प्रेरणास्रोत हैं। इनके निर्देशन मे हम अपने ध्येय मे अवश्यमेव सफल होंगे, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। इस समय इस समिति के प्रधान है श्री लोकनाथ जी जैन (प्रोप्राइटर, नौलखा साबुन दिल्ली) तथा मत्री हैं श्री रामचन्द्र जैन।

इन महानुभावो से पूर्व जो भी इस सस्था के पदाधिकारी रहे हैं, उन्ही से दिशा निर्देश पाकर हम अपने ध्येय को—लक्ष्य को पाने मे सफलता प्राप्त कर सके हैं अतः मैं उन सबका भी कोटिशः हार्दिक साधुवाद करता हूँ। ●



दिल्ली के सदर बाजार में एक अविस्मरणीय चातुर्मास

□ श्रीमती विमला जैन

प्रधान, जैन महिला संघ

सदर बाजार, दिल्ली।

नवयुग सुधारक उपप्रवर्तक श्री पद्मचन्द्र जी म० तथा हरियाणा केसरी व्याख्यान वाचस्पति श्री अमर मुनि जी का अपनी शिष्य मण्डली के साथ १९८४ का दिल्ली सदर बाजार मे चातुर्मास एक अविस्मरणीय चातुर्मास रहा। कई वर्षों के उपरान्त हमने सदर बाजार मे इतनी रौनक, इतनी भारी निर्लेप तथा सात्विक तप की आराधना होते देखी, वह भूरी भूरी प्रशसनीय थी। पूरे चातुर्मास स्थानक का ठसाठस भरे रहना, निरन्तर तपस्या जैसे ओली तप, दिवाली तेले तथा आयबिलो की लगातार आराधना पहली बार देखने का लाभ हुआ। यह सब श्री भण्डारी जी महाराज साहब का प्रभाव ही तो था जो वृद्धावस्था होते हुए भी अपने साधु साध्वियो तथा श्रावक श्राविकाओ को तप की प्रेरणा देते हुए अग्रसर रहे।

महाराज श्री तपस्वी श्रीचन्द जी ने तो अपनी तपस्वी पदवी को सार्थक कर दिखाया है। हरियाणाकेसरी श्री अमर मुनि जी की व्याख्यान शैली, सरल भाषा, सुलझे विचार, समझाने का ढग तथा साथ-साथ चेतनता देने के लिए मनोरजक सराहनीय रहा जो एक बार व्याख्यान सुन लेता गद्गद् हुए बिना नही रह सकता था।

महाराज श्री सुव्रत मुनि शास्त्री जी ने पूरी योग्यता के साथ नन्दी सूत्र की वाचना सुनाई। सूत्र की वाचना सुनाने मे उनकी शिक्षा, उनकी पढाई की योग्यता टपकती थी। प्रभावना के नाम पर जो समाज मे लालच, झूठ, छोटे बडे का भेदभाव ऐसे और भी कई अवगुण प्रवेश कर गये थे, जिससे हमारा युवावर्ग दुःखी था। समय के अनुसार युवावर्ग की धर्म के प्रति उदासीनता गलत विचारधाराओ को रोकने के लिए बहुत आवश्यक था जो कि महाराज जी तथा साध्वी पवनकुमारी जी के पूर्ण सहयोग से हम उसे थोडा रोक पाये जिसके लिए सदर समाज महाराज श्री तथा साध्वी श्री पवन कुमारी जी का बहुत बहुत आभारी रहेगा। □



यह कृपा बनी रहे....

श्रीमती बनारसीदेवी जैन

धर्मपत्नी, श्री विमलकुमार जैन

(अशोक बटन स्टोर)

नवयुग सुधारक, जैन विभूषण राष्ट्रसन्त उपप्रवर्तक भडारी श्री पदमचन्द जी म० एवम् श्री हरियाणा केसरी श्री अमरमुनि जी महाराज के चरणो मे जब व्रतो मे एक आयम्बिलो की लम्बी-लम्बी तपस्याए होने लगी तो मेरे मन मे भी अभिलाषा हुई कि मै भी तपस्वियो मे शामिल होऊँ। इसीलिये मैंने गुरु कृपा से ५३ इकासने व्रत किये। यह सब पूज्य गुरुजी महाराज की असीम अनुकम्पा का फल है। मेरी गुरु चरणो मे यह प्रार्थना है कि उनकी कृपा दृष्टि हम पर सदैव बनी रहे। 卐

हम ऋणी है गुरुदेव के

इस वर्ष हमारे यहाँ परम पूज्य श्री गुरुदेव जैनविभूषण नवयुग सुधारक, उपप्रवर्तक, राष्ट्रसत, भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी महाराज उनके यशस्वी शिष्य हरियाणा केसरी, श्रुतवारिधि, प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज आदि ठाणा ७ का जो चातुर्मास हुआ इससे जो धर्म जागृति सदर जैन समाज एव आस पास के क्षेत्रो मे हुई वह सदा स्मरणीय बनी रहेगी। समय-समय पर जप, तप एव धर्मोपदेश आदि के जो अनेक विशाल आयोजन यहाँ पर हुए उनसे जैन धर्म की महान प्रभावना हुई है, यह सब गुरूदेव श्री की कृपा का प्रसाद है जो सदर श्री सघ को प्राप्त हुआ है। पूज्य गुरुदेव की हमारे परिवार पर बडी कृपा रही है, इसके लिए हम सब पूज्य गुरुदेव के ऋणी है और गुरुदेव के श्री चरणो मे प्रार्थना करते है कि अपनी कृपा दृष्टि इसी प्रकार हम पर बनाए रखे।

—**सतोष जैन**, धर्मपत्नि, स्व० श्री कर्मचन्द जैन
एव समस्त परिवार (सदर बाजार तेलीवाडा, दिल्ली ६)।

श्री जैन सहायता सभा का सूक्ष्म परिचय

इस सभा का जन्म श्री रामरक्खामल जी श्री बोधे शाह जी श्री कुंजलाल जी एवँ अन्य सज्जनो द्वारा सन् १९५० मे इसी उपाश्रय भवन मे हुआ। इसका उद्देश्य अपनी समाज के असहाय भाई बहिनो की आर्थिक मदद करना रहा। सभा मे उपस्थित महानुभावो ने इस कार्य को चलाने हेतु धन की राशी भी लिखाई और इसकी कार्यकारिणी भी गठित कर दी और कार्य भी शुरू कर दिया। अब वर्तमान में इसका कार्य श्री धर्मचन्द्र जी जैन की प्रधानता मे चल रहा है। इसके सहयोग से कार्यकारिणी के सभी सदस्य तन मन धन से कार्य कर रहे है। मैं समाज के सभी दानी महानुभावो मे आशा ही नही पूर्ण विश्वास रखता हू कि सभा को अपना सहयोग सदैव देते रहेगे।

धन्यवाद।

सेवक
मित्रसैन जैन
मत्री
श्री जैन सहायता सभा
४५३०/१३ उपाश्रय भवन
पहाडी धीरज सदर बाजार, दिल्ली

दीजै सदा सहायता धर्म कार्य मे आप।
पुण्य फलेगा सौ गुना, और घटेगा पाप।

—**अमर मुनि**

श्रद्धा-पुष्पांजलि

वन्दन है शत शत बार, करो स्वीकार, सदा जय पावे,
हम अभिनन्दन दिवस मनावे ॥। टेक,

(१) पूज्यराज पदमचन्द भडारी,
विनयवान, सर्वगुण धारी,
नित रहे आनन्द, सदा यश पावे
हम अभिनन्दन दिवस मनावे

(२) लघु वय मे सयम ग्रहण किया,
आरम्भ परिग्रह मोह, त्याग दिया
जय तप संयम की, महिमा आज सुनावे।
हम अभिनन्दन दिवस मनावे · ·

(३) विद्या विनय विवेक समन्वित, प्रवर, परम-धर्मवीरा
हे तपोनिधि-स्थविर विभूषित क्षमावत, सागरवर गम्भीरा
झुके देवगण "पद-पद्मो" मे राग-रागणिया गावे ॥।
हम अभिनन्दन दिवस मनावे

(४) पवित्रता का शीतल गङ्गा जल, है ब्रह्मचर्य मे बहता,
तीर्थपति का तीर्थ "अमर" भी है चरणो मे रहता
उनकी धर्मदेशना सुन, सब प्रफुल्लित हो जावे ॥।
हम अभिनन्दन दिवस मनावे ·

(५) हे नवयुग सुधारक उपप्रवर्तक जिनशासन के सजग प्रहरी
हम-आतम की सन्तान, स्वीकृत हो विधिवत् वदन मेरी
दिल्ली सदरबाजार, सदा सुख धाम,
जहा गोता रोज लगावे ॥।
हम अभिनन्दन दिवस मनावे

के सी ४२ ए चरण १ —डा जगदीशराय जैन
अशोकविहार दिल्ली-११००५२,

यह वर्ष यादगार वर्ष रहेगा

है समय नदी की धार कि जिसमे सब बह जाया करते हैं,
है समय बडा तूफान प्रबल पर्वत झुक जाया करते हैं,
अकसर दुनिया के लोग समय मे चक्कर खाया करते हैं,
लेकिन कुछ ऐसे होते हैं इतिहास बनाया करते हैं।"

प्रवचन भूषण हरियाणा केसरी श्री अमर मुनि जी महाराज द्वारा प्रवचन से पहले बोला जाने वाला यह दोहा अपने मे कितना महत्व रखता है। जिस प्रकार नदी की धारा हमेशा प्रवाहित रहती है ठीक उसी प्रकार समय भी गतिशील है और समय के साथ-साथ मनुष्य भी आवागमन के चक्र मे पडा रहता है। किसी का आना इस दुनिया मे सार्थक होता है तो किसी का निरर्थक। इतिहास उन्ही महापुरुषो पर लिखा जाता है जो स्वय मे महान होते है। जो अपने लिए नही दूसरो के लिए जीते हैं। और तप एव त्याग द्वारा दूसरो के हृदय मे अपनी अमिट छाप छोड जाते है। ऐसे ही महापुरुषो मे से हैं हमारे 'राष्ट्रसन्त उपप्रवर्तक भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज और इन्ही की छत्रछाया मे रहकर समाज को नई प्रेरणा देने वाले जन-मानस के मन से वैमनस्य व गलत धारणाओ को निकालने वाले प्रवचनभूषण हरियाणा केसरी श्री अमर मुनि जी महाराज।

१९८४ का यह वर्ष सदर क्षेत्र दिल्ली के लिए एक महान एव यादगार व र्ष के रूप मे याद किया जायगा। कई चौमासे देखने को मिले परन्तु इस दर्ष के चौमासे मे लोगो के मन मे धार्मिक लगन व प्रवचन सुनने की ललक जो देखने को मिली वो पहले नही देखी। बडे बुजुर्गों के मुख से भी यह सुनने को मिला है कि ऐसी रौनक हमने पहले कभी नही देखी, यह बिलकुल सही है। समय तो गतिमान है और इसके साथ ही आना जाना भी लगा रहता है, चौमासा व्यतीत होने पर महाराज श्री अन्यत्र बिहार कर जायेंगे, महापुरुषो के चाहने वाले व इनसे लाभ उठाने वाले आगे ही आगे मिलते रहेगे परन्तु हमारे हृदयो मे जो गहरी छाप इनके आगमन से व इनके प्रवचनो से बैठ गई है वो हमेशा कायम रहेगी।

हम महाराज जी पद्म चन्द जी श्री अमर मुनि जी, श्री श्रीचन्दजी, श्री सुव्रत मुनि जी व साध्वीरत्न श्रुतवाचनी श्री पवनकुमारी जी महाराज के बहुत आभारी हैं। एव उनसे अनुरोध करते हैं कि आगे भी जब कभी भी उन्हे मौका मिले हम अज्ञानियो को धर्म बोध देने के लिए इस क्षेत्र मे अवश्य पधारें।

—श्रीमती सुदेश
(एव सपरिवार सदर बाजार बस्ती हरफूलसिंह)

श्री वीतरागाय नमः

भारतीय जैन मिलन के तत्त्वावधान मे नव युग सुधारक, जैन विभूषण, उपवप्रर्तक, जिन सस्कृति के उन्नायक सन्त, भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी महाराज की "**दीक्षा स्वर्ण जयन्ती**" समारोह १५-१०-८४ दिल्ली मे सादर समर्पित।

अभिनन्दन-पत्र

मगल मूर्तिमुनीश्वर !

भारत की राजधानी, दिल्ली धरा पर आपका पद विन्यास एव विचरण जन-जन के मन का उल्लास बन कर आया, यहाँ जनता मे नव चेतना आई, फलस्वरूप नूतन जीवन हमने पाया। जनता का मन चकोर भाव विभोर होकर नाच उठा। धर्ममय आवेश का यह निर्विशेष अशेष उल्लास आपके चरण-कमलो मे नतमस्तक होकर शत-शत वन्दन के साथ कोटि-कोटि अभिनन्दन कर रहा है। महामुने! हमारी अभिनन्दनाजलियाँ स्वीकार कीजिए।

नवयुग सुधारक अनगार मुने !

आप विचार क्रान्ति समन्वित आचार क्रान्ति के स्रष्टा मौनावलम्बी महान साधक हैं, आपकी वाणी मे ओज एव माधुर्य का वर विलक्षण समन्वय है, जो जन-जन के मन मे जैनत्व की ही नही अपितु धर्म की पावन प्रतिमा स्थापित कर देता है। जैन अजैन सब के हृदय आपके वचनामृत बिन्दुओ से ही जैनत्व का विशाल सागर प्राप्त कर लेते हैं। बच्चे सुधर जाते हैं, किन्तु व्यसनो और कामनाओ के अम्बर मे, वासनाओ के बवण्डर मे उडते युवको के हृदय को धर्म भवन मे स्थिर एव सुरक्षित करने के असाध्य कार्य तो आपकी वाणी ही साध्य कर सकती है, तभी तो जनता आपको "नवयुगसुधारक" विरुद से सम्मानित कर तृप्त होती है।

अनासक्त आराध्य गुरु !

आप एक सर्जनशील साधक है, आपकी पावन प्रेरणा से अनेक सस्थाओ की स्थापना हुई है। जिनमे पुस्तकालय, वाचनालय, सत्सगालय, विद्यालय आदि हैं। किन्तु आप उनकी ममता से दूर रहे हैं। उनको आपने समाज को सौपकर समाज पर महान उपकार किया है। समय-समय पर उनकी आर्थिक वृद्धि भी आपके मार्ग दर्शन मे होती रही है। समाज आपके अनेक उपकारो से ऋणी है। इसलिए आपको "**जैन विभूषण**" उपाधि से सम्मानित कर अपने को कृतार्थ किया है।

साधनाशील महामुने !

आपके सन्ततत्त्व ने आचार्य श्री आत्मारामजी म से आत्मज्ञान पाया, श्री गुरुदेव हेमचन्द्र जी म० से हिमशीतल स्वभाव पाया, और आपकी अमर साधना ने असार ससार के निरस्सार भोगो मे सन्तप्त प्राणियो को 'अमर' सुख प्रदान करने लिए ऐसा अमर दिया, जिसने कोटि-कोटि जनो को अमरत्व प्रदान किया है।

दान-शील उदार मुने !

आप 'यथा नाम तथा गुण' की उक्तिके अनुरूप है "पदमचन्द्र" पदम अपनी भीनी-भीनी सुगन्धि म मन को जैसे आल्हादित करता है, जैसे चन्द्र अपनी शीतल तथा सौम्य चान्दनी से मानव तन को शीतलता प्रदान करता है वैसे ही आपने भी अपने दया, करुणा एव सेवा आदि गुणो की सौरभ से वातावरण का सौरभमय किया तथा, अज्ञानान्धकार को दूर करने वाला सद्साहित्य भी आप उदारतापूर्वक पात्र की योग्यतानुसार देते रहते हो। उसी उदारता से जैनत्व का बहुत प्रचार हुआ। आपकी उदारता से समाज धन्य हो गया हैं। हमारी धन्यता आपका शत-शत वन्दन अभिनन्दन कर रही है।

समादरणीय तपस्विन् !

आप ने सयम स्वीकारते ही सेवा का कठिन तप शुरू किया जो १२ वष तक निरन्तर चलता रहा उसके पश्चात अनेक विध तपस्याएँ की। इस वृद्ध अवस्था मे भी आपने ८ दिन की तपस्या करके जहाँ समाज को प्रबल प्रेरणा दी वहाँ अपनी आत्मा को भी उच्च और पवित्र बनाया है। आप की इस बहुमुखी साधना से हमारे हृदय श्रद्धान्वित हो आपका अभिनन्दन कर परितुष्ट एव सन्तुष्ट हो रहे है।

आप अपनी गौरवमय प्रेरणाप्रद निर्मल साधना के ५० वर्ष पूर्ण कर ५१वे वर्ष मे प्रवेश कर रहे है इस "दीक्षा स्वर्ण जयन्ति" पर आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए हम गौरव अनुभव करते है। हमारे श्रद्धासिक्त हृदय पुन कोटि-कोटि अभिनन्दन कर रहे है।

भण्डारी गुणकारी बनकर आए ।
अमर साधना से अमृतकण बरसाए ॥
भारत भू पर पदार्पण यह हुआ भव्य अभिराम ।
जन-जन हुआ कृतार्थ आपको करता कोटि-कोटि प्रणाम ॥

हम है श्रद्धाभिसिक्त हृदय समस्त पदाधिकारी एव सदस्य
भारतीय जैन मिलन

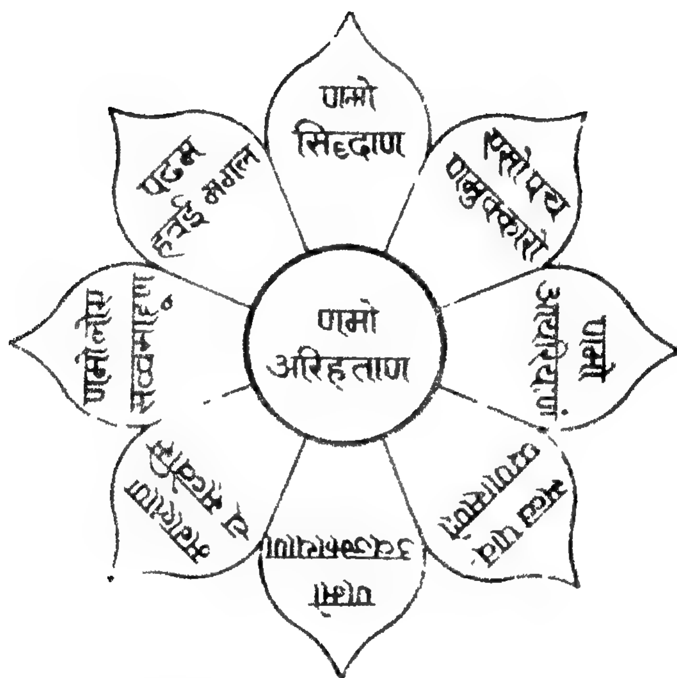
सरलता मे जो सुख-शान्ति है, मन की निर्मलता और निराकुलता है, वह अनुभव करके देखो—

—भंडारी श्री पदमचन्द जी महाराज



धर्म का मर्म सिर्फ इतना ही है कि तुम जहाँ भी हो, जो भी करो, पूरी सचाई और सरलता से करो। मन को मलिन मत रखो।

—आचार्य सम्राट श्री आनन्द ऋषि



अष्टदल कमल में नवपद



काली कलूटी कोयल दी, आवाज रसीली शोभा ए।
पतिव्रत दा पालन करना ए औरत दी सेवा ए।
बुरी शक्ल वाले दी शोभा, उच्ची विद्या ओहदी ए।
परम हंस साधु दी शोभा सहनशीलता ओहदी ए।

मनुष्य ग्रन्थ और पन्थ के चक्कर मे पड गया तो समझो भटक जायेगा। 'सन्तो' की वाणी ही उसे अधकार मे प्रकाश दिखा सकती है। क्योंकि उसमे आत्मा का अनुभव बोलता है।

—प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि

भगवान महावीर ने कहा है :—

- एक कपट हजार सत्य का नाश कर देती है।
- कपट और प्रमाद मनुष्य को जन्म-जन्म तक भटकाता है।

मन को कर देती मलिन, साथी मन की आट ।
काला करती अन्न को, ज्यों काती की छाट ।





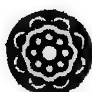
उपदेशक-गीत

उद्‌बोधक-प्रवचन

मन से बुरा न सोचिए, बुरा न बोलो बोल।
बुरा न सुनिए कान से, बुरी न आखें खोल॥

—अमर मुनि

श्रद्धेय सन्तजनो का अभिनन्दन







भजन संग्रह

(१) तर्ज—दिल के अरमां

व्यर्थ हर पल जिन्दगी का जा रहा।
सारा जीवन यूं ही बीता जा रहा ।। टेक ।।

(१) तुझको अमृत भी मिला, पर ना पिया।
विष को तू मदहोश पीता जा रहा ।। सारा जीवन

(२) तू रहा विषयो मे, सुख को खोजता।
कांटो से फूलो की खुशबू चाह रहा ।। सारा जीवन

(३) अपने दुःख से तू नही इतना दुःखी।
दूसरो का सुख ना देखा जा रहा ।। सारा जीवन

(४) औरो का दिल जीतेगा कैसे भला।
तुमसे अपना दिल न जीता जा रहा ।। सारा जीवन



(२) तर्ज—दिल के अरमा

मेरे मन! प्रभु नाम गगा मे नहा।
दुनिया की यादो मे आंसू न बहा ।। टेक ।।

(१) आत्मा मे ही बसे परमात्मा।
स्पष्ट जिनवाणी मे ऐसे ही कहा ।। दुनिया की

(२) आर्त्त रौद्र ध्यान दोनो त्याज्य है।
धर्म धारण कर सदा ही चह चहा ।। दुनिया की

(३) हो सफल परिणाम अन्तिम लक्ष्य मे।
कौन सा वो कष्ट जाए न सहा ।। दुनिया की

(४) 'अमर' शुद्ध भावो व सत्य-सूत्र से।
आत्मा पर आवरण कैसे रहा ।। दुनिया की

(३) तर्ज दिल के अरमां·· ··

जब तेरी डोली निकाली जाएगी।
बिन मुहुर्त्त के उठा ली जाएगी ।। टेक ।।

(१) जर सिकन्दर का यहाँ सब रह गया।
मरते दम लुकमान भी ये कह गया।
ये घडी हर्गिज न टाली जाएगी ।। बिन मुहुर्त्त

(२) ए मुसाफिर क्यो पसरता है यहाँ।
ये किराए पर मिला तुझको मकाँ।
कोठडी खाली करा ली जाएगी ।। बिन मुहुर्त्त

(३) किन गुलो पर हो रही बुलबुल निसार।
पीछे से माली खडा है होशियार।
मार कर गोली गिरा ली जाएगी ।। बिन मुहुर्त्त

(४) होवेगा परलोक मे तेरा हिसाब।
कैसे भुक्तोगे वहाँ पर तुम जनाब।
जब बही तेरी निकाली जाएगी ।। बिन मुहुर्त्त

(४) तर्ज - चलती छुड़ियाँ

नेकी के काम कर लो, बदी को छोड दो।
अपने इस मन का नाता, धर्म से जोड दो ।। टेक ।।

(१) दुनिया मे कितने पाप कमाए, तूने गाफिल होके।
न जाने कितने जीवो को मारा कातिल होके।
पाए न फल इनका आशाएँ छोड दो ।। अपने इस

(२) जीवन तेरा बने नगीना, गर तू धर्म को पाले।
करुणाशीलता, उनमे होवे, जो कोई मर्म को जाने।
भलाई के कार्यों मे तन मन जोड दो ।। अपने इस

(३) कर्म करे तू जिनके लिए, वो साथ तेरा नही देगे।
अन्त समय लाकर तुझको वो बीच भँवर पटकेगे।
रोएगा धुन-धुन, सुने ना पुकार को ।। अपने इस

(४) जीओ और जीने दो सबको, धार ये अपने मन मे।
जो भी इसको धारेगा मन मे, कीर्ति हो जन-जन मे।
'रमणीक' हिंसा से तुम नाता तोड दो ।। अपने इस

(५) प्रार्थना

महावीर जी, मेरे अन्दर अन्धेरा।
कर दो चानणा, मेरे अन्दर अन्धेरा ।। टेक ।।

(१) बाल अवस्था खेल गँवाई।
नाम लिया न तेरा, मेरे अन्दर अन्धेरा ।। महावीर…

(२) आई जवानी बडी मस्तानी।
विषयो ने पा लिया घेरा, मेरे अन्दर अन्धेरा ।। महावीर……

(३) आया बुढ़ापा ते रोग सताया।
दुखो ने पा लिया डेरा, मेरे अन्दर अन्धेरा ।। महावीर

(४) ज्ञान का मन मे दीप जलाओ।
नाम जपूं मैं तेरा, मेरे अन्दर अन्धेरा ।। महावीर



(६) तर्ज - मन डोले तेरा तन

धन माया, तेरी ये काया, सब झूठा है ससार रे।
क्यो फँस बैठा है बावरिया ।। टेक ।।

(१) महल अटारी, कोठी बगला, सुन्दर हाट हवेली।
नाशवान हैं सब रग रलिया, जानी जान अकेली।
मतवाले, प्रभु गुण गाले, कर गुरु चरणो से प्यार रे ।। क्यो फँस

(२) मात पिता और प्यारी नारी, सगी साथी भ्राता।
समय पडे पर इस जीवन मे, कोई काम न आता।
गुरु वाणी, सुन तू प्राणी, कुछ करके पर उपकार रे ।। क्यो फँस

(३) जब तक तन मे श्वास पखेरू, तब तक है सब आशा।
चार दिनो के लिए देख ले, जग का खेल तमाशा।
अनमोला, यह नर-चोला, मत विषयो मे तू हार रे ।। क्यो फँस

(४) निन्दा चुगली कर औरो की, क्यो सिर बोझा ढोता।
सत्सगति से 'अमृत' अपनी, क्यो नही कालिख धोता।
पी प्याले, सत्सग वाले, कर अपना आप सुधार रे ।। क्यो फँस

(७) तर्ज—जिन्दगी सफर ...

जिन्दगी इक सफर है, सुहाना, इसे तुमने बुरा न बनाना।
चाहो तुम यदि इसे चमकाना, तो पड़ेगा कुछ करके दिखाना।।
।। टेक ।।

(१) कीर्ति वही जो तेरे बाद रहेगी, दुनिया को कहानी तेरी याद रहेगी।
मिली चुन्नरी को दाग न लगाना।। इसे तुमने ...

(२) चले गये बाकी सब चले जायेंगे, चमके वही जो कुछ कर जायेंगे।
गीत उनके ही गाता है जमाना।। इसे तुमने

(३) डूबते हुए के सहारे बनोगे, ऊँचे आसमान मे सितारे बनोगे।
कहता है यह इतिहास पुराना।। इसे तुमने

(४) रखना कदम जरा सम्भाल के, रास्ते पे चलना है देख-भाल के।
ताकि पीछे न पड़े पछताना।। इसे तुमने

(५) 'सोमनाथ' इनमे पे अमल करोगे, कही भी मुसीबतो मे नही डरोगे।
चाहे हो मौत भी जो डराना।। इसे तुमने

(८) तर्ज—जरा सामने तो आओ छलिये

भाग्यशाली वही इन्सान है, प्रभु चरणो मे जिसका ध्यान है।
जिसे भूला हुआ है परमात्मा, वह आदमी नही हैवान है।।टेक।।

(१) नर तन पाकर करे प्रभु सिमरण, और जो पर उपकार करे।
अपना बेडा पार लगा कर, औरो का भी पार करे।
दुनिया में वह पुरुष महान है, भगवान उसी पे मेहरबान है।।
जिसे

(२) झूठ कपट छल पाप मे अपना, जीवन खराब किया।
उस नर से तो पशु ही अच्छा, मरकर भी परोपकार किया।
भले-बुरे की जिसे न पहचान है हो सकता उसे क्या फिर ज्ञान है।।
जिसे

(३) इक तो कोठी कार के मालिक, सैर करे वह कारो मे।
इक बेचारा पैसा पैसा माँगता, फिरे बाजारो में।
निर्धन है या धनवान है, आखिर जाना सभी को शमशान है।।
जिसे

(९) तर्ज—ओत से ओत

दान की महिमा गाते चलो, नेक कमाई कमाते चलो।
देने वाला ही पाता सदा, गीत यह सबको सुनाते चलो ॥ टेक ॥

(१) खुश किस्मती से दौलत पाई, दिल को बडा बनाना।
दीन-दुखी जो राह मे आए, उसका दुख मिटाना।
रोते हुए को हँसाते चलो ॥ नेक

(२) ना कुछ अपने साथ मे लाए, ना कुछ लेकर जाना।
खुद खाना औरो को खिलाना, माया का लुत्फ उठाना।
दान की गगा बहाते चलो ॥ नेक

(३) जोड जोड कर जो रख जाते, वो पीछे पछताते।
पाप की गठरी सिर ले जाते, माल जमाई खाते।
अपने मन को जगाते चलो ॥ नेक



(१०) तर्ज बहारो ! फूल बरसाओ

धर्म मे मस्त जो रहते, देव सेवा बजाते है।
अन्त मे ले परीक्षा को, स्वय सेवक बन जाते है ॥ टेक ॥

(१) देवावि त नमसति, जस्स धम्मे सया मणो।
स्वय सिद्धान्त का ऐसे, देव गुणगान गाते हैं ॥ धर्म

(२) दया है श्रेष्ठ धर्मो मे, तपस्या और सयम भी।
यही शास्त्रो की व्याख्या, शास्त्र सब ही सुनाते है ॥ धर्म

(३) निभाया धर्म सतियो ने, बनाया अग्नि का पानी।
बढाया चीर जिसने, विष को अमृत बनाते है ॥ धर्म

(४) धर्म की जो करे रक्षा, उसी की धर्म करता है।
करो रक्षा सदा ही यदि तुम, मुक्ति को चाहते है ॥ धर्म

(११) तर्ज—तेरे दर दा भिखारी.... ......

आया प्रभु जी तेरे दर दा भिखारी,
दर दा भिखारी तेरे गुणा दा पुजारी ।। टेक ।।

(१) जन्म जन्म दा जूना विच रुलया, खान पीन विच सब कुछ भुल्लेया ।
हत्थ नही मेरे कुछ आया, प्रभु जी तेरे दर दा ...

(२) सेवा सत्सग विच नही रचया, ना जप कीता ते ना तप तपया ।
एवें ही वक्त गँवाया, प्रभु जी तेरे .

(३) ज्ञान वैराग्य दी भिक्षा पा दो, जन्म मरण दे दुखडे मिटा दो ।
हुण विस्त चरणाच लाया, प्रभु जी तेरे



(१२) तर्ज – मेरा गीत अमर कर दो

अब मेहर करो गुरुवर, तेरा प्यार सतादा ए ।
तेरे प्यार दी छाया ते, मेरा तन-मन रहदा ए ।

(१) तेरी सुरत दी छाया, अँखां विच बसदी ए ।
बस तू ही नजर आवे, कोई और नही भावे ।
तेरे विच मे घुल्या तेरा प्यार

(२) सारा जीवन गुरुवर, तेरे नाल बिताना ए ।
तेरे चरणो मे रहकर, जीवन चमकाना ए ।
मेरी इस जिन्दगी दा इक तू ही सहारा ए

(३) तू ज्ञानी ध्यानी ए, तेरी मिट्ठी वाणी ए ।
वाणी विच जादू ए, दुनिया नू तारदी ए ।
तेरी मस्त फकीरी नू सारी दुनिया कहदी ए

(४) कर्मों का सताया हूँ तेरे द्वार पे आया हूँ ।
ए उदासियाँ अक्खीया ने दर्शन दा प्यासा हूँ ।
सुयोग्य मुनि तेरे द्वारे पे आया ए

अब मेहर करो गुरुवर तेरा प्यार सतादा ए ।
तेरे प्यार दी छाया ते, मेरा तन मन रहदा ए ।

(१३) तर्ज—तूने मुझे बुलाया ....

वीर प्रभु गुण गा लो, कर्मा वाले यो ।
सोया भाग जगा लो, कर्मा वाले यो ।

(१) मुश्किल से है, नर तन पाया ।
लाख चौरासी, भटक के आया ।
वक्त मिला है तुझको सुनहरी ।
जीवन सफल बनालो कर्मा

(२) कौन है राजा, कौन भिखारी ।
तज दे ममता, बन न दिवाना ।
नेक कर्म हो, सुख का दाता ।
नेकी दीप जला लो कर्मा

(३) सदर बाजार मे गुरुवर आये ।
सबके सोये भाग जगाये ।
अमर मुनि है ज्ञान खजाने—
सारे लाभ उठालो कर्मा वाले यो ।
वीर प्रभु गुण गा लो, कर्मा

(१४) धनवान गए

धनवान गए, बलवान गए, गुणवान गए मस्ताने,
चार दिन की जिन्दगी है भूल जा दीवाने ।।

मुख से तू बोल मीठा प्रभु का नाम लेले ।
काम भलाई के कर, हाथो से दान देले ।
कभी कडवा चुभता कह ना कभी ना देना ताने । चार दिन

टूटेंगे नाते तेरे बिछुडेगी तेरी जोडी ।
छूटेगी जोडी पूँजी साथ ना जाए कौडी ।।
मौत के आगे सब ही हारे चलते नही बहाने । चार दिन

दुनिया का अन्धा मन बन मानले सन्तो का कहना ।
आखिर तो चलना होगा सदा यहाँ नही रहना ।।
'केवल' मुनि कहे तेरे भले की माने या ना माने ।। चार दिन

चुने हुए भक्ति गीत

(संयोजक—श्री सुरेशचन्द जैन, श्री कमलेशकुमार एवं श्री वीरेन्द्रकुमार जैन)

(१५) महावीर वन्दना

तर्ज—दिल के अरमां

वन्दना प्रभु वीर मेरी वन्दना।
श्रद्धायुत चरणों में हो अभिवन्दना ।।ध्रुव।।
चन्द्र कुण्डलपुर के, सूर्य धर्म के,
त्रिशला सिद्धार्थ के उज्ज्वल नन्दना। वन्दना
मिथ्यातम कर दूर सम्यक् पथ दिया,
स्वयं द्वारा दूर हो भव स्पन्दना ।।२।। वन्दना
ठोकरें खाईं बिकी बाजार में,
शुद्ध परिणामों से तर गई चन्दना ।।३।। वन्दना
दिव्य दृष्टि पाई गौतम ने यथा,
अमर पद की पाऊँ मैं भी ज्योत्स्ना ।।४।। वन्दना

(१६) गुरु महिमा

तर्ज तेरे चेहरे से

दस्सो होर केड़े द्वार ते मैं जावां, गुरुजी तेरा द्वार छडके।
इस दुनिया नु कि वे अपनावां, गुरुजी तेरा द्वार छडके-२ ।।ध्रुव।।

सुख विच साथी साथ निभादे ने,
दु:ख विच अपने वी कन्नी कतरादे ने।
छड्डु अनेरे विच साथ परछावां, गुरुजी तेरा
तीर्थ मन्दिर दिस्सन बहुतेरे।
सुख मिलदा ए पर चरणा च तेरे।।
दु:खां वालियां बाकी सब थावां, गुरुजी तेरा
सब दा पिता तू सब दी है माता,
जगत सवाली ए पर तू एक दाता।
तेरे प्यार दीयां ठण्डियां ने छावां, गुरुजी तेरा
मिल जावे इक आसरा तेरा,
जन्म सफल हो जावे मेरा।
पिच्छो फेर ना कदे वी पछतावां, गुरुजी तेरा

१७ जब दया दिल में ...

तर्ज—दिल के अरमा

जब दया दिल मे बसा ली जाएगी,
तब तेरे घर मे खुशहाली आएगी। जब दया
शरीर हो सुन्दर तेरा निरोग भी,
आयु भी लम्बी तुझे मिल जाएगी। जब दया
दु ख हर दु खियो का उनको सुख दिया,
तब तेरे मन की कली खिल जाएगी। जब दया
खूब हो धन धान्य और सन्मान भी,
पदवी भी ऊँची तुझे मिल जाएगी। जब दया
भव सिन्धु कर पार दया की नौका से,
'सुव्रत' मजिल तुझे मिल जाएगी। जब दया

१८. महावीर स्तुति

तर्ज जिन्दगी की ना टूटे

प्रभु वीर की महिमा बडी, नाम जपले घडी दो घडी।
राज्य वैभव से मोह को था मोडा, यूँ तोड दी मोह की लडी।
नाम जपले घडी दो घडी

उस जीवन का जीना भी क्या
जिसमे जप की अनुरक्ति न हो।
वो जीवन ही जीवन नही
जिसमे प्रभु की भक्ति न हो।
जप वाली तू पीले जडी, नाम जपले
कभी प्रभु के गुण भी तो गा।
उनके स्मरण से कलमल ले धो।
जग मे कोई भी अपना नही।
इसमे आसक्त फिर क्यो तू हो।
यही रह जाए माया पडी, नाम जपले
सती चन्दना ने नाम जपा,
उसने ज्योति थी पाई नई।
'सुव्रत' मन से तु प्रभु को ध्या,
जिन्दगी का भरोसा नही।
तेरी रह न जाए नौका खडी, नाम जपले

१९. रात दिन जिसको ...

तर्ज—दिल के अरमां

रात दिन जिसको याद भगवान है।
उसकी ही होती निराली शान है॥

ऐसा जादू है प्रभु के नाम मे,
नाम लेने वाला होता नही परेशान है। रात दिन

जितने भी कर्तव्य है इन्सान के,
उनमे भी भक्ति कर्म प्रधान है। रात दिन

दिल से यहाँ जिसने प्रभु को ध्याया है,
उसके ही पूरे हुए अरमान है। रात दिन

छोड कर प्रमाद अब सिमरण करो,
सिमरण ही देता पद निर्वाण है। रात दिन

२०. धीरे धीरे मोड़ तू इस मन को

धीरे-धीरे मोड तू इस मन को, इस मन को, तू इस मन को।
मन मोडा फिर डर नही, कोई दूर प्रभु का घर नही।
धीरे-२ ...

मन लोभी मन कपटी मन है चोर,
कहते आए यह पल-पल मे चोर।
कुछ जान ले, कुछ मान ले,
होना है विचलित नही। कोई दूर प्रभु का

जप तप तीर्थ सभी होते बेकार,
जब तक मन मे भरे रहते विकार।
नादान क्यो, बेभान क्यो?
गफलत ऐसे कर नही। कोई दूर प्रभु का

जीत लिया मन फिर ईश्वर नही दूर,
जान बूझ क्यो 'कमल' बना मजबूर।
अभ्यास से, वैराग्य से कुछ भी है दुष्कर नही।
कोई दूर प्रभु का

२१. धर्म में लग रहा ध्यान हो

तर्ज—जिन्दगी की न टूटे

धर्म मे लग रहा ध्यान हो, याद हर वक्त भगवान हो।
गुरु चरणो मे आकर बैठो, आत्मा का भी कुछ ज्ञान हो ।।
कोरे कागज सा जीवन है वो, जिसमे सस्कार कोई नही।
वो आदमी आदमी ही नही, जिसमे सुविचार कोई नही ।।
किस तरह उसका कल्याण हो

सारी दुनिया किधर जा रही, यह हमने नही देखना।
अपने गुरुओ का फरमान क्या बस हमने यही सोचना ।।
ऊँचे जीवन का निर्माण हो, याद हर वक्त

खाने पीने कमाने मे ही, ये तो सारा जीवन ही गया।
साथ परलोक मे जाएगा पुण्य धर्म जो यहाँ बन गया ।।
शुद्ध भावो से कुछ दान दो, याद

धर्म कहता है हो सावधान हर बुराई से बचते रहो।
जो कमाई भी हो पाप की, उस कमाई से बचते रहो ।।
दुर्गति मे न प्रस्थान हो, याद हर वक्त



२२. सत्संग महिमा

तर्ज—दिल के अरमा

श्रद्धा से सत्सग मे जो आएगा।
अपने दिल की वो मुरादे पाएगा ।।

पुण्य के शुभ से सत्सग मिले।
इसमे रस जिसको भी आ जाएगा ।। अपने दिल की

व्यसनो के दुर्गण मिटे सत्सग से।
फूलो सा जीवन वही मुस्काएगा ।। अपने दिल की

पापी से भी पापी का उद्धार हो।
सन्तो की वाणी जो दिल मे ध्याएगा ।। अपने दिल की

सन्तो के चरणो मे जिसका ध्यान हो।
उसका ही जीवन सफल हो जाएगा ।। अपने दिल की

२३. ज्ञान गंगा में ...

ज्ञान गगा मे गोते लगाए जाओजी ।
गुरु दर्शन की खुशिया मनाए जाओजी ॥
मानव जीवन का आनन्द पाए जाओजी, गुरु दर्शन

ज्ञान गगा गुरु जी से चलती है ।
प्रभु सागर मे जाकर मिलती है ।
दुनिया वालो को ये बतलाए जाओजी, गुरु दर्शन

डरने वालो को तरना न आता है ।
लोभी भक्तो को पथ नही पाता है ।
गुरु माया को मन मे मिटाते जाओजी, गुरु दर्शन

गुरु जी की कृपा से ज्ञान मिलता है ।
गुरु जी की कृपा से ज्ञान फलता है ।
गुरुदेव जी का शुक्र मनाए जाओ जी, गुरु दर्शन .. ..

ज्ञान पाने का सार गुरु कहते है,
भाई अपने पडोस मे जो रहते है ।
अपने जैसे ही ज्ञानी बनाए जाओ जी, गुरु दर्शन ..



योग का रूप और स्वरूप

प्रवचनभूषण श्रुत वारिधि श्री अमर मुनि जी
(सम्पादक - सुव्रत मुनि 'सत्यार्थी' शास्त्री एम० ए०)

योग का आजकल बहुत प्रचार हो रहा है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि योग क्या है ? इसे समझा जाए।

योग शब्द 'युज्' धातु से घञ्' प्रत्यय लगकर बना है। सस्कृत व्याकरण मे 'युज्' धातु दो है। एक का अर्थ है—जोडना, सयोजित करना। दूसरी 'युजि च समाधौ' का अर्थ है—समाधि-मन स्थिरता। इस प्रकार योग के स्वरूप के विषय में कहा जा सकता है कि—'जिसके द्वारा समाधि की प्राप्ति हो उसे योग कहते है।'

उत्तराध्ययन सूत्र मे उल्लेख है कि जब भगवान महावीर से पूछा गया कि 'योगसत्य से जीव को क्या प्राप्त होता है?' तब प्रभु महावीर ने फरमाया कि—'योगसत्य के द्वारा जीव योगो को शुद्ध करता है।'[1] अर्थात् जीवन मे मन, वचन और कर्म की एकरूपता प्राप्त करता है।

जैन मान्यतानुसार योग तीन है मनोयोग, वचनयोग और काययोग। योगसत्य से योग का शुद्धीकरण होता है, इसका तात्पर्य यह हुआ कि योगसत्य से मन शुद्धि, वचनशुद्धि और कायशुद्धि होती है।

जैन परम्परा मे इसे ही मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, और कायगुप्ति के रूप भी जाना जाता है। जो साधक योगसत्य को स्वीकार करता है तो मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति की प्राप्ति होती है। मनोगुप्ति के फल के विषय मे भी प्रभु महावीर से प्रश्न किया गया कि मनोगुप्ति से जीव को क्या प्राप्त होता है ? प्रभु महावीर ने समाधान देते हुए कहा कि मनोगुप्ति से जीव को मन की एकाग्रता प्राप्त होती है। और जब मन में एकाग्रता आ जाती है तो मन मे उठने वाले सभी अशुभ विकल्प समाप्त हो

१ जोगसच्च जोग विसोहेइ। —उत्तरा० २९/५३

जाते हैं। जब अशुभ का निराकरण हो गया तो आत्मा शुभ मे स्थिर होता है। शुभ संकल्प जागृत होते है। जो मनोगुप्ति वाला साधक है, वही सयम मे दृढ होता है। सयम को पालने मे समर्थ होता है। इसलिए योग साधना मे सबसे पहले मनोशुद्धि की बात आती है।

दूसरा योगसत्य है वचनशुद्धि। फिर प्रश्न किया, शिष्य ने प्रभु महावीर से पूछा कि वचनशुद्धि से जीव को क्या प्राप्त होता है? भगवान महावीर ने कहा वचनशुद्धि मे जीव निर्विकार भाव को प्राप्त करता है। यद्यपि शारीरिक विकार अलग है और मानसिक विकार अलग है परन्तु विकार की गणना मे दोनो को ही मिला दिया जाता है। जिसने वचन को बॉध लिया, अर्थात् वचन पर नियन्त्रण कर लिया उसकी वह वचनशुद्धि है और इससे जीव निर्विकार भाव को प्राप्त कर लेता है।

वचनसत्य से वचनगुप्ति की प्राप्ति होनी है। जिमने वाणी को साध लिया वह आत्मयोग मे स्थिर होता है। वह ध्यानयोग मे स्थित हो जाता है।

ध्यान चार है—आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्लध्यान। किन्तु इन चारो मे श्रेय तो दो ही है—(१) धर्मध्यान और (२) शुक्लध्यान। जो निर्विकारी साधक है वह धर्मध्यान मे लगता है। जिस क्रिया के द्वारा जीव धर्म मे रमता है उसे ही धर्म ध्यान कहा जाता है।

अब तीसरा योग आता है, जिसे काययोग कहते है। जैन परम्परा मे इसे कायगुप्ति भी कहते है। प्रभु महावीर से जब पूछा गया कि कायगुप्ति से जीव को क्या उपलब्धि होती है? तब भगवान महावीर ने फरमाया कि कायगुप्ति से जीव को सवर की प्राप्ति होती है, अर्थात् कायगुप्ति से आत्मा मे आने वाले पाप आश्रव की रुकावट हो जाती है। फलस्वरूप आत्मा के साथ पापकर्म सम्बन्धित नही होते। अशुभ से आत्मा की निवृत्ति हो जाती है। फिर निर्जरा के द्वारा पूर्व सचित कर्मो को तप के द्वारा समाप्त किया जाता है।

वैदिक मान्यता के अनुसार भी योग की यही धारणाएँ है। जब पूछा गया कि योग क्या है? तब उत्तर मिला, जिस क्रिया के द्वारा इन्द्रियो मे स्थिरता आती है वही योग कहलाती है। अर्थात् इन्द्रियो के नियमन का नाम ही योग है। जब इन्द्रियाँ काबू मे आ जाती है तो उनके विकार भी समाप्त हो जाते है। इन्द्रियो में स्थिरता आ जाना ही आत्मा की योग-अवस्था कहलाती है। जब योग-अवस्था आती है तब जीवन में रहा हुआ प्रमाद समाप्त हो जाता है। इस चर्चा से यह निष्कर्ष निकला कि योग से

अप्रमत्त भाव की उपलब्धि हो जाती है। अप्रमत्त भाव के विषय मे जैन मान्यता है कि वह साधक को तब प्राप्त होता है जब वह सातवें गुणस्थान मे पहुँच जाता है। और भगवती सूत्र के अनुसार जहाँ अप्रमत्त अवस्था साधक की हो जाती है वहाँ नये कर्मों का बन्ध नही होता। इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन योग और वैदिक योग मे कोई विशेष अन्तर नही है। सक्षेप में विकार भाव को जीतना ही योग है। जब निर्विकार अवस्था हो जाती है तो फिर चाहे गृहस्थ मे रहो चाहे सन्यास में, कोई अन्तर नही पडता। वहाँ चाहे पति पत्नी रूप मे भी क्यो न हो, तब विकार उत्पन्न नही होते। इतिहास साक्षी है विजयकुमार और विजयकुमारी का। भगवान विमल तीर्थंकर के समय का इतिहास है।

विजयकुमार और विजयकुमारी का विवाह हो गया। दोनो पति-पत्नी बन गये। सुहागरात के समय जब विजयकुमार आया अपनी पत्नी के पास तो उसने अपनी पत्नी विजयकुमारी से कहा—देवी ! मैंने एक गुरु मुख से ब्रह्मचर्य के विषय मे प्रवचन सुना था तब मैने उनसे यह प्रतिज्ञा ली थी कि मैं महीने के शुक्ल पक्ष मे ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा। आप धैर्य रखें अब यह शुक्ल पक्ष समाप्त होने वाला है। विजयकुमारी ने जब यह सुना तो वह उदास हो गई। जब विजयकुमार ने उदासी का कारण पूछा तो उसने हाथ जोड कर निवेदन किया कि आप अपना दूसरा विवाह कर लीजिए। वह बोला- क्या आपको मेरी प्रतिज्ञा पसन्द नही? विजयकुमारी ने कहा प्रतिज्ञा का मुझे कुछ दु ख नही, मुझे तो दु ख यह है कि आप मेरे रहते पिता नही बन सकते। गृहस्थ जीवन का सुख नही पा सकते। विजयकुमार ने कहा—आप ऐसा क्यो कहती है ? तब विजयकुमारी ने बताया कि आपने शुक्लपक्ष मे ब्रह्मचर्य पालन का नियम लिया है तो मैंने महीने के कृष्णपक्ष मे ब्रह्मचर्य पालन का नियम लिया है। इसीलिए मैं कहती हूँ कि आप दूसरी शादी कर लीजिए क्योकि न तो आप अपनी प्रतिज्ञा तोड सकते हैं और न मैं अपनी प्रतिज्ञा का अतिक्रमण कर सकती हूँ।

विजयकुमार हँसकर कहने लगा—आपने मुझे इतना कमजोर समझ लिया है ? जब आप ब्रह्मचर्य का पालन कर सकती है तो क्या मैं नही कर सकता। यह तो अच्छा सुन्दर अवसर मिला है साधना करने का, विकारो को हटाने का। विषय-विकार है तो पति-पत्नी हैं और विकार नही तो भाई बहन है। विजयकुमारी ने कहा—ठीक है हम गृहस्थ रहकर ही साधना करेंगे। चाहे हम सासारिक दृष्टि से पति-पत्नी है परन्तु आध्यात्मिक एव मानसिक दृष्टि से भाई बहन है। जब तक हम दोनो के अतिरिक्त हमारे

इस रहस्य का दुनिया वालो को पता नही चलता तब तक हम गृहस्थ में रहेंगे और जब हमारे बिना बताए यह भेद खुल जायेगा तो हम साधु-साध्वी बन जायेंगे। दोनो रह रहे है आनन्द मे। एक ही पलग पर सोते हैं। साथ साथ खाते हैं, परन्तु कोई विकार नही। इस तरह निर्विकार भाव से साधना करते हुए उन्हे बहुत समय बीत गया।

एक बार एक श्रावक ने भगवान विमल तीर्थंकर से प्रार्थना की कि मैं आपके श्रमण सघ को भोजन कराना चाहता हूँ, यह मैंने अपने मन मे प्रतिज्ञा ली है। तीर्थंकर देव ने फरमाया कि समस्त श्रमण सघ को भोजन देने की बात तो सम्भव नही है। तब श्रावक ने पूछा, फिर मेरी प्रतिज्ञा कैसे पूर्ण होगी। तब विमल केवली कहने लगे कि यदि तुमने विजयकुमार और विजयकुमारी को भोजन करा दिया तो समझ लेना हमारे सारे श्रमण सघ को ही भोजन करा दिया। वह श्रावक आश्चर्य से बोला एक गृहस्थ को भोजन कराना इतना महत्वपूर्ण है ? तब केवली भगवान कहने लगे बडी कठोर साधना है उनकी। वे गृहस्थ मे रहते हुए भी, पति-पत्नी होकर भी, बहन-भाई की भाँति निर्विकार भाव से रह रहे है। तब श्रावक वहाँ गया, विजयकुमार विजयकुमारी को वन्दन किया और बोला आप धन्य हैं। घी और अग्नि साथ रहे और विकृत न हो। यह आप जैसे निर्विकारी साधक ही सम्भव करते है। घी और अग्नि एक स्थान पर रहे और घी पिघले नही, अग्नि सुलगे नही, कमाल है आपका। मै आपको बार-बार वन्दन करता हूँ। मेरी अरदास है आप मेरे यहाँ भोजन करने का निमन्त्रण स्वीकार कर लीजिए।

विजयकुमार कहने लगा— आप यह क्या कह रहे हो, लोग क्या कहेगे ? तब श्रावक ने कहा केवली की वाणी मे सशय नही हो सकता। मुझे विमल केवली ने सब सुनाया है। आप गृहस्थ मे रहकर भी बाल ब्रह्मचारी हो। अत मेरा निमन्त्रण स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करो, क्योकि मैंने विमल केवली से कहा था कि मै आपके श्रमण सघ के भोजन का लाभ लेना चाहता हूँ। तब उन्होने फरमाया था कि यदि विजयकुमार और विजयकुमारी को भोजन कराओगे तो वह हमारे समस्त श्रमण सघ के तुल्य होगा। यह था निर्विकार भाव का महत्व और योग की उपलब्धिया है।

बन्धुओ, योग मनुष्य के मन को पवित्र, स्थिर और शक्तिसम्पन्न बना देता है। जीवन के ऊर्ध्वमुखी विकास के लिए आज योग की परम आवश्यकता है। ●

समत्वयोग की प्राप्ति

—प्रवचनभूषण श्रुत वारिधि श्री अमर मुनि जी

(सम्पादन-साध्वी अर्चना जी)

योग की चर्चा मैं योग के १५ भेद बताये है। दूसरे प्रकार से योग के और भी अनेक प्रभेद होते है। उन सभी योगो मे समत्व योग सबसे महान है। गीता मैं समत्व को ही योग कहा है—'समत्व योग उच्यते'। उन सबसे महान् योग समयोग है जिसे समता, साधना, समतायोग या सम्यक्त्व भी कह सकते है। शास्त्रो मे योग की बहुत चर्चा चलती है। उपाध्याय यशोविजयजी ने योग की बात जो अध्यात्म सार के अन्दर कही है—जहाँ साधक समयोग मे पूर्ण हो जाता है तब उसकी अवस्था वैसी ही हो जाती है—जैसे चन्दन का वृक्ष कोई काट रहा है, तब भी सुगन्धि, पूजा करने वाले को भी सुगन्धि ही देना है। चन्दन के पास जो सुगन्धि है वह काटने वाले और पूजा करने वाले दोनो के लिए बराबर है। ऐसी ही समश्रेणी की चर्चा साधक के लिए है, चाहे कोई रागी हो या द्वेषी उसका साधक पर कोई फर्क नही पडता। साधक बनकर व्रत, नियम, उपनियम, तप मर्यादा, धारण कर लिये है, पर इन सबके साथ हमने अभी तक साधना के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण अग को नही समझा। याद रखो, जब तक समयोग को धारण नही करोगे तो तुम्हे व्रत, नियम भवसागर मे पार नही लगायेंगे। आचार्यों ने समयोग को नौका का रूप दिया है। समयोग क्या है? सुधा सरोवर है, अमृत का तालाब है। समयोग (अमृत का तालाब), जिसमे ये आत्मा डुबकी लगा रही है तो उसकी आँखो मे से काम का पानी सूखता जा रहा है अर्थात् जिसके मन मे समयोग होगा तो उसके जीवन से काम वासना दूर होती जाएगी। जब कोई पानी मे डुबकियाँ लगाता है तो उसके शरीर की तपन दूर होती है, यदि कोई इस अमृत के तालाब मे डुबकी लगाता है तो इस समयोग मे आने पर क्रोध रूपी तपन उद्दण्डतारूप ताप दूर हो जाती है। उद्दण्डता के कारण मनुष्य एक दूसरे को नीचा दिखाने की सोचते है, पर समयोग मे आने पर सबके

लिए एक-सा स्वभाव है। समयोग को समझाने के लिए उपाध्याय यशोविजयजी ने कुछ रूपक दिये है जिनकी चर्चा मैं आपके सामने करूँगा।

(१) अंजनशलाका

उपाध्याय यशोविजयजी समत्वयोग के लिए बडी सुन्दर उपमा दे रहे हैं अजनशलाका की। जब कोई भी रोग आँखो का, आँखो के ऊपर वार करता है, तो पिसा हुआ सुरमा आँखो में पतली सलाई से डाला जाता है, तो वह अजनशलाका आँख पर छाई हुई झिल्ली को हटा देती है, ऐसे ही कोई समयोग रूपी अजन शलाका मन की आँखो मे उतारता है तो उसके अन्दर से विभाव का पर्दा हट जाता है, तब वह स्वभाव मे आता है।

(२) अमृत मेघ बरसना

उपाध्याय जी ने अगली उपमा दी है - अमृत मेघ वर्षा की। तपी हुई पृथ्वी, सूखी हुई है पृथ्वी, पर हरियाली का नाम नही है, पृथ्वी पर। ऐसी जो तपी हुई पृथ्वी है यदि उस समय उस पर मेघमाली कृपा कर दे, बरसात हो जाए तो अगले दिन देखते है, पृथ्वी का रग बदल जाता है। हरियाली हो जाती है, एकदम वृक्ष से धूल नीचे गिरकर खाद का रूप ले लेती है। पृथ्वी की तपन शात हो जाती है। ऐसे ही ये अमृत मेघ है। इन्सान के लिए, जीवात्मा के लिए, समयोग का मेघ, जीवन मे चारो ओर विषमता की ज्वालाएँ धधक रही है, जीवन की हरियाली समाप्त हो गई है, तब यदि समयोग की वर्षा होती है तो विषमता की तपिश दूर हो जाती है, जीवन मे हरियाली छा जाती है। जैसे जगल मे आग लगने पर, वर्षा होने से अग्नि शान्त हो जाती है। इसी प्रकार ससार मे जन्म-मरण की अग्नि लगी हुई है—बुढापे की, मिलने की, बिछुडने की अग्नि लगी हुई है, तो इस अग्नि को समाप्त करने के लिए समयोग की बरसात ही समर्थ है।

(३) सूर्य प्रभा

समत्व योग के लिए सूर्य प्रभा की उपमा है। जैसे रात को अन्धकार छा जाता है। सबेरे-सबेरे सूर्य का जन्म पूर्व दिशा मे हो रहा है। पता लगा वह अन्धकार कहाँ गया ? एकदम ज्यो ही सूर्य की प्रभा प्रकट होती है, त्यो ही अन्धकार का पता नही लगता, कहाँ गया। ऐसे ही समयोगरूपी सूर्य की प्रभा इस जीव मे जब प्रकट होती है तो जीव का जन्म-जन्मान्तर का अंधकार—मिथ्यात्व दूर हो जाता है। किसी साधक ने बहुत ज्ञान उपार्जन किया हुआ है, पर उस साधक के जीवन मे ज्ञान उपार्जन के साथ-साथ

समयोग नही, सम्यक्त्व नहीं तब उस साधक का जीवन या ज्ञान वैसा ही था— जैसे चन्दन तो बहुत अच्छा है परन्तु यदि आग लगा दे उसमे तो वह कोयला बन जायेगा ।

एक राजा ने खुश होकर लकडहारे से कहा, वह चन्दन का बाग जो मेरा है, मैं तुम्हे देता हूँ । लकडहारा खुश हो गया, चन्दन के बाग में पहुँच गया, बोला कि मजे आ गये । जंगल मे जाता था, लकडियाँ इकट्ठी करके उन्हे जलाकर कोयले बना बनाकर बेचता था । अब तो इन्हीं लकडियो के कोयले बनाकर बेच दिया करूँगा । उसने वह चन्दन की लकडी कोयले बना कर बेच दी किन्तु उससे दो समय की रोटिया ही मिलती थी । एक बार राजा ने सोचा, आज तो सैर करने उस चन्दन के बाग मे जाऊँगा जो मैंने लकडहारे को दे रखा है, अब तो लकडहारा भी धनाढ्य हो गया होगा । जाकर देखा तो केवल दो चार चन्दन के पेड ही उस बाग मे नजर आ रहे हैं, इधर उधर की सारी जगह काली सी नजर आ रही है, राख की ढेरिया पडी है । लकडहारे ने राजा को देखा तो प्रसन्न हो गया । राम राम जी-राम राम जी कहकर कहता है- -राजन ! आपने तो मेरी मौज ही कर दी, इसे काटता हूँ कोयला बनाता हूँ, बेचता हूँ । राजा समझ गया—अरे ये तो पागल है । बोला कि चन्दन का टुकडा काटकर ला । ले आया । राजा बोला—जा दुकान पर जाकर कहना कि राजा ने कहा है कि इसकी जितनी कीमत है उतनी ही मुझे दे दे, ना ज्यादा ना कम । लकडहारा गया । उस टुकडे के एक लाख रुपए मिले । राजा के पास आया बोला—राजन ! मैं लुट गया, बर्बाद हो गया हूँ, करोड़ो रुपए का चन्दन जला जला कर बेच दिया । मेरे हाथ कुछ नही आया । राजा बोला, जो हो गया सो हो गया, अब विश्वास कर ले और जो है उसी मे विश्वास कर ले । ये उपमाएँ देकर उपाध्याय यशोविजय जी कहते हैं कि जीवन मे कितना भी ज्ञान क्यो न हो जब तक समश्रेणी नही आयेगी तब तक हम ज्ञान को उस लकडहारे की तरह कोयला बना-बना कर बेच दिया करते है ।

मरुदेवी माता जो हाथी पर बैठी अपने बेटे ऋषभदेव को उपालम्भ देने जा रही हैं । देखती क्या है, हाथी के ओहदे पर चढी-चढ़ी कि वह जिसके मारे मर रही है वह तो ध्यानमग्न है । लाखो करोडो लोग उसके पास बैठे है, वह मेरी ओर देखता ही नही, और मैं तो मोहवश मरी जा रही थी इसके लिए । ये तो जनता को उपदेश देकर उद्बोधन कर रहा है । ऐसा सोचते सोचते उस मरुदेवी को हाथी पर बैठे-बैठे ही केवलज्ञान हो गया । उसी तरह

शीश महल मे बैठे-बैठे भरत चक्रवर्ती को केवलज्ञान हो गया। भरत का बेटा सूर्ययश उस शीश महल मे आया तो वही हाल उसके बेटे सूर्य का हुआ जो उसके पिता भरत का हुआ था। फिर सूर्ययश के बेटे का, एक एक करके आठ पीढियो तक ऐसे ही हुआ। उन्होने राजपाट नही त्यागा था, बल्कि उनमे समता के परिणाम आए तो सारा कुछ उनके पास आ गया। वह आठ राजा क्रमश. समय आने पर शीश महल मे गये और केवलज्ञानी होते गये। लोगो ने कहा कि जो भी राजा इस शीश महल मे जाता है वही केवल ज्ञानी हो जाता है। इस शीश महल को तुडवा दो, तुडवा दिया।

एक बात शास्त्रकार कहते है जिसे हम दीक्षा कहते है, यह दीक्षा है क्या? शास्त्र कहते है—दीक्षा हम उसे कहते है, जहा कि दीक्षित हुआ साधक खा, पी, बोल और सो भी रहा है। जीवन व्यतीत करने की सभी क्रियाएँ कर रहा है। उसमे एक बात आ जाती है, समता का परिणाम। खाने मे मीठा थोडा हो जाए तो हम आपे से बाहर हो जाते है, हम लोग जरा-सा नमक कम हो जाए या मिर्च ज्यादा हो जाए तो आपे से बाहर हो जाते है। पर जहाँ समश्रेणी आ जाए तो वहाँ कम ज्यादा का कुछ असर नही होता।

एक नौजवान ने कहा - 'माँ, मैं साधु बनूँगा।' दादी बोली— मुझे भी पता है साधुत्व, पर तेरी शादी के बाद बनना। उसकी शादी हो गई। फिर उसके यहाँ पोता भी बडा हो जाता है। पहले यह रिवाज था कि जो घर की बडी सदस्या हो, वो ही सारे परिवार को भोजन परोसती थी। बहुएँ तो बना सकती थी पर परोस नही सकती थी, इसीलिए पहले जो रिवाज था, बिल्कुल सत्य है। तो एक बार वो दादी तो कही गई हुई थी, उस पुत्रवधू ने भोजन परोसा, लम्बा घूंघट था, खिचडी बनाई थी, हारे दो थे, एक मे खिचडी का बर्तन, दूसरे मे बिनौले का, हाथ मे थाली भी थी, कडछी भी थी और घी भी था। उसने पर्दा इतना लम्बा डाला हुआ था कि उसे दिखाई नही दिया, उसने बिनौले वाले बर्तन का ढक्कन उठाया थाली मे बिनौले डाले और घी भी डालकर ससुर के आगे रख दिया। देखा बिनौले, क्या मुझे आज पशु बना दिया? लेकिन सत्सग मे सुन रखा था, समता के परिणाम थे कि कभी कभी मनुष्य पशु भी बन जाते है, समता के भावो से उसने वे बिनौले खा लिए, दादी आई - बोली पुत्रवधु से कि तेरे श्वसुर ने भोजन कर लिया? उत्तर दिया हाँ माताजी कर लिया। दादी ने देखा खिचडी तो वैसी ही थी, बोली

तूने बिनोले खाने को दे दिए अपने श्वसुर को, जुल्म कर दिया। पूरे घर में हा-हाकार सा मच गया। परन्तु सेठ तो कुछ बोला ही नही। दुकान से आया तो मा बोली, जा अब तू साधु बन जा, तुझ मे समता के परिणाम आ गये है। तू समश्रेणी मे आ गया है, अब तू साधु बन सकता है। तू घर मे भी रहे तो साधु जैसा ही है।

तो मै कह रहा था—समत्व योग की बात। जब समभाव जीवन मे आ गया तो चाहे वन मे जाओ, या भवन में (घर मे) रहो। कही भी रहो, कोई कलह नही, दु ख नही, शोक नही। बस, आत्मा के भीतर से आनन्द का स्रोत फूटने लगता है, समता रस की अमृत धार जीवन में आनन्द और सुख की बहार ले आती है।

समभाव भावियप्पा लहई समाहि

समभाव से युक्त आत्मा को ही समाधि की प्राप्ति होती है।



अलद्धु य नो परिदेवइज्जा।
लद्धु न विकत्थइ स पुज्जो॥

—दशवै० ९/३/४

—जो अलाभ होने पर खिन्न नही होता है और लाभ होने पर अपनी बडी नही हॉकता है, वह पूज्य है।

सम्यक्दर्शन और संवेग

प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि

(सपादन—तरुण तपस्विनी साध्वी जितेन्द्रकुमारी)

सम्यक्दर्शन के पाँच लक्षणो की बाते चल रही है, वे है—सम, सवेग, निर्वेद, अनुकम्पा, आस्तिकता। मम का अर्थ है कषाय को जीतना। सवेग की चर्चा चली हुई है, सवेग का अर्थ है मोक्ष की अभिलाषा परन्तु केवल चाहने मात्र से मोक्ष नही मिलता, चाहने से यदि सब कुछ प्राप्त हो जाए तो कुछ करना ही नही पडे, मोक्ष की अभिलाषा को ही सवेग कहो तो मोक्ष की प्राप्ति नही हो मकती। मोक्ष प्राप्ति के चार साधन बताए है।

सवेग का वास्तविक अर्थ है क्या ? हम बाहर के कितने भी क्रिया-कलाप करते चले जाएँ यदि हमारा अन्त करण जरा भी नही बदलता है, तो हमे कुछ लाभ नही मिलेगा, हमे अपनी आत्मा का ही साथ चाहिए, बाह्य साधन की बात क्या ? बल्कि शरीर के अन्दर आत्मा को अपना साथी स्वय बनाना पडता है। आत्मा के साथी है सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, सम्यक्तप।

सम्यक्तप क्या कहा ? तप तो तप ही है पर सम्यक् शब्द क्यो लगाया ? सही का नाम ही तो सम्यक् है, यथार्थ का नाम ही सही है, ज्ञान यदि सही नही तो अज्ञान मे, दर्शन अगर सही नही तो मिथ्यात्व मे, चारित्र सही नही तो दु ख मे बदल जाएगा। तप के सहारे आगे बढना है। महावीर स्वामी कहते है कि जैसे चादर पर लगे दाग को दूर करने के लिए साबुन-पानी की आवश्यकता होती है ऐसे ही आत्मा रूपी चादर पर लगे कर्मरूपी धब्बे को छुडाने के लिए तप रूपी साबुन की आवश्यकता है। तप कर्म मल के लिए साबुन पानी की तरह है।

जह खलु मइल वत्थं
सुज्झइ उदगाहिए दव्वेहिं।
एव भावुवहाणेण
सुज्झए कम्मट्ठविह।
—आचारागनिर्युक्ति २८२

भगवान महावीर ने इस तप पर अधिक बल दिया। गीता मे अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछते हैं कि तप करने से क्या लाभ होता है? तब श्रीकृष्ण बोले, सुनो, तप करने से जब यह आत्मा सँभलता और तप करता है, निराहार रहने का अभ्यास करता है, तब उस निराहार अवस्था मे शारीरिक विषय विकार है उससे अलग हो जाते हैं।[1] सही स्थिति आ जाती है। जब शरीर को पानी भोजन नही मिल रहा हो तो व्रत करने के कारण इन्द्रियाँ निढाल हो जायेगी। सभी इन्द्रियो के विषय-विकार इनसे दूर हो जाते हैं। क्योकि इन्द्रियो का पोषण आहार से होता है, शरीर के पोषण से इन्द्रियो के २३ विषय और २४० विकार आत्मा पर हावी हो जाते है। निराहार के कारण ये दूर होते जाते है, इस दृष्टिकोण से हे अर्जुन! तप करना चाहिए। तप के द्वारा शरीर व इन्द्रियो को काबू किया जाता है।

महावीर भगवान तप के साथ एक बहुत बडी शर्त लगा रहे हैं, कहते है—तप कर रहे हो तो पूजा के लिए तप मत करो (दशवैकल्पिक सूत्र)। यदि आप पूजा के लिए तप कर रहे हो तो आपका तप निरर्थक हो जाएगा। यही बात गीता मे श्रीकृष्ण ने कही कि हे अर्जुन! यश, वैभव, सत्कार, सन्मान, स्वार्थ के लिए तप नही करना चाहिए। इसके लिए जो तप करता है वह तप निष्फल होता है। डावाडोल स्थिति बनी रहती है। सही अर्थों में तप तो वह होता है, जिसमे सन्मान, पूजा, सत्कार की बात न हो, अर्थात् गुप्त तप ही सही तप है। जिस तप मे पूजा की भावना हो उसे राजस तप कहा है। (गीता १७/१८)

राजस तप उसे कहते है जिससे पूजा होती है यानी साता पूछी जाती है। ये राजस तप है। वह वास्तव में तप नही है, इसलिए भगवान महावीर ने स्पष्ट कहा है—हे साधक! तेरी सारी साधना ससार की सारी पूजा प्रतिष्ठा से अलग होकर होनी चाहिए।

---

१ विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्यदेहिन। —गीता २/५६

आचार्य भद्रबाहु ने बहुत अच्छी चर्चा दी है—श्रमण वो ही है जो श्रम करता है। श्रम का अर्थ है मेहनत, पर श्रम शब्द के साथ 'ण' लगा हुआ है। श्रम का जो प्रत्युपकार नही माँगता वह श्रमण होता है। श्रमण वही है जो श्रम करता है पर कुछ लेता नही। श्रम का अर्थ है—जो तप मे लगा हुआ है, तप मे लगकर जो श्रम कर रहा है और तप का कुछ मूल्य नही माँग रहा उसे श्रमण कहते है। घर की मालिका घर मे सारा दिन काम कर रही है, सफाई, चौका, खाना आदि। किन्तु क्या वह अपने पति को शाम को ये कहती है, मैने सारा दिन काम किया है, लाओ मेरा मेहनताना? नही वह कभी नही माँगती। एक दासी केवल आठ घण्टे घर मे काम करती है और शाम को मजदूरी के हिसाब से पैसे माँग लेती है। जिसने काम किया, माँगा नही वो मालिक है, और जिसने श्रम किया और माँगा वो नौकर है। श्रम किया है पर कुछ माँगा नही तब तो तप किया हुआ सारा ही अपने पास है, नही तो सब बेकार है।

तभी भगवान महावीर ने कहा— साधको! व्रत करो पर इच्छा लेकर मत करो, इच्छा लेकर करोगे तो सब बेकार चला जाएगा। इस विषय मे अर्हत्त ऋषि ने उपमा दी—मोतियो की माला बहुत अच्छी व कीमती भी है, पर वह माला बन्दर को दे दी गई। बन्दर क्या जाने क्या कीमत है इन मोतियो की माला की। वह तो उसे तोडता रहता है। जैसे ही यह तप की माला अगर ग्रहण कर ली, आपने कीमत जान ली तो सँभाल कर रखोगे। और यदि तप की कीमत नही मालूम और ये चाहो कि अमुक वस्तु मुझे मिल जाए तो उस बन्दर के समान है, जिसने मोतियो की माला तोड-तोड कर फेक दी। उसके लिए वह तप भी बेकार है, जिसने तप का निदान कर दिया है। शास्त्र मे वसुदेव जी का उदाहरण दिया है—

वसुदेव जी का पिछले जन्म मे काला रग था फिर माँ बाप का स्वर्गवास हो गया। काम करने मे तगडा है। मामा के घर रहा। काम करने के समय काम दिल से कर रहा है परन्तु शादी के समय लडकी कहती है कि यदि इस काले-कलूटे के साथ विवाह हुआ तो मैं आत्महत्या कर लूगी। एक दो ने नही बल्कि सभी ने मना कर दिया तो उसने सोचा कि यहाँ गुण की नही, चाम की पूजा है, इस जीवन से तो मर जाना बेहतर है। वह पर्वत पर चढ़ गया, छलाग लगाने लगा। परन्तु तभी एक सन्त की आवाज आई—ठहरो! नौजवान क्यो मर रहे हो? उसने कहा—जिसका कोई सहारा नही तो वह ऐसे ही करेगा। मुनि बोले—यह नर जीवन दुबारा

नही मिलता, जीवन में परिश्रम करके धन कमा सकते हैं, किन्तु धन से जीवन नही खरीद सकते। तुम कायर हो जो मौत के मुँह मे जा रहे हो। मरो नही बल्कि शूरवीर बनो, मौत तो अपने आप आ जाएगी। जन्म दुबारा नही मिलेगा। जब ये सुना उसने, तो बोला, मैं साधु बन जाऊँ तो फिर दुनिया वाले चाहने लगेगे। सन्त ने कहा--यदि साधु बनना चाहता है तो अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन करना पडेगा। वह बोला, करूँगा। बस बन गया साधु। सन्त ने कहा—तरने के लिए एक मार्ग है तेरे लिए सेवा करना, उसी से तेरा बेडा पार हो जाएगा। तब वह सन्तो की सेवा मे लग गया और आत्मकल्याण के लिए तप की आराधना भी कर रहा है।

वैसे देखा जाय तो तप के बारह भेद होते है। उनमे सेवा स्वय ही एक बडा तप है। इन्द्रियो का निग्रह करने के लिए तप करते हैं। बाहर के तप करना आसान है, सेवा का तप करना मुश्किल है। जीते-जागते पिता की सेवा करनी कठिन है, उनकी आज्ञा मानना कठिन है, व्रत करना आसान है। हम असल को छोडकर नकल को ग्रहण कर रहे है। अब वे मुनि इन्द्रियो का निग्रह करने के लिए तो बेला तेला कर रहे है, महिमा छा गई उनकी अगले लोक मे भी कि सेवा कर रहे है मुनि, किन्तु ग्लानि नही करते है। जब यह सुना तो दो देव परीक्षा के लिए आ गए। जगल मे है एक वृद्ध मुनि जिसे दस्त लगे है, दूसरा मुनि उपाश्रय मे आ गया। यहाँ देखता है कि सेवा करने वाला मुनि बेले का पारणा करने को तैयार है। तब वह देव जो साधु बनकर आया था बोला, कि ढोगी सेवा का ढोग रचता है। तुझे सेवा करनी भी आती है। तब उस सन्त ने आहार ढक दिया और उसमे कहा—फरमाओ क्या आज्ञा है? बोला—जगल मे एक वृद्ध मुनि पडा है, और तू यहाँ मजे कर रहा है। वह देवरूपी साधु उसे खूब ताने मारता है। किन्तु वह मुनि विनय भाव से बोला, चलो। चलने लगता है। देवरूपी सन्त बोले कि उस साधु को दस्त लगे हुए है और तू ऐसे ही चल पडा कुछ कपडा पानी वगैरह ले चल। वो चल पडे। रास्ते मे देव ने सोचा देखूं ये कितने पानी मे है। जगह जगह सघट्टा की तरह पानी बिखेर दिया परन्तु वह सेवाभावी मुनि एक घर से दूसरे घर जा रहा है। देव ने ध्यान से देखा कि मुनि तो चलायमान होने वाला नही। वहाँ पहुँच गए साधु के पास, उसके ऊपर मक्खियाँ भिनभिना रही है। पर उसके जीवन मे विवेक है, उसको ठीक कह दिया, कहा महाराज मुझे आने मे देर हो गई माफ करना। वह बोला—तू बाते बनाता रहेगा, मै यहाँ धूप मे पडा रहूँगा। उस सेवाभावी ने सोचा

कि ये महान है, रोगी होने पर मानव में चिड़चिड़ापन हो ही जाता है। बोला, पधारो।

पधारने लायक हूँ मैं ? तो साधु ने कन्धे पर बिठा लिया और ले चला। रास्ते मे बदबू ही बदबू कर दी उसने। वह सोच रहा है कि मै इन्हे उठाकर लिए जा रहा हूँ। इन्हे कष्ट हो रहा होगा। तब उन देवो ने उपयोग लगाया अरे ये तो बहुत महान है, चलायमान होने वाला नही। देव असली रूप मे आ गए, बोले—मुनि जी ! आप पास हुए हम फेल हुए। हम आपकी परीक्षा लेने आए थे। वह देव चले गए। अब वो मुनि इतनी सेवा व तपस्या कर रहा है पर उस तप का फल चाह लिया कि मै अगले जन्म मे ऐसा काला न बनूं, अगले जन्म मे शरीर मिले तो बहुत सुन्दर मिले, रूप मिले। तप के फल की चाह कर ली। निदान कर लिया।

भगवान महावीर एक दूसरी बात कहते है कि तप का निदान मत करो। एक बार भगवान महावीर के चरणो मे राजा श्रेणिक और रानी चेलना आ रहे है। देवलोक के देव-देवियो का रूप भी उनके सामने कुछ नही है। शास्त्रकार कहते है कि भगवान महावीर के चरणो मे बैठे साधुओं ने सोचा है कि अगले जन्म मे हमे राजा श्रेणिक जैसा रूप मिले। साध्वियाँ सोचती है कि अगले जन्म मे हमे रानी चेलना वाला रूप मिले।

परन्तु भगवान महावीर कहते है कि तप का निदान करने वालो, ऐसा करोगे तो अगले जन्म मे साधु नही बन सकते। तप का एक ही ध्येय है संवेग -- मोक्ष की अभिलाषा। ये सब निर्जरा के हेतु होने चाहिए, पर जहाँ निदान किया जा रहा है, वहाँ उस करनी का फल तो सीमित ही मिलना है। अध्यात्म मे लगे हुए भौतिक सुख को नही चाहते पर आध्यात्मिक साधना मे उनके फल स्वत ही मिलते है। पर जो साधक सब कुछ करते हुए भी अपनी करनी को दाँव पर लगा देते है, उनकी दाँव पर लगाई करनी से कुछ तो मिल जाता है पर पूरी तरह नही। अगले जन्म मे वसुदेव का रूप पा लिया था उसने (मुनि नंदीषेण ने) जब वसुदेव जी बाजार मे जाते थे तो स्त्रियाँ टकटकी बाँधे देखा करती थी, इतना रूप मिला था इस जन्म मे। पर रूप के साथ-साथ स्वभाव की बात नही, स्वरूप नही मिला। इसलिए शास्त्रकार कहते है—आओ अपने स्वरूप को पहचानो, उस रूप की चिन्ता मत करो। स्वरूप मे कुछ रह जाए तो वो स्वत ही दूर हो जायेगा, उसकी चिन्ता मत करो। सीमित मत करो जिसका परिणाम विशाल है उसे सीमित करके छोटा मत करो।

इसलिए शास्त्रकार कहते है सवेग का अर्थ है मोक्ष की अभिलाषा और मोक्षाभिलाषी को चार साधन अपनाने पडेगे, सम्यक्‌दर्शन, सम्यक्‌ज्ञान, सम्यक्‌चारित्र, सम्यक्‌तप। इन चारो की सम्यक् आराधना ही मोक्ष तक पहुँचा देगी।

तो बधुओ, मैंने कहा, जो सवेग है, सम्यक्—यानी सच्चा वेग, यानी उत्साह। मन मे धर्म का, ज्ञान प्राप्ति का, तप का जो भी सम्यग् उत्साह है वही सवेग है।

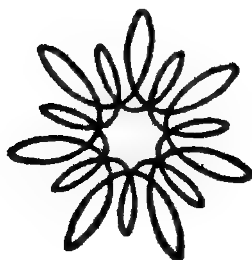
वेग तो सभी मे होता है, मोटर, रेल, हवाई जहाज सभी में वेग है। शक्ति है, पर उस शक्ति को सही मार्ग पर ले जाने का विवेक जब होता है तब सवेग होता है। यही सवेग मोक्ष का दाता है।



जम्म दुक्ख जरा दुक्ख रोगा य मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु ससारो, जत्थ कीसति जतुणो॥

—उत्तराध्ययन सूत्र

—जन्म दुख है, बुढापा दुख है, रोग और मरण का दुख है। अहो सारा ससार दुखरूप ही है। यहाँ सभी प्राणी दु.ख मे जल रहे है।



निर्वेद बनाम अनासक्तयोग की प्राप्ति

—प्रवचनभूषण श्री अमर मुनि जी

(सम्पादन—साध्वी सयमप्रभा जी)

सम्यक्दर्शन के पाच लक्षण बताये गये है। इनमे से हमने सम, सवेग दो की बात सुन ली है। सम का अर्थ है—कषाय को जीतना और सवेग का अर्थ है मोक्ष की अभिलाषा।

तीसरा लक्षण आता है निर्वेद। निर्वेद क्या है, इसकी प्राप्ति कैसे होती है ? जहाँ तक वैदिक दृष्टि है वहा चार वेद माने जाते है, वेद का अर्थ है ज्ञान। परन्तु इस वेद मे तो शारीरिक अवस्थाओ की चर्चा चलती है। जैन सस्कृति मे तीन वेद माने गये है—पुरुषवेद, स्त्रीवेद और नपु सकवेद।

इन्हे वेद का रूप तब तक देते हैं जब तक इन तीनो मे कामनाओ की भावना रहती है। जब वासना जागती है, तब हम इन्हे वेद कहते हैं। निर्वेद की चर्चा मे पहले उसकी परिभाषा जाननी होगी।

निर्वेद का अर्थ है वासना से रहित होना। जिसे हम गीता के शब्दो मे "अनासक्त योग" भी कह सकते है। शरीर चाहे पुरुष, नारी या नपु सक का हो, यदि उसमे वासना नही जाग रही, वासना या इच्छा पर काबू हो गया है तब हम उसे अनासक्त योगी या अनासक्त साधक कहते है। अनासक्त योगी ही परिपूर्ण हुआ करता है, आसक्ति के जब तक भाव है तो राग-द्वेष है। राग-द्वेष है तो कर्म है, कर्म से ससार परिभ्रमण चल रहा है।

उत्तराध्ययन सूत्र मे भगवान महावीर से प्रश्न किया गया—निर्वेद से इस जीव को क्या लाभ मिलता है ?

गौतम स्वामी पूछते हैं—निव्वेएण भते ! जीवे कि जणयइ ? —हे भगवन् ! निर्वेद से जीव को क्या लाभ मिलता है ?

भगवान श्री महावीर फरमाते हैं—निव्वेएण दिव्व-माणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेय हव्वमागच्छइ।

निर्वेद से जीव देव, मनुष्य एवं तिर्यंच सम्बन्धी सभी प्रकार के काम-भोगो से विरक्ति, वैराग्य प्राप्त कर एकदम निर्विकार अनासक्त हो जाता है।

तो निर्वेद द्वारा इस मानव को आसक्ति से रोककर अनासक्त योग की ओर मोडा जाता है तब यह आरम्भ से दूर होकर अनारभ अवस्था को प्राप्त होता है। आरम्भ का अर्थ है पाप, ये इच्छाओ से किये जाते हैं। जब अनासक्ति की बात आती है तो इच्छाओ को रोककर, वासनाओ से दूर होकर अनासक्त हो जाता है। क्योकि पैसा बिना पाप के कमाया नही जाता, आता भी नही, माया एक ऐसी चीज है जो पाप के द्वारा इकट्ठी होती है और मरने पर साथ नही जाती फिर भी सब इसे चाहते हैं। निर्वेद के द्वारा साधक आरम्भ को समाप्त कर देता है, तब उसके पास पाप की चर्चा नही आती, फिर वह सिद्धि मार्ग का साधक बन जाता है, अर्थात् उसे सिद्धत्व प्राप्त हो जाता है।

एक बार यह प्रश्न रखा गया कि यह मायारूपी ससार विराट है, इसे कैसे पार किया जा सकता है ? उत्तर मे कहा गया कि जो सग का त्याग करता है और अनासक्त योग मे आता है तो वह इस ससार सागर से पार होता है। जीव और कर्म की जब चर्चा करते है वहाँ सग है। जीव सग है, सग कर्म है। जो इस सग (आसक्ति) का त्याग करता है वही ससार से पार होता है और निर्ममत्व को प्राप्त होता है।

दुखो का मूल क्या है ? दुनिया मे दुखो का मूल मोह है। भगवान महावीर ने कहा है—दुक्ख हय जस्स न होइ मोहो—जिसने मोह को जीत लिया, उसे दुःख नही होता। अत कहा भी है—मोह से बडा ससार मे जीव का शत्रु कोई नही।

पूरण सुख वो पाता है जो मोह को दूर हटायेगा।
सन्त समागम कर बशर जीवन तेरा बन जायेगा॥
चौरासी से छूट कर अजर अमर हो जाएगा।
ये है चर्चा ममता के भाव की॥

उपाध्याय जी यशोविजय कहते है—जो गृहस्थ मे से निकलकर साधु बन गया, मुनि का बाना पहन लिया तो क्या आप सोचते हैं कि उसे स्वर्ग या मोक्ष का टिकट मिल गया ? मोक्ष का टिकट तो तब मिलता है जब अन्दर का ममत्व भी जीता जाता है। बाहर के ममत्व को जीतने के

साथ-साथ यदि उसने अदर के ममत्व को नही जीता तो वह चाहे जन्म-जन्मान्तर तक साधु का बाना पहन ले, उसका बेडा पार नही हो सकता। रिश्ते-नातो को जीतना मुश्किल है। यदि साधक के मन मे यह है कि मैं खानदानी और लखपति या करोडपति का बेटा हूँ, तो क्या जरूरत थी साधु बनने की। उसने अभी तक दुनियावी दृष्टि से तो त्याग किया है पर आन्तरिक दृष्टि से त्याग नही किया है। बाहर की दृष्टि मे मोह को तोड दिया पर अदर की दृष्टि से मोह को और अधिक जोड रहा है।

जब राजकुमार महावीर भिक्षु बने तब बहुत यातनाए आयी, उनके जीवन मे। उनसे पूछा गया आप कौन है ? तो इन्होने इतना ही कहा—मैं भिक्षु हू। कभी भी यह नही कहा कि मैं त्रिशला रानी तथा सिद्धार्थ राजा का बेटा हूँ। जो इन रिश्ते नातो को लादे फिरते है वे कभी कर्मों से छूटते नहीं।

साँप के शरीर पर केंचुली होती है। समय आता है तो सर्प केंचुली तो छोड देता है किन्तु जितना केंचुली छोडना आसान है उतना जहर छोडना नही और यदि जहर नही छोडता तो उसकी केंचुली छोडना भी बेकार है। ऐसे ही साधक के मन मे दुनियावी रिश्ते जुडे हुए है तो वह अपने साथ ही ठगी कर रहा है। इसलिए ममता के परिणामो को छोडना चाहिए।

भृगु पुरोहित ने अपने बेटो को कितना भरमाया था। क्योंकि देवताओ ने कहा था कि आपके दो लडके होंगे, दोनो ही साधु बन जायेंगे, तो भृगु ने अलग महल बनवाया, उन्हे कही नही जाने देता था, कही साधु न मिल जाए, अपने बेटो को यही शिक्षा देता कि बेटा ! साधु बडे कपटी होते है, झोली रखते है। उनमे शस्त्र होते है। एकान्त मे कोई मिल जाए तो उन्हे मार देते हैं। किन्तु एक दिन दो साधु गुरु-चेला भटकते हुए उधर चले आए जहा भृगु का महल था, भृगु ने देखा दो मुनिराज आये है तो बोला—पधारो-पधारो महाराज ! लडके कही गए हुए थे। जल्दी-जल्दी पात्रे भर दिए, कही दूसरे घर मे जाए गे तो देर लगेगी। तब तक मेरे लडके आ न जाए। छलपूर्वक मुनियो मे बोला कि दो मेरे लडके ऐसे नास्तिक है कि साधुओ को देखकर पत्थर मारते है, आप जल्दी पधारो, नगर से बाहर कोई अच्छी जगह देखकर आहार कर लेना। सन्त बोले—ठीक है, हम जल्दी-जल्दी चले जाते है। जिधर से सन्त जा रहे थे उधर ही सामने से दोनो लडके आ रहे थे। जब उन्होने साधुओ को देखा तो बोले—पिताजी ! ठीक कहते थे। ये देखो, दोनो सन्तो के हाथो मे झोली है, झोली मे भी कुछ है। सोचते है, कहा जाये ? ये आयेंगे और हमे खत्म कर देंगे, भागेंगे तो भी नही बच सकते, चलो इसी पेड पर चढ़ जाते

है। दोनो एक वृक्ष पर चढ गए। इधर उसी वृक्ष के नीचे जाकर गुरु चेले से बोला, बेटा ! ये जगह साफ सी है और यहा छाया भी है, इसी स्थान पर आहार ग्रहण कर लेते हैं। जब उन्होने पात्रे निकाले तो उन दोनो ने सोचा, शस्त्र निकाल कर हमे मारेगे। इन्होने तो हमे देख लिया, इधर मुनि ने पात्र खोले तो देखा आहार है इसमे तो, और वह भी हमारे ही घर का। पिताजी हमे बहकाया करते थे। ऐसा सोचते सोचते हुए उन्हे जातिस्मरण ज्ञान हो गया जिसमे उन दोनो ने पूर्वजन्म देखा कि हम दोनो पूर्वभव के देव थे। जब सन्त आहार कर चुके तो वे दोनो नीचे आए और बोले कि हम भी साधु बनना चाहते हैं, हमे भी दीक्षा दे दो। मुनि बोले—माँ बाप से आज्ञा ले आओ। वे पिताजी के पास आए और कहा— आज्ञा दे दो, हम तो साधु बनेगे। तो भृगु ने कहा कि तुम साधु बनोगे तो मै भी साधु बनूगा। माँ ने सुना तो बोली - मैं भी साध्वी बनूँगी। उधर राजा ने सुना तो सोचा, इतना धन है भृगु पुरोहित के पास, उसे चोर ले जायेगे। राजा ने सेवको को भेज कर सारा धन मगाया और खजानो मे भरना शुरू कर दिया। रानी ने सुना तो राजा के पास आई, राजा से बोली—ब्राह्मण को दिया हुआ दान वापस ले रहे हो। हे महाराज ! ब्राह्मण का यह त्यागा हुआ धन लेना तो वमन को चाटने जैसा है। आपका यह कार्य उचित नही है।

वतासि पुरिसो राय ! न सो होइ पससिओ।
माहणेण परिच्चत्त धण आदाउमिच्छसि ?

राजा बोला, बहुत उनकी हिमायती बन कर आई है, जा तू भी बन जा साध्वी। रानी बोली—ठीक है। वह भी बन गई साध्वी। राजा ने सोचा, जब रानी भी साध्वी बन गई तो मै क्या करूँगा ? राजा भी साधु बन गया।

परन्तु कब बने ? जब उन्होने अनासक्त योग का भेद समझ लिया, जब उनके अदर की वासना क्षय हो गई। इस वासना क्षय को ही निर्वेद कहते है, जब आत्मा धर्म की ओर प्रवाहित होता है तो अनासक्त योग होता है, फिर सिद्धत्व को प्राप्त होता है। □



जैन दर्शन मे कर्म का स्वरूप

—सुव्रत मुनि "सत्यार्थी"
शास्त्री एम ए हिन्दी-सस्कृत
(रिसर्च स्कालर)

कर्म क्या है—कर्म का अस्तित्व वैसे तो सभी दर्शनो ने स्वीकार किया है, परन्तु जैन दर्शन एक आचारप्रधान दर्शन है अत इसमे कर्म को अधिक महत्व दिया है। कर्म वह शक्ति है जो आत्मा के स्वाभाविक दर्शन-ज्ञानादि गुणो को आवृत किए रहती है और उस शक्ति के आधीन हुआ आत्मा नाना दु ख उठाता है। इसी के कारण आत्मा, परमात्म पद से वचित रहता है। ज्योही इसका अन्त हुआ तो आत्मा परमात्मा बन जाता है—

आत्मा परमात्मा मे कर्म का ही भेद है।
काट दे गर कर्म को तो भेद है न खेद है॥

प्रश्न है, कर्म है क्या ? सामान्यतया तो कर्ता जो क्रिया करता है वह सभी कर्म कहा जाता है। परन्तु जैन दर्शन मे कर्म का स्वरूप क्रिया से भिन्न है। उसके अनुसार जब मानस मे किसी भी तरह का सकल्प-विकल्प उत्पन्न होता है, तब आत्म-प्रदेशो मे एक प्रकार की हलचल सी पैदा होती है। उसी क्षेत्र मे रहे हुए अनन्तानन्त कर्मयोग्य पुद्गल आत्म-प्रदेशो के साथ सयुक्त हो जाते है। आत्म-प्रदेशो से सयुक्त हुए ये परमाणु ही जैन दर्शन मे कर्म कहलाते है।

व्याकरण के अनुसार कर्म शब्द की व्युत्पत्तियाँ भिन्न-भिन्न मिलती है। जैसे—

१ जीव परतन्त्री कुर्वन्तीति कर्माणि।

२ जीवेन मिथ्यादर्शनादि परिणामै क्रियन्त इति कर्माणि।"

प्राकृत के आचार्य के अनुसार "**कीरइ जीएणा हेउहिं जेणत्तो भण्णए कम्म** अर्थात् अविरति आदि कारणो से जीव के द्वारा जो किया जाता है, वह कर्म कहा जाता है।

कर्मों के भेद—भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणो से कर्मों का विभाजन भी भिन्न-भिन्न हुआ है जैसे—कर्मों के दो भेद स्थायी और अस्थायी दृष्टिकोण से—भाव कर्म और द्रव्यकर्म। रागद्वेषात्मक परिणाम भावकर्म और कार्मण जाति के पुद्गल विशेष द्रव्यकर्म कहलाते हैं। इसी तरह स्वाभाविक गुणो दर्शनादि का घात न करते हो वे अघाति कर्म, जो घात करे वे घाति कर्म कहलाते है। भिन्न-भिन्न परिवर्तन की दृष्टि से कर्म आठ माने जाते है—ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीयादि।

कर्म परमाणु कैसे आत्मा के साथ सयुक्त होते हैं—कर्मवाद के मर्मज्ञ आचार्यों का कथन है कि जैसे कडाही मे खोलते घी मे पडी पूरी घी को, चुम्बक लोहे को अथवा दीपक की बाती तेल को खीच लेती है वैसे ही आत्मा सकल्प-विकल्प के अनुसार शुभ अथवा अशुभ कर्म परमाणुओ को आकृष्ट कर लेती है। जैन मान्यतानुसार कार्मण वर्गणा (कर्म परमाणुओ का सजातीय समूह) एक प्रकार की अत्यन्त सूक्ष्म रज होती है जो वायु-मण्डल मे सर्वदा सर्वत्र व्याप्त है जिसे किसी भी यन्त्र आदि के द्वारा नही देखा जा सकता, केवल सर्वज्ञ या या ब्रह्मज्ञानी ही उसे जान या देख सकते है।

कर्म की सत्ता मे क्या प्रमाण है ? इसके समाधान मे कहा जा सकता है कि ससार मे जो वैचित्र्य दृष्टिगोचर होता है, कोई निर्धन, तो कोई धनी, कोई दु खी तो कोई सुखी—यह सब कर्म के कारण है, ऐसी जैन मान्यता है, जबकि ईश्वरवादी इसे ईश्वरकृत मानते है परन्तु अन्त मे वे भी इसमे जीव का शुभाशुभ कर्म ही कारण स्वीकार करते है। वैसे प्रत्यक्ष मे देखा जाता है कि जो मानव पुरुषार्थ के द्वारा योग्यता प्राप्त कर लेता है वह सुखी हो जाता है, जो प्रमादी होता है वह दु खी रहता है।

व्यवहार मे कर्म की उपयोगिता—कई बार देखने मे आता है कि मानव जो कार्य करता है उसमे अनेक बाधाएँ आ जाती है कि स्वीकृत कार्य मे सफलता नही मिलती। फिर मानव दूसरो को दोषी ठहराता है। भगवान को कोसता है, धर्म को पाखण्ड बताता है और अन्तत वह निराशावादी बन जाता है तथा नास्तिकता की ओर बढ जाता है। ऐसे मे कोई धार्मिक सद्गुरु उसे जब मिल जाता है तो उसे अनेक प्रकार से समझाता है कि अरे भोले मानव ! क्यो निराश होता है ? जीवन मे जो दु खो की वर्षा हो रही है, जो बाधाए तेरे कार्य मे आ रही है उसके मूल मे तू स्वय ही कारण है। जो तेरा पूर्वकृत अशुभ कर्म है वह अब अपना प्रभाव दिखला रहा है। ऐसा

तेरे ही साथ हुआ हो ऐसी बात नही, काफी बडे राजा एव अन्य शक्तिसम्पन्न भी इससे नही बच सकते जैसे हरिश्चन्द्र का इतिहास, पाण्डवो में अर्जुनादि का नपुसक आदि बनकर राजकन्याओ को नृत्यादि कलाए सिखाना। फिर तू अपने से ऊपर वाले को मत देख, अपने से नीचे को देख जो तुझ से भी ज्यादा दुखी है, तू तो बहुत आनन्द मे है। इस तरह कर्मवाद का सिद्धान्त सुनकर वह मानव पुन कर्म मे आस्थावान बन जाता है, यही कर्म की व्यावहारिकता है।

जीव और कर्म का सम्बन्ध कैसे ? जगत म सभी पदार्थ एक जैसे नही हैं, इनमे कुछ मूर्त है और कुछ अमूर्त है। जिनमे वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श आदि गुण उपलब्ध होते है उनको मूर्त और जिनमे इनका अभाव हो उनको अमूर्त कहते है। मूर्त को रूपी और अमूर्त को अरूपी भी कहा जाता है। अरूपी का अर्थ अस्तित्वहीन न लेकर वर्णादि गुणो का निषेध ही समझना चाहिए। द्रव्य धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि के भेद से छह है। इनमे पुद्गल द्रव्य रूपी और शेष सभी अरूपी होते है। अब जिज्ञासा होती है कि अमूर्त के (आत्मा के) साथ मूर्त (कर्म) का सम्बन्ध कैसे स्थापित होता है। इसके समाधान के लिए प्राचीन मनीषियो ने कहा कि जैसे मूर्त घट का अमूर्त आकाश के साथ सम्बन्ध होता है उसी प्रकार जीव और कर्म का समझना चाहिए। इसे इस तरह समझना चाहिए। जब तीव्र अन्धेरी चलती है, झझावात उठता है तो सर्वत्र अन्धकार छा जाता है, दिशाए धूमिल हो जाती है, आकाश धूलि से व्याप्त दिखाई देने लगता है। जैसे अमूर्त आकाश मूर्त आधी से सयुक्त होने जैसा लगता है वैसे ही मूर्त कर्म अमूर्त आत्मा मे सम्बन्धित रहता है।

जीव और कर्म का सम्बन्ध कब से—जैन मान्यता के अनुसार सम्बन्ध चार प्रकार के होते है—अनादि अनन्त, अनादि-सान्त, आदि-अनन्त, और सादि-सान्त। जीव क्योकि दो प्रकार के माने गए है अभव्य और भव्य। १ वे जो मोक्ष प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। २ वे जो मोक्ष प्राप्ति की क्षमता से रहित है। तो अभव्य जीव की दृष्टि मे कर्म सम्बन्ध अनादि-अनन्त है और भव्य जीव की दृष्टि मे अनादि-सान्त तथा आदि-सान्त भी है। आदि-सान्त कैसे ? इसे इस तरह समझे, एक अपराधी ने किसी को मार डाला और वह पकडा गया, उसका अपराध सिद्ध हो गया, राज्य व्यवस्था के अनुसार उसे मृत्यु दण्ड दिया गया और समय आने पर उसे फाँसी दे दी गई। इस तरह उसके कर्म का आरम्भ—आदि भी हुआ और अन्त भी, अत यह सम्बन्ध आदि-सान्त हुआ। यह केवल एक कर्म की दृष्टि से ही ऐसा

कहा गया है। किन्तु जब कर्म समुदाय को अथवा कर्म प्रवाह को आगे रखकर विचार करते हैं तब कर्म का सम्बन्ध जीव के साथ अनादिकालीन प्रमाणित होता है। क्योकि जब हम अपने जीवन के अतीतकाल की ओर देखते है तो कोई भी ऐसी घडी नही मिलती जब आत्मा कर्म-मल से या कर्म परमाणुओ के सम्बन्ध से सर्वथा रहित हो। इसी दृष्टि को प्रधानता देकर जीव और कर्म का सम्बन्ध अनादिकालीन है। इसके अतिरिक्त ऐसा भी है कि केवली भगवान भी वर्षो की गणना मे यह बताने मे समर्थ नही है कि कौन आत्मा कब से ससार मे परिभ्रमण कर रहा है। इससे भी आत्मा और कर्म का सम्बन्ध अनादि ही ठहरता है।

कर्म कैसे फल देते हैं—जैन मतानुसार कर्म परमाणु जड होते हैं फिर वे अच्छा-बुरा फल देने मे कैसे समर्थ होते है ? इसको इस प्रकार समझा जा सकता है कि माना कर्म जड होते है परन्तु चेतन का सम्पर्क और सयोग पाकर वे भी चेतनशील हो जाते है तथा अपने अनुकूल या प्रतिकूल स्वभाव के अनुसार अच्छा बुरा फल देते है। जैसे मदिरा जब तक बोतल मे है तब तक वह कुछ नही कर सकती परन्तु मनुष्य ज्योही उसका सेवन करता है तो उसे चेतन का सम्पर्क मिल जाता है जिस पर वह अपना कार्य अथवा प्रभाव दिखलाना शुरू कर देती है। ऐसे ही दूध की है। दूध जब मानव ग्रहण करता है तो वह अपनी मधुरता और पौष्टिकता से मानव को प्रभावित करता है। और कई बार प्रत्यक्ष देखने मे भी आता है कि जब मनुष्य बहुत तेज मिर्च का सेवन कर लेता है तो उससे उसका मुख जल उठता है, उसकी आँखो मे पानी आ जाता है वह जोर-जोर मे सी-सी सी-सी के आवाज करने लगता है। इन उदाहरणो से स्पष्ट होता है कि कर्म जड होते हुए भी चेतन (आत्मा) का सम्पक पाकर अपना फल समय आने पर देता है।

कर्मो की प्रकृति, स्थिति आदि का विवेचन—जैन मान्यता है कि सम्पूर्ण ससार मे शुभाशुभ कर्म परमाणु सर्वत्र विद्यमान रहते है। जैसे-जैसे कोई मानव अथवा अन्य कोई भी जीव जैसा-जैसा अच्छा या बुरा सकल्प-विकल्प करता है तो उस क्षेत्र मे रहे हुए अच्छे या बुरे कर्म परमाणु आत्मा के साथ सयुक्त हो जाते है, यही कर्मो का बन्ध है। स्थानाग सूत्र मे बन्ध चार प्रकार का बताया गया है प्रकृति बन्ध, स्थिति बन्ध, अनुभाग बन्ध और प्रदेश बन्ध।

(१) **प्रकृति बन्ध**—राग अथवा द्वेष के कारण जब आत्म प्रदेशो मे एक हलचल सी उत्पन्न होती है तब कर्मयोग्य परमाणु आत्मा अपनी ओर

आकृष्ट करती है। जीव के द्वारा ग्रहण किए गए इन परमाणुओ से भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वभाव का निर्माण होता है। इन गृहीत परमाणुओ द्वारा अलग-अलग स्वभाव का उत्पन्न होना ही प्रकृतिबन्ध कहलाता है। यह एक उदाहरण से समझिए। जैसे एक मोदक (लड्डू) सोठ, पीपल और मिर्च मीठा आदि के सयोग से बनाया जाता है तो वह मोदक वायुनाशक होता है। इसी प्रकार पित्तनाशक पदार्थ डालने से उसका स्वभाव पित्तनाशक हो जाता है, जैसे—पदार्थो की भिन्नता से मोदक का स्वभाव भिन्न हो जाता है, ऐसे ही आत्मा से गृहीत कर्म परमाणुओ मे नानाविध स्वभाव और गुण पाए जाते है। किन्ही कर्म परमाणुओ मे आत्मा के ज्ञान को आवृत करने की क्षमता होती है और किन्ही मे दर्शन (विश्वास) को आच्छादित करने की क्षमता होती है। शास्त्रीय भाषा मे इसी भिन्न-भिन्न स्वभाव निर्माण को ही प्रकृति बन्ध कहा जाता है।

(२) **अनुभाग बन्ध**—जीव द्वारा ग्रहीत कर्म पुद्गलो मे फल देने की न्यूनाधिक शक्ति का होना अनुभाग बन्ध कहा जाता है। ग्रहीत कर्म पुद्गलो मे न्यूनाधिक फल देने की इस शक्तिविशेष की जो निष्पत्ति है, इसे अनुभाग बन्ध कहते है। इसे भी मोदक के दृष्टान्त से समझा जा सकता है। जैसे कोई मोदक अधिक मधुर हो गया और जिसमे मीठा कम रहा तो उसमे माधुर्य भी कम बना। इसी प्रकार कोई कम कटु तो कोई अधिक कटु होता है यह मीठे की न्यूनाधिकता पर निर्भर करता है। ऐसे ही परमाणुओ म भी फल देने की न्यूनाधिकता होती है, यही अनुभाग बन्ध है।

(३) **स्थिति बन्ध**—जीव द्वारा ग्रहीत कर्म पुद्गलो मे जो अमुक काल तक अपने स्वभाव को न छोडते हुए जीव के साथ रहने की जो काल मर्यादा है, वही स्थितिबन्ध है। इसे भी मोदक के दृष्टान्त से समझा जा सकता है। जैसे मोदक की शक्ति और स्वभाव का स्थाई रहने का समय होता है उसके अतिक्रमण होने पर उसके स्वभाव व शक्ति मे विकार उत्पन्न हो जाता है ऐसे ही कर्म पुद्गलो की जो काल मर्यादा है—फल देने का निश्चित समय है वही स्थिति बन्ध कहा जाता है।

(४) **प्रदेश बन्ध**—जीव के साथ न्यून और अधिक परमाणु वाले कर्म समुदाय का सम्बद्ध होना प्रदेश बन्ध कहलाता है। जैसे कोई मोदक परिमाण म १०० ग्राम का तो कोई ५०० ग्राम का होता है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न कर्म दलो मे कर्म परमाणुओ का न्यूनाधिक होना प्रदेश बन्ध होता है।

कर्मों के भेद—जैन मतानुसार कर्मों की सख्या आठ मानी जाती है—१ ज्ञानावरणीय कर्म, २ दर्शनावरणीय कर्म, ३ वेदनीय कर्म, ४ मोहनीय कर्म, ५ आयु कर्म, ६ नाम कर्म, ७ गोत्र कर्म और ८ अन्तराय कर्म। इसमे जिज्ञासा हो सकती है कि इनको इस क्रम मे क्यो रखा गया ? अन्तराय को अथवा मोहनीय को पहले क्यो नही रखा ? आठ कर्मो को इस क्रम मे रखने की सार्थकता का बडा सुन्दर विवेचन प्रज्ञापना सूत्र मे हुआ है। शास्त्रकारो ने बताया है—ज्ञान और दर्शन आत्मा के स्वस्वरूप है, इनके बिना जीवत्व की उपपत्ति सिद्ध नहीं होती। जोवन का लक्षण चेतना—उपयोग है, और उपयोग—ज्ञान, दर्शन के रूप होता है। अत ज्ञान-दर्शन के बिना जीव का अस्तित्व ही सिद्ध नही होता।

इसके अतिरिक्त ज्ञान-दर्शन मे भी ज्ञान प्रधान है। ज्ञान से ही सम्पूर्ण विचार परम्परा, शास्त्र चर्चा आदि चलती है। जिस समय जीव सब कर्मों से मुक्त होता है उस समय भी प्रथम ज्ञानोपयोग युक्त होता है तथा दूसरे समय मे दर्शनोपयोग होता है। इस प्रकार ज्ञान की प्रधानता से ज्ञानावरणीय को प्रथम और क्योकि ज्ञान के बाद दर्शन मे उपयोग होता है तो दर्शनावरणीय को दूसरे स्थान पर रखा। ये दोनो अपना फल देते हुए वेदनीय कर्म मे निमित्त बनते है अत तीसरे स्थान पर वेदनीय को रक्खा है। वेदनीय कर्म इष्ट अनिष्ट वस्तुओं के सयोग से अनुकूल और प्रतिकूल भाव को उत्पन्न करता है। इससे सामान्य जीवो मे राग-द्वेष का उत्पन्न होना स्वभाविक है। राग-द्वेष-मोह के कारण होने मे मोहनीय कर्म को चतुर्थ स्थान मिला। मोहनीय कर्म से अभिभूत हुए, प्राणी महारम्भ और महापरिग्रह आदि कार्यों मे आसक्ति के कारण नरकादि गति की आयु बाँधते है। अत पाँचवे स्थान पर आयु कर्म आया। आयुष्कर्म के उदय होने पर अवश्य ही नरक-गति आदि नामकर्म की प्रकृतियो का उदय होता है। अतएव आयुष्कर्म के अनन्तर नामकम कहा गया। नामकर्म के उदय से जीव उच्च या नीच जाति आदि मे से किसी एक को अवश्य भोगता है। फलत नाम कर्म के बाद गोत्र कर्म का कथन किया है। गोत्र कर्म के उदय होने पर उच्च कुल मेउत्पन्न जीव के दानान्तराय या लाभान्तराय आदि बाधा रूप अन्तराय कर्म का क्षयोपशम होता है तथा नीच कुल मे उत्पन्न हुए जीवो के दानान्तराय आदि का उदय होता है, इसलिए गोत्र कर्म के अनन्तर अन्तराय कर्म को स्थान मिला। □

पढमं नाणं, तओ दया

—श्री सुव्रत मुनि जी शास्त्री एम० ए० के प्रवचन से

प्रभु महावीर ने फरमाया है कि पहले ज्ञान प्राप्त करो फिर दया की, धर्म की सम्यक्‌तया आराधना हो सकेगी। क्योकि जब तक यह ज्ञात ही न हो कि आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? कर्म क्या है ? धर्म क्या है ? क्रिया क्या है ? बन्धन क्या है ? और मोक्ष कैसे, किसे प्राप्त होता है ? तो तब कैसे हम बढ पाएँगे ? ऐसे मे तो हम धर्म नही बल्कि अधर्म ही अधिक करेगे।

प्रभु महावीर का उपर्युक्त सूत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। अब ज्ञान क्या है ? यह भी जानना जरूरी हो जाता है। ज्ञान आत्मा का स्वभाव है। तत्वार्थ सूत्र के अनुसार 'उपयोगो जीव लक्षणम्।" अर्थात् उपयोग—पदार्थों को जानने की क्रिया, यह आत्मा का लक्षण है, स्वरूप है। वस्तुत जीव का बोधरूप व्यापार ही ज्ञान है। इसीलिए आत्मा को या जीव को चेतन भी कहा जाता है। ज्ञान को आत्मा का गुण भी माना गया है, इसके लिये उपमा देते है कि जैसे प्रकाश सूर्य का गुण है इसी प्रकार ज्ञान भी आत्मा का गुण है।

अब प्रश्न यह है कि जब ज्ञान आत्मा का स्वभाव है, आत्मा ज्ञान-स्वरूप है तो फिर वह अज्ञानियो की भाँति क्यो भटक रहा है ? इसके विषय मे आचार्यों ने फरमाया कि अनादि के अशुभ के ससर्ग के कारण आत्मा पर अशुभ कर्मों का आवरण आ गया है। एक पर्दा उस पर पड गया है जिससे आत्मा ज्ञानस्वरूप होते हुए भी ज्ञानरहितवत् मालूम होता है। जैसे आकाश मे स्थित सूर्य पर जब काले-काले मेघो का गहन आवरण आ जाता है, तो दिन मे ऐसा प्रतीत होने लगता है और ऐसा लगता है मानो सूर्य छिप गया है। वास्तव मे सूर्य छिपता नही है, उसके प्रकाश का अभाव नही हो जाता। किन्तु बादलो के आवरण के कारण हम जैसे सूर्य के दर्शन एव

प्रकाश से वचित हो जाते है वैसे ही आत्मा पर आए हुए ज्ञानावरणीय कर्म के कारण आत्मा भी अपने स्वरूप से हीन सा लगने लगता है।

अब प्रश्न है कि स्वरूप को कैसे पाया जाए ? इसके विषय मे आचार्यों ने फरमाया कि जैसे सूर्य ही अपने प्रचण्ड तेज से ग्रीष्म ऋतु मे बादलो को उत्पन्न करता है और वह ही उन्हे अपनी तीव्र उष्णता से समाप्त भी कर देता है। इसी प्रकार जब इस आत्मा के शुभ कर्मों का उदय आता है तो इसे पूज्य सन्तो का, महान् गुरुओ का सत्सग मिल जाता है जिससे प्रेरित होकर यह जप, तप, स्वाध्याय आदि साधना प्रक्रियाओ के द्वारा आत्म-प्रदेशो के ऊपर आए हुए ज्ञानावरणीय कर्म मल को उसी प्रकार हटा देता है जैसे एक लालटेन या लैम्प की चिमनी पर जमी हुई धुए की कालिमा को साफ किया जाता है।

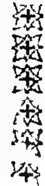
कालिमा के आने से प्रकाश लैम्प मे था परन्तु बाहर नही आ रहा था। ज्यो ही कालिमा दूर हुई तो प्रकाश फिर पदार्थों को प्रकाशित करने लगा। ऐसे ही आत्मा पर से साधना के द्वारा जितने-जितने अशो मे ज्ञानावरणीय कर्म की कालिमा हटती जाती है, उतने-उतने ही अशो मे वह अपने स्वरूप मे अवस्थित होती जाती है। जैसे-जैसे साधना आगे बढती जाती है, निर्मल से निर्मलतर और निर्मलतम साधना होती जाती है वैसे-वैसे ही आत्मा का स्वरूप भी अधिकाधिक स्पष्ट होता जाता है और एक समय ऐसा भी आता है जब यह आत्मा पूर्णरूप से कर्म मल को साफ कर अपने स्वरूप मे स्थिर हो जाता है। सर्व दु खो से मुक्त हो जाता है। यह भी ज्ञान की महत्ता है।

सयोजक
श्रीपाल जैन



मुद्रक : एम० के० प्रिंटर्स, आगरा






तुमने यदि ईमानदारी से एक बार भी धर्म का पल्ला पकड़
लिया, तो याद रखो, धर्म जीवन भर तुम्हारी
रक्षा करेगा, आड़े वक्त में
तुम्हारी सहायता करेगा।

—अमर मुनि



जड़ को सींचने पर वृक्ष हरा भरा हो जाता है, फिर फल फूल लगते हैं। जीवन रूपी वृक्ष का धर्म जल से सींचने से सुख समृद्धि के फल फूल लगते रहेंगे।

— प्रवचन भूषण श्री अमरमुनि

— ◘ -

नवयुवक सुधारक जैन विभूषण भन्डारी श्री पदम चन्द जी महाराज एवम श्रुतवारिधी हरियाणा केसरी वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज से मेरा सम्पर्क करीब तीन साल से है। कोल्हापुर रोड चातुर्मास से मैं हर रविवार को व अशोक विहार चातुर्मास मे प्रतिदिन महाराज श्री का व्याख्यान सुनने जाया करता था। हमारी एस एस जैन सभा लारेंस रोड की स्थापना भन्डारी जी म० की प्रेरणा से हुई है। और भन्डारी जी म० की प्रेरणा से ही हम अपने यहाँ जैन स्थानक बनवाने के लिये प्रयत्नशील है। अब सदर बाजार चातुर्मास मे भी मै निरन्तर व्याख्यान सुनने आता रहा हूँ। इस वर्ष यहा चातुर्मास मे विशाल भव्य कार्यक्रम हुए उनसे यह चातुर्मास सदा स्मरणीय रहेगा है।

कुलवन्तराय जैन
प्रधान S S JAIN SABHA
(लारेंस रोड, दिल्ली-35

नवयुग सुधारक जैन विभूषण भण्डारी

श्री पदमचन्दजी महाराज

एवं

श्रमणश्रेष्ठ हरियाणा केसरी

श्री अमरमुनिजी महाराज के

चातुर्मास प्रवास पर हमारा

हार्दिक अभिनन्दन

हमारा एकमात्र कार्य

नॉयलॉन्स मार्किट

शुद्ध नायलॉन से बनी वर्दी सहित

निर्माता

मै० धर्मचन्द

लद्दामल जैन

खारी बावली दिल्ली-6

दूरभाष 238174



[illegible] मुद्रक [illegible] आगरा के निर्देशन में
[illegible] प्रेस आगरा